ओ३म्

हिन्दी सुभाषित

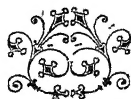
समय न खोएंगे अध्ययनमें,

न सैकड़ों ग्रन्थ मोल लेंगे।

हज़ारों ग्रन्थोंका सार है यह,

इसीमेंसबकुछ टटोल लेंगे।

रामकवि



ॐ

❁हिन्दी-सुभाषित

जिसको

पं० रामरक्खामल "रामकवि"
चौडियाला निवासीने
संग्रह किया

और

नारायणप्रसाद बेताबने

अपने

बेताब प्रिंटिंग वर्क्स
चाह रहट देहली में

छापकर

प्रकाशित किया

प्रथमवार } वि० सम्वत १९,७९, ई०सन १९२२ { मूल्य
१००० } { सजिल्द १)

अनुक्रमणिका

संशोधन

भूलसे पृष्ठ ७३ के पश्चात् ३ पृष्ठ (७४—७६).स्थान भ्रष्ट हो गये हैं, विषयके अनुसार पृष्ठाङ्क ठीक छपे हैं। कृपया पृष्ठ ७३ के पश्चात् २ पृष्ठ छोड़ कर पृष्ठ ७४ पढ़ें, फिर ७४ का पूर्व पृष्ठ, तत्पश्चात् उसका पूर्व पृष्ठ।

वक्तव्य

अगले पृष्ठोंमे 'सम्मति' शीर्षक, 'अफसूँ' साहबकी आज्ञा एवं आग्रहके कारण प्रकाशित लेखमे, इस साधारण जनके सम्बन्ध मे जो प्रशंसा-वाक्य व्यवहृत हुवे हैं वह केवल लेखक महोदय के सज्जनोचित औदार्यका परिचय मात्र है वरन:—

मेरी तारीफ़ जो यह इस क़दर है
फ़क़त मदाह का हुस्ने नज़र है
बहुत दिल-चस्प है गो रंगे-ताऊस
मगर कुछ पाउओं की भी ख़बर है

बेताब

सम्मति

प्रिय पण्डित जी !

आपकी हस्त लिखित कापी पढ़कर वापस भेजता हूं। जो कुछ मेरे हृदय में भाव उत्पन्न हुए है वो भी इसके साथ है कृपया इन्हें पुस्तक मे छाप दीजिये।

आपका

अफ़सूं

गुण बिन पुजे न लोक में, बड़कुलियों की पांति।
कौन भजे वसुदेवको, वासुदेवकी भांति॥

भारत माता का सौभाग्य है, कि परमात्मा ने उसके गर्भसे परम धार्मिक विद्वान पण्डित नारायण प्रसाद 'बेताब' कविवर के समान अमूल्य—रत्न उत्पन्न किया, पण्डितजी की पुस्तकें देखने से ज्ञात होता है, कि उन्होंने फ़ारसी, संस्कृत,' अरूज़, पिंगल, व्याकरण, धर्मशास्त्र का अभ्यास किया है, उनका स्वभाव बहुतही मधुर और मिलन-सार है, कोई ईर्ष्यावश उन्हें बुरा कहे तो कह सकता है, किसी दृष्टिहीन चमगादड को न सुझाई देनेसे सूर्य के प्रकाश की हानि नहीं होती जो हो, बेताबने शेक्शपीयर का उल्था भी प्रकाशित किया है,जो "जो आप पसंद करें," के नामसे मुद्रित हो चुका है, उर्दू में आप उस्ताद दाग़ के रङ्ग की कविता करते हैं, उर्दू हिन्दी में कई नाटक ऐसे

लिखे कि डंका वजा दिया, शृङ्गार, हास्य, रौद्र, वीर करुणा, जो रस लिखा चित्र खींच दिया. दर्शकों ने प्रसन्न होके मेडल भी दिये हैं, इस समय की उर्दू मिली हुई हिन्दी भाषा में ये ग़ज़ल तो ऐसी लिखी है कि आजदिन तक ऐसी दूसरी ग़ज़ल सुनने में नहीं आई:

अजब हैरान हूं भगवन तुम्हे क्यू कर रिझाऊ मै ।
कोई वस्तू नहीं ऐसी जिसे सेवामे लाऊं मै ।।
करूं किस तर्ह आवाहन कि तुम मौजूद हो हर जा ।
निरादर है बुलाने को अगर घंटी बजाऊं मैं ।।
तुम्हीं हो मूरती मे भी तुम्हीं व्यापक हो फूलो मे ।
भला भगवान पर भगवान को क्यू कर चढाऊं मै ।।
लगाना भोग कुछ तुमको ये इक अपमान करना है ।
खिलाता है जो सब संसार को उसको खिलाऊ मै ।।
तुम्हारी ज्योति से रोशन है सूरज चन्द्र और तारे ।
महाअंधेर है तुमको अगर दीपक दिखाऊ मै ।।
भुजाएं हैं न सीना है न गरदन है न पेशानी ।
कि हैं निर्लेप नारायण कहां चंदन लगाऊ मैं ।।

इनके लेख में सब से बड़ा गुणतो यह है कि बड़े बड़े भाषणों को दोही चार शब्दों मे ऐसी रीति से लिख देते हैं कि बालक भी सहज मे भावार्थ समझ सकते हैं, जैसे

कि रामायण के इस पद्य से प्रकट होता है:—

कोई देता है धन मर कर, कोई मरता है धन देकर।
जरामें फर्क मे वनजाते हैं ज्ञानी मे अज्ञानी ॥

इनकी प्रासपुंज और पिंगलसार पुस्तको की सहायता से तो जो लोग शुद्ध रीति से छन्द पढ़ भो नहीं सकते थे वह लिख सकते है। इनकी नारायणशतक पुस्तक फ़ारसी, "क़तआते इबने यमीन" से मिलती जुलती है, इस लेख मे पहलेही जो दोहा लिखा है, वह उसी नारायणशतकका है, पण्डित जी के परिश्रम और साहित्य का जानकारी का प्रमाण "पद्य परीक्षा" नामक पुस्तक है, आनन्द की वात तो यह है कि जो कुछ आप करते हैं अपनी ख्यातिके लिये नही बल्कि हिन्दी साहित्यसेवाके लिये। यही कारण है कि हिन्दी सुभाषित रामकविजी से संग्रह कराके प्रकाशित कर रहे है जिसे देखकर मैं विशेष प्रसन्न हुआ हूं, मेरी क्षुद्र सम्मति मे इस विषय की ऐसी सर्वोपयोगी पुस्तक इस्से पहले हिन्दी भाषा मे देखने में नही आयी, यह प्रथम पुस्तक है, इसमे पण्डित प्रशंसा, मूर्खनिन्दा, कर्मफल, इत्यादि अनेक विषयो पर अन्यान्य कवियों के दोहे, सोरठे, चौपाई, सवैये, आदि छन्द संग्रह किये गये हैं, आज कल के स्वतंत्र पुस्तक लिखने वाले, अनुवाद करने वाले, नाटक कार, उपन्यास लेखक, व्याख्यान दाता, उपदेशक, कथा वाचने वाले इत्यादि इस पुस्तक से

अधिक लाभ उठा सकते है। कोई यह न जाने कि मैं किसी मतलब से प्रशंसा कर रहा हूं, पण्डित जी से साधारण दूरकी मित्रता के सिवा मेरा और कोई सम्बन्ध नहीं है, मैंने जो कुछ लिखा है वह केवल सच्चे मनसे न्यायधर्म का पालन किया है, परमात्मा उन को इस लाभदायक पुस्तक प्रकाशन का यश दे, और सर्व देश में इस पुस्तक का प्रचार करे:- -

॥ दोहा छन्द ॥

रत्न द्वीप, निधि, चन्द्रमा,
सम्बत बीच नवीन ।
'अफ़सूं' श्री 'बेताब' ने,
पुस्तक मुद्रित कीन ॥

"१९७९"

"संख्या सूचक मन्त्र बिम्बाक्षरानुसार

हिन्दी सुभाषितीष्ट ये, छपी बढ़े नितमान।
प्यारी पुस्तक डालगुणि, अफसूँ सम्बत जान॥

"१९७९"

नम्र

अफ़सूँ

(काशी निवासी)

॥ ॐ कवये नमः ॥

हिन्दी सुभाषित



पण्डित राम रक्खा मल "राम कवि"

द्वारा सम्पादित

अ+उ+म्, महिमा

ओमुच्चारण होतही, टिके न विघ्न विषाद ।
स्यार भागते हैं यथा, सुनि केहरिको नाद ॥

अगुवा अवगुण

सबसे आगे होयके, कबहु न करिये बात ।
सुधरे-काज, समाज फल, बिगरे गारी खात ॥

अच्छोंमें बुराई का लेश

लघु कलंक भी स्वच्छमे, समझ पड़े ततकाल ।
दूरहि ते चुगली करत, ज्यों दर्पण में बाल ॥

अज्ञानकृत अनादर

भले बुरे सो एकसी, मूढ़न की परतीत ।
गुञ्जा सम तोलत कनक, तुला पलाकी रीति
गुण जाने बिन गुणिन को, होत नहीं सत्कार
गज मुक्ता तजि भिल्लनी, धारत गुञ्जा हार
अरे हस या नगरमे, जैयो आप विचार
कागनसों जिन प्रीति करि, कोकिल दई बिडार
अज्ञानी जानत नहीं, गुणिजनको सत्कार
जिमि गुलाब गुडहर सुमन, भेद न जान गँवार

साईं घोड़े अछत ही, गधहन पायो राज
कौआ लीजे हाथ में, दूर कीजिये बाज
दूर कीजिये बाज, राज पुनि ऐसो आयो
सिह कीजिये क़ैद, स्यार गज राज चढ़ायो
कहि गिरधर कविराय, जहाँ यह बूझ बधाई
तहाँ नकीजे भोर, सांझ उठि चलिये सांई

राम कवि राजा प्रजा जागे गुण गान लागे,
सबके समाई लहै सार निज घरकी ।
चकवादि पक्षीके विरहके विनाश कारी,
कमल कुटुम्बको हुलासकी खबरकी ।
मुदित जहान होत उदित भए तैं जाके,

करत प्रकाश व्यथा हरे चराचरकी।
पड़े न दिखाई जो पै तुझको उलूक-
तेरी आंखकी खुटाई या खुटाई दिनकर की।

मेहुंड बबूरको लगावें जो जतन करि,
काटत चमेली चम्पा चंदन जुहिनको।
हिंसा करि हंस और कोकिला कलापिनकी,
आदर समेत पालैं वायस मलिनको।
गधे गजराजको समान मान होत जहां,
एकसे कपूर औ कपास लगें जिनको।
हमें कमलाकर न देश दिखलावें वह,
दूरसे हमारे है प्रणाम कोटि तिनको॥

अज्ञानानन्द

दोष-कोष गुन बन गये, हुई हियेकी बन्द
उल्लू खण्डर उजाड़को, समझत स्वर्गानन्द
जो विषया सन्तन तजी, मूढ़ ताहि लपटात
ज्यों नर डारत वमन कर, श्वान स्वादसों खात
रहिमन राम न उर धरैं, रहत विषय लपटाय
पशु खर खाये स्वादसों, गुर गुलियाये खाय
करि फुलेलको आचमन, मीठो कहत सराहि
चुप कररे गन्धी चतुर, इत्र दिखावत काहि

अज्ञानी परोपकारकी सार नहीं जानता

बुद्धि हीन जानत नहीं, परहित कारक रीति
निज मुखही ते करत है, जिम बालक-कर प्रीति



अति निन्दा

अति परिचय ते होत है, अरुचि अनादर भाय
मलियागिरिकी भीलनी, चन्दन देति जराय
अति सम्पति दिन पायके, अति मत करिये कोय
दुर्योधन अति मान तै, भयौ निधन कुल खोय
अतिही सरल न हूजिये, देखिलेहु वन राय
सीधे सीधे काटिये, वांको तरु बच जाय
सबको रसमें राखिये, अन्त लीजिये नाहिं
विष निकस्यो अति मथनतैं, रत्नाकर हू माहिं
चोरा चोरी प्रीतिके, कीन्हें बढ़त हुलास
अति खाये उपजै अरुचि, थोरी बात मिठास
अति कबहूं नहिं कीजिये, किये पाव दुख सोय
सुधा सुरस भोजन विमल, अति खाये विष होय

चौपाई

सुन प्रभु बहुत अवज्ञा कीये, उपज क्रोध ज्ञानिहुके हीये
अति संघर्षण करै जो कोई, अनल प्रकट चंदनते होई

अनन्य प्रेम

जिन नैननमे पी बसे, आन बसे क्यो आन
अबाबील घर करत है, सूनो देखि मकान
प्रीतम छबि नैनन बसी, पर छबि कहां समाय
भरी सराय रहीम लखि, आप पथिक फिरजाय
सरवरके खग एकसे, बाढ़त प्रीत न धीम
पै मरालको मानसर, एकै ठौर रहीम

अन्याय दंड

अवगुण करता औरही, देत औरको मार
जो पहुंचे नहि रुद्र पै, जारत विरहिन मार
और करै अपराध कुइ, और पाव फल भोग
अति विचित्र भगवन्त गति, को जग जाने जोग

अनुचित संतोष

छात्र, छत्र—धर जो कहीं, कर बैठे सन्तोष
बढ़े नहीं दिन दिन घटे, विद्याधनका कोष

अप्रिय सत्य

हितहूकी कहिये न तिहि, जो नर होय अबोध
ज्यों नकटेको आरसी, होत दिखाये क्रोध
रोष भरी न उचारिये, यदपि यथारथ बात
कहे अन्ध कौं आंधरो, मान बुरी सतरात

कछु कहि नीच न छेड़िये, भलौ न वाको संग
पाथर डारे कीचमे उछरि बिगारे अंग
रिस उपजावक सत्य को कहिये नहीं उमाहि
दहत रहत जिय अन्धको,कहत अन्ध जो ताहि

अप्रिय

सो ताके अवगुण कहै, जो जिहि चाहै नाहि
तपत.कलंकी.विषभरयो.बिरहिन शशिहि कहाहि
जाको जहं स्वारथ सधै, सोही ताहि सुहात
चोर न प्यारी चांदनी . जैसी कारी रात

अपना दोष कोई नहीं देखता

सब देखै पै आपनो, दोष न देखै कोय
करै उजेरौ दीप पै, तरे अँधेरो होय
अपने ,दोष न देखिहै, पर निन्दा विस्तारि
ज्यों कुलटा कुलजानको, कहै अपावन नारि

अपना वही है जो सदा साथ रहै

सोई अपनो आपनो, रहे निरन्तर साथ
होत परायो आपनो, शस्त्र पराये हाथ
नेंगी दूर न होत है, यह जानो तहकीक
मिटत न ज्यों क्योंही किये, जो हाथनकी लीक
अपना तबनक ही रहे, रहे पीठ असवार
नतु घोड़ा ले चोरको, पहुंचत कोस हजार

अपने हितकी बात सबको भली लगतीहै

भले लगै सबको कहौ, कोऊ हितके बैन
पिय आगमके काग वच, विरहिनको सुखदैन
जो जाके हितकी कहै, सो ताको अभिराम
पिय आगम भाखी भलौ,वायस पिककिह काम
कोउ कहै हितकी कहै, ह्वै ताहीसों हेत
सबै उड़ावत कागको, पै विरहिन वलि देत
कह्यो मूढ़ की बातको, करिये जो हित होय
सौंह दिवाये औरके, परै अग्निमे कोय
अपनी कीरति कान सुन,होत न कौन खुशाल
नाग मंत्रके सुनतही, विष छोड़त है व्याल

अपव्ययका अन्धेर

दीप बार ले आजतू , दिनभर फूंक फुलेल
काल अँधेरी रातमे, बैठेगो बिन तेल

अपवाद भय

लोकनके अपवाद कौ, उर धरिये दिनरैन
रघुपति सीता परि हरी, सुनत रजकके बैन

अभयता

जो चाहै सोई करैं, बड़े अशंकित अंग
सबके देखत नगन हरि, धरत गौरि अरधंग

डरे न कबहूं दुष्ट सो, जाहि प्रेमकी बान
'भौंर' न छोड़े केतकी, तीखे कंटक जान

अभ्यास महिमा

करत करत अभ्यासके, जड़ मति होत सुजान
रसरी आवत जात तै, सिल पर परत निसान
जन्मत ही पावै नहीं, भली बुरी कुछ बात
बूझत बूझत पाइये, ज्यो ज्यों समझत जात
एक एक अक्षर पढ़े, जाने ग्रन्थ विचार
पैंड पैड हू चलत जो, पहुंचत कोस हजार
कठिन कला हू आय है, करत करत अभ्यास
नट जो चाले बरत पर, साधे वरस छ मास
कन कन जोरे मन जुरे, काटे निबरे सोय
बूंद बूंद ज्यों घट भरै, टपकत बीते तोय
यत्न और अभ्यास कर, मुशकिल हो आसान
अभ्यासी मरते नहीं, कर मारक-विष पान
शशि सकोच साहस सलिल, मान सनेह रहीम
बढ़त बढ़त बढ़जात है, घटत घटत घट सीम
यह रहीम निज संग लै, जन्मत जगत न कोय
बैर, प्रीति, अभ्यास, यश, होत होत ही होय
बढ़त बढ़त सम्पति सलिल, मन सरोज बढ़िजाय
घटत घटत पुनि ना घटै, बरु समूल कुम्हलाय

बनत काज अभ्यास तैं, शनैः शनैः ही सोय
बूंद बूंद घट भरत है, कन कन मन भर होय
पावे फल अभ्यास तैं. बिन अभ्यास न पाय
चल च्योंटी पहुंची उदधि. न चले गरुड़ न जाय
करत सदा अभ्यास जो, निश्चयही फल पाय
गिरि गिरि च्योंटी भीति तैं, अन्त शिखर चढ़जाय
दुख पाये बिनहूं कहूं, गुण पावत है कोय
सहै वेध बन्धन सुमन, तब गुण संयुत होय
विद्या गुरुकी भक्ति तैं, कै कीने अभ्यास
भील द्रोणके बिन कहे, सीख्यो बान बिलास
विद्या याद किये बिना, बिसरत इहि उरमान
बिगर जात बिन खबर तैं, ढोली केसो पान

अभिलाषा पूरी होनेपर दशा

मन भावनके मिलनको, सुखको नाहिन छोर
बोल उठे नचि नचि उठे, मोर सुनत घनघोर
विरहानल व्याकुल भए, आया प्रीतम गेह
जैसे आवत भाग तैं, आग लगेपर मेह
मनभावनके मिलन तैं, क्यों मन हो न हुलास ?
मिल सनेह गुण करत है, चारों ओर प्रकास

निज मन भावनके मिले, का को जिय न खिलाय
दिनकर दर्श निहार कै, खिलत कमल हर्षाय
मलिन देह वेई बसन, मलिन विरह के रूप
पिय आगम औरै बढ़ी, आनन ओप अनूप

अलस निन्दा

साथी मिले जु आलसी, ठनै कर्म सों वैर
एक पाँव सो जात तब, चलत न दूजो पैर

असत्य निन्दा

मिथ्या भाषी सांच हू, कहै न माने कोय
भाण्ड पुकारैं पीर बश, मिस समझैं जग लोय
अन्तर अँगुरी चारको, साँच झूठमें होय
सब मानें देखी कही, सुनी न माने कोय
कबहूं झूंठी बात को, जो करिहै पछपात
झूंठे संग झूंठो परत, फिर पाछै पछतात
जग परतीत बढ़ाइये, रहिये सांचे होय
झूंठे नरकी सांचि हू, साखि न माने कोय

घनाक्षरी

भानु छुप जात अन्धकार के समूह आगे,
छुपत कृशानु अति तृणके गिराये तें।
विद्या छुप जात है अविद्याके समाज विच,
शील छुप जात है अशीलके दबाये तें।

समवर्ण धातु संग सुवर्ण रजत छुपैं,
छुपत सुगन्ध दुर्गन्ध नियरायेतै।
अन्तमे असत्यको विनाश होत 'रामकवि"
सत्य प्रगटात शुभ कालहुके पाये नैं

अवस्था परिवर्तन

सुख बीते दुख होत है, दुख बीते सुख होत
दिवसगये ज्यों निशउदित, निशगति दिवस उदोत
एक दशा निबहै नहीं, नहि पछतावहु कोय
रविहूकी इक दिवसमे, तीन अवस्था होय
घटत बढ़त सम्पति सुमति, गति अरहटकी जोय
रीती घटका भरत है, भरी सु रीती होय
जो पावै अतिउच्च पद, ताको पतन निदान
ज्यों तप तप मध्यान लों, अस्त होत है भान
होत बुरे हूं ते भलो, काहू समय प्रकास
अधिक मास तैं ज्यों मिट्यो, पांडव फिर बनवास
सरस निरस नर होत है, समय पाय सब कोय
दिनमें परम प्रकाश रवि, चन्द मन्द द्यु ति होय
धनी होत निर्धन वहुरि, निर्धन तैं धनवान
बड़ी होति निशि शीत ऋतु, ज्यों ग्रीषम दिनमान
तब लगि सहिये विरहदुख, जब लगि आव सुवार
दुःख गये तब सुक्ख है, जानै सब संसार

जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सु बीत बहार
अब अलि रही गुलाबमें, अपत कटीली डार
इहि आशा अटक्यो रहै, अलि गुलाबके मूल
अइहैं बहुर बसंत ऋतु, इन डारन वे फूल
मरत प्यास पिंजरा परयो, सुवा दिननके फेर
आदर दै दै बोलयतु, वायस बलिकी बेर

कुण्डलिया

साईं अवसरके पड़े, कोन सहै दुख द्वन्द
जाय बिकाने डोम घर, वे राजा हरिचन्द
वे राजा हरिचन्द, करे मरघट रखवारी
धरे तपस्वी बेष फिरे, अर्जुन बलधारी
तपै रसोई भीम महाबलि परघर माईं
को न करै घट काम, परै अवसरके साईं

छप्पय

कबौं द्वार प्रतिहार, कबौ दर दर फिरंत नर
कबौं देत धन कोटि, कबौ करतर करंत कर
कबौं नृपति मुख चहत, कहत कर रहत बचन बस
कबौं दास लघु दास, करत उपहास जिभ्य रस
कछु जान न सम्पति गरजिये, विपत न ये उर धारिये
हिय हार न मानत सत पुरष, 'नरहरि' हरिहि सँभारिये

कृपया इसके अनुसार शुद्ध कर लीजिए

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	१	स्फूर्त्तियाँ	पूर्त्तियाँ
७	१५	सिंजित	शिंजित
१३८	५	है ऐसी ही	"है ऐसी ही
१४१	३	तेल	तले
१७१	१	भगवान ?	भगवान !
२०३	११	पट-से	पट से
२३८	६	होते हैं ?	होते हैं।
२५०	४	उसका	उससे
२८०	२	औषधीश	ओषधीश
२८३	१२	हॅसे	हॅसे
२८८	४	तुझसे	तुझ-से
२९७	१२	त्राण-से	त्राण से
३०१	३	दिखा	दिला
३०४	२	लोटूँ	लेटूँ
३०७	९	अभी	कभी
३०९	१८	दयति	दयित
३३७	८	फूलो	कूलों
३४३	१०	जिनसे	जिनसे
३४४	९	सब	जब
३४५	२०	धर्म	घर्म
३८०	१३	पुर्व	पूर्व
४२१	१	चढ़ आई।	चढ़ धाई।
४२७	१७	हाय	"हाय
४२७	१०	उठा	उठे
४३३	१६	वारी	वारी"
,,	१७	पूर्ण	"पूर्ण

कुण्डलिया

नर वर नयन उघार अब देख ग़ौर करि तौर
आज दिवस है और कछु, काल दिवस है और
काल दिवसहै और, दौर इमि चले रैन दिन
कभी रंक हो राव, कभी हो राव राज बिन
कभी मंगलाचार , कभी रोवत विलाप कर
कभी मोद अरु धूम , कभी हो विकल दुखित नर
यह अचल न चल दल सम सदा, दुख सुख माने अज्ञ जन
कह 'राम' वीर सुइ धीर नर, इक रस रहत सुधार पन

घनाक्षरी

पात झर जात द्रुम द्युति ते विहीन होत,
आवत वसंत दल फूल अधिकाई है ।
ग्रीष्मकी गरमी अपनात पंच भूतन को,
पावसके मेघ आ अनंत झर लाई है ।
केला कटजात डटजात फल पावन तैं,
तावन तैं सोना गहि लेत सुघराई है ।
रामकवि काहेको विनाश मन मूढ़ होत,
होवेगा हुलास दुःख दारुण बिताई है ।

हरि गीत

संसारमें किसका समय है एकसा रहता सदा
है निशि दिवा सी घूमती सर्वत्र बिपदा संपदा

जो आज एक अनाथ है नरनाथ कल होता वही
जो आज उत्सव मग्न है कल शोकसे रोता वही
उन्नत रहा होगा कभी जो हो रहा अवनत अभी
जो हो रहा अवनत अभी उन्नत रहा होगा कभी
हँसते प्रथम जो पद्म है तम-पंकमे फँसते वही।
मुरझे पड़े रहते कुसुम जो अन्तमे हँसते वही
उन्नति तथा अवनति प्रकृतिका नियम एक अखण्ड है
चढ़ता प्रथम जो व्योममे गिरता वही मार्तण्ड है
अतएव अवनति ही हमारी कहरही उन्नति कला
उत्थान ही जिसका नहीं उसका पतन हो क्या भला
उत्थानके पीछे पतन संभव सदा है सर्वथा
प्रौढ़त्वके पीछे स्वयं वृद्धत्व होता है यथा
हाँ। किन्तु अवनति भी हमारी है समुन्नति सी बढ़ी
जैसी बढ़ी थी पूर्णिमा वैसी अमावस्या बढ़ी
है नेचरलका नियम यह चलना हमेशा चाल पर
इसही लिये रहता नहीं है कोई यकसां हाल पर
नीचे पड़ेको है उठाता प्रेम से पुचकार कर
ऊंचे चढ़े को है गिराता मार थप्पड़ गाल पर

गीतिका

कल जिसे देखा था बैठा शहनशाही तख्त पर
आज वो बेकल पड़ा रोता ज़मीने सख्त पर

अब जिसे तुम हो हिक़ारतकी नज़र में देखते
देखलेना कल उसीको नाज़ करले वक्तपर

सवैया

रेमन साहसी साहस राख सुसाहससे सब जेर फिरेगे
त्योपद्माकर या सुखमे दु ख त्यों दुखमेसुखमेर फिरेगे
वैसेहि बैन बजावत श्याम सुनाम हमारेहि टेर फिरेगे
एक दिना नहि एक दिना कबहूं फिर वे दिन फेर फिरेगे

छप्पय

वे उठते भी है अवश्य ही, जो गिरते है
दुर्दिन के ही बाद, सुदिन सबके फिरते है
देखे दारुण दुःख, वही नर फिर सुख पावे
अवनतिके उपरान्त घड़ी उन्नतिकी आवे
रवि रात बीतने पर प्रगट होते प्रात. समयमे
बस यही सोचकर आपभी. धीरज रखिये हृदयमें

होता प्रथम बसन्त, ग्रीष्म ऋतु फिर आती है
चले पसीना अंग. आग सी लग जाती है
पत्ते फल या फूल, विना जल जलजाते है
पशु पत्ती भी घोर घाममे घबराते है
फिर शीघ्र देखते देखते. हरीभरी होती मही
आजाती वर्षा ऋतु भली. सुख देती तत्काल ही

कवियोंका सर्वस्व, स्वर्ग की शोभा भारी
शिवके भी सिर चढ़ा, और आकाश बिहारी
अमृत सहोदर चन्द्र, कला जब घटने लगती
तब होता है क्षीण, और श्री लटने लगती
वह किन्तु शीघ्र ही पूर्ण हो,होता है फिर अभ्युदय
है ठीक नियम यह प्रकृतिका, परिवर्तन हो हर समय

इतने बड़े अनन्त तेजकी, राशि दिवाकर
तपते तीनो लोक बीच पूजित हो घर घर
किन्तु समय पर राहु उन्हे ग्रस लेता जाकर
कुछ कर सकते नहीं,हज़ारो यद्यपि हैं कर
वह पहले होता अस्त या ग्रस्त समस्त प्रभा रहित
फिर होते मुक्त प्रकाशसे युक्त पूर्वमे अभ्युदित

जीव मरण के बाद जन्म पाता है देखो
कृष्ण पक्षके बाद, शुक्ल आता है देखो
चलती है हेमन्त हवा, जब जोर दिखाती
तब होता पतझाड़, न पत्ती रहने पाती
फिर वही वृक्ष होते हरे, नव पल्लव शोभित सभी
बस इसी तरह होंगे सुखी, उन्नति युत हमभी कभी

सवैया

कबहूं तो घटा घनघोर उठै, कबहूं नहिं नेकहु बादर है
कबहूं जग मे सनमान बड़ो, कबहूं घर मांझ न आदर है

कबहूं तन शाल दुशाल घने , कबहूं सिरपै नहि चादरहै
मन राम भजो जिय सोच न जी , यह कादिरकी गति नादरहै

आत्मश्लाघा

आपहि कहा वखानिये, भले बुरे को जोग
ऊठे घन की बात को, कहै बटाऊ लोग
आत्म-प्रशंसासे मिलत, नेकहु मान न मोद
निज कर कुच मीड़े बधू, लहत न मदन विनोद
बहक बड़ाई आपनी, कत राचत मति भूल
बिन मधु मधुकरके हिये, गड़ै न गुड़हर फूल
कहत निपुणाई गुण बिना, रहिमन निपुन हजूर
मानो टेरत विटप चढ़ि, मो समान को कूर
निज मुख निज कीरति कथा, बरनत ओछे लोय
जिमि खाली घट करत रव, मौन सपूरण होय
झूठे हू हे मूढ़ नर, निज कीरति करि गान
क्यों गुणि जन की नज़र मे , नर ते बनत हवान

आयु परिमाण

धर्म कर्म कर जान के, जीवन को अति अल्प
विद्या, धन, संचन विषय , आयु मान शत कल्प

आश्रय प्रशंसा

पंडित बनिता अरु लता, शोभित आश्रय पाय
है मानिक वहु मोल को, हेम जटित छवि छाय

बिन आश्रय सोभित नहीं, पंडित, लतिका, नार
मणि माणिक वहु मूल्य है, वे भी हेमाधार

घनाक्षरी

चतुर गवैया होय वेद को पढ़ैया होय
समर लड़ैया होय रण भूमि चौड़ी मे
जानत समैया होय मीर कवि त्योंही चाहे
बात को जनैया होय नैनकी कनौड़ी मे
नीति पै चलैया होय पर उपकार आदि,
कुशल करैया काज हाथकी हथौड़ीमे
गुनन को शीला होय तौऊ न वसीला बिन,
कोऊ हो पुछैया भैया तेहि तीन कौड़ीमे

इनसे वचो

पाप मूल जग लोभ है, व्याधि मूल मद पान
दुःख मूल अज्ञान है, तीनों त्याग सुजान
पर - सेवा सब सुख हरत, परनारी धन प्रान
कीर्ति हनन पर अन्न नित, विप्र द्वेष कल्याण

ईश्वरको सबकी चिन्ता है

प्रभुको चिन्ता सबनकी आपुन करिये नाहि
जन्म अगाऊ भरत है, दूध मात थन माहि
एक एकके नामको, रचि राखै जगदीस
जैसे भरिये पेट को, सबको निहुरै सीस

जिहि जेतो निहचै तितौ, देत दैव पहुंचाय
सक्कर खोरे को मिलै, जैसे सक्कर आय
यथा योग सब मिलत है, जो विधि लिख्यो अँकूर
खल गुर भोग गँवारनी, रानी पाय कपूर
अमर बेल बिन मूलकी, प्रति पालत है ताहि
रहिमन ऐसे प्रभुहि तज, खोजत फिरिये काहि
काम कछू आवै नहीं, मोल न कोऊ लेइ
बाज़ू टूटे बाज़को, साहिब चारा देइ
रहिमन कोऊ काकरै, ज्वारी चोर लवार
जो पति राखन हार है, माखन चाखन हार
अजगर करै न चाकरी, पच्छी करै न काम
दास मलूका यों कहे, सबके दाता राम

सवैया

दांत न थे तब दूध दियो, जब दांत दिये वो अनाजहि देई
जीव बसै जलमे थलमे, तिनकी सुधि लेइ सो तेरीहु लेई
जानको देत अजानको देत, जहानको देत सो तोहूको सेई
क्यों अब सोच करै मन मूरख, स.च करे कछु आज न देई

दोहा

प्रलय करन बरसन लगे, जुरि जलधर इक साथ
सुरपति गर्व हरो हरषि, गिरिधर गिरि धर हाथ

उद्यम महिमा

हलन चलनकी शक्ति है, तबलों उद्यम ठान
अजगर लू मृगपति बदन, मृग न परत हैं आन
विद्या धन उद्यम बिना, कहिये पावत कौन
बिना डुलाये ना मिले, ज्यों पंखाकी पौन
श्रमही ते सब मिलत है, बिन श्रम मिले न काहि
सीधी उंगुली घी जम्यों, क्योंहूं निकलै नाहि
उद्यम बुधि बल से मिलै, तब पावत सुख साज
अंध कंध चढ़ि पंगु ज्यों, सबै सुधारत काज
प्रेरकही तें होत है, कारज सिद्धि निदान
चढ़े धनुष हू ना चले, बिना चलाये बान
बिन उद्यम मसलत किये, कारज सिद्धि न ठाय
रोग न जानत औषधी, जान खाय तो जाय
गुनी होय श्रम कष्ट करि, लहै राज दरबार
बींध बंध मुक्ता सहै, तब उर हार बिहार
चले पिपिलका जो सदा, समुद पार ह्वै जाय
जो न चले तो गरुड़ हू पैंड़ हू चले न पाय
भयो विमुक्त न ज्ञान सों, कर्म हीन नर कोय
बिन खाये मधु बोधसों, मुख मीठो नहि होय
मुख मे भोजन निकटको, बिन उद्योग न जाय
बछरा थन खीचे बिना, पियत न दूध अघाय

बिन उद्यम नहिं पाइये, कर्म लिख्यो है जौन
बिन जलपान न जात है प्यास गंग तट भौन

घनाक्षरी

सामिलमे पीरमे शरीरमे न भेद राखै,
हिम्मत कपटको उघारै तो उघर जाय।
ऐसे ठान ठानै तौ बिनाहू जन्त्र मन्त्र किये,
सांपके ज़हरको उतारै तो उतर जाय।
ठाकुर कहत कछु कठिन न जानो अब,
हिम्मत कियेते कहो कहा न सुधर जाय।
चार जने चारहू दिशाते चारों कोन गहि,
मेरुको हिलायकै उखारे तो उखर जाय।
जाते है समुद्र वंध रहते न अद्रि अड़े,
अग्नि, जल, वायु आदि हुकम उठाते हैं।
हुकम उठाते है उमंग भरे धीर वीर,
होते धन धान्य शाह मस्तक नवाते हैं।
मस्तक नवाते है जगतके सकल लोग,
गिरधर मूर्ति निज हिय मे बिठाते है।
हिय मे बिठाते है त्यो महिमा पराक्रम की,
पौरुष दिखाये क्या क्या काम हो न जाते है।

———

उदरपोषण, पेटस्तोत्र सहित

उदर भरनके कारने प्रानी करत इलाज
नांचैं वांचै रनभिरैं, राचैं काज अकाज
दुर भर उदर दरीनकै, होत न तन संताप
तो जन जनकी को सहत, तरजन गरजन ताप
करी उदर दुइ भरन भय, हर अरधंगी दार
जोन होयतौ क्यो रहे, अवलों तनय कुमार
उदर धरन नरतैं भलौ, राहु उदर तैं हीन
कबहूं नाहिन होत है जन जनको आधीन
नगन पेट नट निरत कै उरत न करत उपाय
धरन बरन परयाय अरु परत बरत लपटाय
दीन धनी आधीन है सीस नवावत काहि
मान भंग की भूमि यह पेट दिखावत ताहि
रूखे सूखे उदर को, भरे होत संतुष्ट
राम न लाख करोर के, पाये तुष्ट न दुष्ट
एक एकसों लग रहे, अन्नोदक संबन्ध
चोली दामन ज्यों रच्यो, जगत जंजीरा बन्ध
रहिमन कहत सु पेट सों, क्यों न भयो तू पीठ
रीतै अनरीतै करत, भरे विगारत दीठ
बड़े पेट के भरन में, है रहिमन दुख बाढ़
गजके मुख विधि याहितें, दिये दांत द्वै काढ़

नहि रहीम कुछ रूप गुण, नहि मृगया अनुराग
देशी श्वान जु राखिये, भ्रमत भूखही लाग
गगन चढ़ै फिर क्यों गिरै, रहिमन बहरी बाज
फेर आय बन्धन परै, पेट अधम के काज

पेट स्तोत्र

नमामि पेटं नमामि पेटं पेट परमाराध्य प्रभो
पांड़े पानी पांडे बनते, चौबेजी चपरास पहनते
हेत तुम्हारे शुक्ल भिकारी, अद्भुत महिमा बड़ी तुम्हरी
नमामि पेटं नमामि पेटं पेटं०
द्वार पाल है बने द्विवेदी, तेल बेचते बैठ त्रिवेदी
बने मिश्रजी जमादार है, गावै कैसे गुण अपार है
नमामि पेटं नमामि पेटं पेटं०
बिड़ी बनाते हैं साई जी, बड़ी बेचती हैं बाईजी
पाठक बेचे धोतीजोड़ा, जो कुछ आप करे सो थोड़ा
नमामि पेटं नामामि पेटं पेटं०
तज हथियार तराजू धारी, क्षत्री बन बैठे पनसारी।
त्याग बेचना जीरा, धनिया बने कान्स्टेबल है बनियां।
नमामिपेटं नमामि पेटं पेटं०
दुख दाई चपेट तव खाके, भस्म रमाके जटा बढ़ाके।
कई शुद्र दुर्व्यसनी पाजी, बन बैठे जग मे बाबा जी।
नमामि पेटं नमामि पेटं पेटं०

पृथ्वी भरके सकल जीव गण, साहिब बाबू सेठ महाजन
लगा रंक से महाराज तक,सभी आपके है आराधक
नमामि पेटं नमामि पेटं पेटं०
सिर पै टोपी तन मे कुर्ता, न हो भलेही पग मे जूता
आप भरेहैं तब क्या कहना,बहता सदा शान्तिका झरना
नमामि पेटं नमामि पेटं पेटं०
तब चिन्ता निज मनमे धारे, भूक प्यासकी दशा विसारे
प्रति दिन प्रति क्षण हेतु तुम्हारे, फिरते हैं सब मारे।मारे
नमामि पेटं नमामि पेटं पेटं०
किसिको पर धर्मी बनवाया, किसिको लन्दन तक पहुंचाया
किसिको वाघम्बर पहनाया, सबको तुमने नाच नचाया
नमामि पेटं नमामि पेटं पेटं०
लिये तुम्हारे लोग झगड़ते, पैर पकड़ते नाक रगड़ते
एंठ छोड़ते हाथ जोड़ते, आंख फोड़ते पैर तोड़ते
नमामि पेटं नमामि पेटं पेटं०
ज्ञान तभीतक ध्यान तभीतक, ईश्वरका गुण गान तभीतक
रहते भरे आपहैं जबतक, खाली मे है खाली वक वक
नमामि पेटं नमामि पेटं पेटं०
स्थिति अनुसार भक्त गण अर्पित, लेह्य चौष्य पेयादिक चर्वित
नित नै वेद्य ग्रहण करते हो, तोभी खांव खांव करते हो
नमामि पेटं नमामि पेटं पेटं०
घरमें कोई भी मरजावे, रोना धोना भी मचजावे

तोभी होतीहै तव पूजा, कौन समर्थ आपसा दूजा
नमामि पेटं नमामि पेटं पेटं०
प्रात.काल नींद खुलती जब,मनोवृत्ति जागृत होती तब
याद आपकी ही आजाती, शीघ्र दृष्टि हंडी पर जाती
नमामि पेटं नमामि पेटं पेटं०
जन्मकालसे जीवन भर तक, उषाकालसे अर्द्ध रात्रि तक
लेकर मनमे विविध वासना, करते सब नित तव उपासना
नमामि पेटं नमामि पेटं पेटं०
करै न जो नित तव आराधन, महा मूर्ख पापी वह दुर्जन
शीघ्र अवज्ञा फल पाताहै,कुछ दिन ही मे मर जाता है
नमामि पेटं नमामि पेटं पेटं०
जगमें तव ऐसी है महिमा, ऐसे है प्रताप गुण गरिमा
बड़ को पीपल कहना पड़ता, सालेको प्रभु कहना पड़ता
नमामि पेटं नमामि पेटं पेटं०
कई आप हित ऐसे मरते, चमरों को सलाम नित करते
कई पीटते यश की भेरी,करते नीच द्वार पर फेरी
नमामि पेटं नमामि पेटं पेटं०
तुम्हीं दुखों से भेट कराते, तुम्हीं अनेक चपेट खिलाते
जड़ लेखिनी कहां तक गावे, जग जीवों की कौन चलावे
यक्ष रक्ष सिद्धादिक किन्नर, सुर तक भी रखते है तव डर
नमामि पेटं नमामि पेटं पेटं०

मैंने स्तुति की है तव ऐसी, की होगी न किसीने जैसी
बस वरदान यही मै पाऊं, तेरा दुःख कभी न उठाऊं
नमामि पेट' नमामि पेट' पेट'०

दोहा

अरे पेट धिक्कार है, तो को वार हज़ार
गुणि जन को निदरत फिरत, फिर फिर द्वार गंवार

उदारता

अति उदारता बड़न की, कहलो वरनै कोय
चातक याचै तनक जल, वरस वरै घन तोय

उपकार

उपकारी उपकार जग, सबसों करत प्रकास
ज्यों कटु मधुरे तरु मलय, मलयज करत सवास
जे उदार ते देत है, रीझत जिहि तिहि चाल
गाल बजाये हू करै, गौरी कन्त निहाल
जो सब ही को देत है, दाता कहिये सोय
जल धर वर्षत सम विषम, थल न विचारे कोय
भलेबुरे हू सो करत, उपकारी उपकार
तरुवर छाया करत है, नीच न ऊंच विचार
बड़े दीनके दुख सुने, लेत दया उर आन
हरि हाथी सों कब हुती, कहु रहीम पहिचान.

धन रहीम जल पंकको, लघुजिय पियत अघाय
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पयासो जाय
नम्र विटप सब फल भरे, रहे भूमि नियराय
पर उपकारी पुरुष जिमि, नवहि सु सम्पति पाय

चौपाई

पर हित सरिस धर्म नहि भाई, पर पीड़ा सम नहि अधमाई
पर हित वश जिनके मनमाही, तिन्ह कहं जग कछु दुर्लभ नाहीं

दोहा

धनी कृपण ते होत कब, निधन उदारहि रीस
वो न दे सके तनिक धन, ये परहित दे सीस

उपकारकी ढाल

निन्दक है जो दुष्ट जन, कर उनपर अहसान
टुकड़ा आगे डालदे, फिर नहिं भौंके श्वान

उपाय

पूरे साधन के बिना, कारज सधै न बीर
ओछी डोरी कूपसो, नेक न काढ़त नीर
जो पहिले कीजे यतन सो पाछे फल दाय
आगि लगे खोदे कुवा, कैसे आग बुझाय
होत न कारज बड़न तैं, बिधिवत बिना उपाय
अंजन चलत न नेकहू, भाप भरे बिन भाय

ताको अरि का कर सकै, जाको जतन उपाय
जरै न ताते रेतसो, जाके पनहै पाय
जोरावर अरि मारिये, बुधि बल किये उपाय
काल यवन को कृष्ण ज्यों, पट मुचकन्द उढ़ाय
छल बल धर्म अधर्म करि, अरि साधिये अभीत
भारत मे अर्जुन किसन, कहां करी युध रीत
सुख दिखाय दुख दीजिये, खल सों लरिये नाहि
जो गुड़ दीने ही मरै, क्यो विष दीजे ताहि
झूठे ही करिये जतन, कारज बिगड़े नाहि
कपट पुरुष धन खेत पर, देख मिरग भगजाहिं
छोटे अरि को साधिये, छोटो करि उपचार
मरै न मूसा सिह पे, मारे ताहि मजार
जोरावर हूं को कियौ, विधि वश करन इलाज
दि्पत मही अंकुस गजहि, जल निधि तरन जहाज

ऊंचा पद सार हीन है

ऊंचे पद की लालसा, नारायण दे त्याग
फीका फीको सो लगत, ऊख उपरी भाग
नामवरी जिन की नहीं, होत न वे बदनाम
लकड़ी की तलवार पर, कहा किट्ट को काम
बड़ माया को दोष यह, जब कबहूं घट जाय
तौ 'रहीम' मरिबो भलो, दुख सुखजिये बलाय

ऋणी

उत्तमर्ण के सामने, होत ऋणी द्यु ति हीन
जिमि दिनकर के सामने, हिम कर कान्ति मलीन
मिले एक हू छाक मे, जाहि न पुष्कल अन्न
पर सो ऋणी न होय तो, रहे सदैव प्रसन्न
लेन हार सनमुख भये, देन हार द्यु ति दीन
राहु केतुके सामने, ज्यों शशि रवि श्री हीन

ऐक्य

जुदे न जैसे लहत है, मिले विरंगत संग
काथ पूग चूना पड़त, होत लाल मिल रंग
बहुतन को न विरोधिये, निबल जान बलवान
मिल भखि जांहि पिपीलका नागहि नग के मान।
बहुत निबल बल मिल करे, करैं जु चाहे सोय
तिनकन की रसरी करी, करी निवन्धन होय।
मिलवे ते सुख मिलत है, निहचै मान वचन्न
बने रसोई जो मिले, आग इंधन जल अन्न
दोऊ चाहे मिलन को, तो मिलाप निर्धार
कबहू नाहीं बाजि है, एक हाथ से तार
दुर्बल हू बलवान हों जो गठ जाय समाज
बोदे तृण मिल गुण बने, बांधत है गजराज।
"मैं मैं तू तू" ने किया, आपस मे मत भेद

हम को सदा प्रयोग कर, कभी न उपजे खेद
प्रीत रीत सब से भली, वैर न हित मित गोत
रहिमन याही जनम की, बहुर न संगति होत
एक नहीं कुछ कर सकत, यदपि होय छबि गेह
बिन सनेह गुण हीन है, गुण बिन हीन सनेह

घनाक्षरी

बुन्दन मिलाप ही सो भरिजात वारधीश.
करि को निवन्ध होत तिन के मिलान है।
पड़ पड़ पैसा होय जात है खज़ाना पूर,
वर्ण वर्ण सीखे नर होत विद्वान है।
एक एक ज़र्रा जुरि गिरि को अकार होत,
मानुष जुरे तो होत दल का विधान है।
राम कवि विविध विचारों से विचार देखा,
एकताइ एकै सुख सम्पत की खान है।
बांधे जात वारिधि हिमाल्य को हिलायो जात,
अग्नि जल वायु नित हुकम उठाते है।
ऐरावत नाचै निज पीठ पै चढ़ावे शेर,
महा बलकारी खौफनाक खौफ खाते है।
सम्भव होजात जिसे भाषै असम्भव जग,
सकल पदार्थ विन मांगे घर आते है।
राम कवि देखाहै विचार कर बार बार,
एक एकता मे सब काम बन जाते है।

ऐश्वर्य मद

धन बाढ़े मन बढ़ गयो, नाहिन मन घट होय
ज्यों जल संग बाढ़ै जलज जल घट घटे न सोय
धन अरु जोबन को गरब कबहूं करिये नाहि
देखत ही मिट जात है, ज्यों बादर की छाहि
धन गुण जोबन रूप मद, दुरै न एको संच
ज्यों हांसी खांसी बहुर, रोके रहत न रंच
देखत है जग जात है तउ ममता से मेल
जानत है या जगत मे, देखत भूलो खेल
थोड़ा धन चिन्ता हरै, बहुत करै मति भंग
उछरे नीर न कुम्भ मे, नद में भरे तरंग
रहिमन कबहूं बड़न को, नहीं गर्व को लेश
भार धरै संसार को, तऊ कहावत शेष

कुण्डलिया

दौलत पाय न कीजिये, सपने मे अभिमान
चंचल जल दिन चार को, ठांव न रहत निदान
ठांव न रहत निदान, जियत जग मे यश लीजै
मीठे बचन सुनाय, विनय सबहीसों कीजे
कहि गिरधर कवि राय, अरे ! ये सब घट तौलत
पाहुन निशदिन चार, रहत सब ही के दौलत

दोहा

कनक कनक तै सो गुनी, मादकता अधिकात
उहि खाये बौराय जग, इहि पाये बौरात

ओछे की प्रीति

ओछे नर की प्रीति की दीनी रीति बताय
जैसे छीलर ताल जल, घटत घटत घट जाय
बिन बूझे ही जानिये,बुध मूरख मन मांहि
छलकत ओछे नीर घट, पूरे छलकत नाहि
बिनसत बार न लागई, ओछे नर की प्रीति
अम्बर डम्बर सांझ के, ज्यों बालू की भीति
ओछे नर के पेट मे, रहै न मोटी बात
जैसे सागर को सलिल गागर मे न समात
ओछे नर के चित्तमे, प्रेम न पूर्यो जाय
आध सेर के पात्रमे, कैसे सेर समाय
बचन रचन कापुरुष के, कहे न छिन ठहराय
ज्यों कर पद मुख कछप के, निकस २ दुर जाय

क्षमा शक्ति

नर भूषण सब दिन क्षमा, बिक्रम अरि घन घेर
ज्यों तिय भूषण लाज है, निलज सुरति की बेर
होत क्षमा करबाल सों, रिपु को नष्ट घमंड
बढ़े न कल्लर भूमि में, पावक पुञ्ज प्रचंड
गारी खाय असीस दे, कर अनिष्ट को इष्ट

खारी जल बादर गहे, बरसावे करि मिष्ट

दुष्ट जनों के कोप पै, कोप करो मत वीर !

आग न आग बुझा सकै, ताहि बुझावत नीर

क्षुद्र अगुवा से हानि

पाय क्षुद्र अगुवा घटे, पिछलगुवों की लार

चलत सुई की गैल गहि, खपै सूत का तार

कठिन दुःख

चौपाई

यद्यपि जग दारुण दु ख नाना, सबते कठिन जाति अपमाना

कपटी

ऊपर दरसै सुमिल सी, अन्तर अन मिल आंक

कपटी जन की प्रीति है, खीरा की सी फांक

देखत को सुन्दर लगे, उर मे कपट विषाद

इन्द्रायन के फलन सम भीतर कटुक सवाद

मुं: पर मीठी बात है, मन की रुचि प्रतिकूल

कुम्भ पयो मुख विष भर्यो, ताहि विलोकि न भूल

सन्मुख मुख मीठो बचन, पीठो कारज दूर

दीठो मीत दुराय अस, कंचन घट विष पूर

हृदय कपट वरबेष धर, वचन कहै गढ़ि छोल

अबके लोग मयूर ज्यों, क्यों मिलये मन खोल

मित्र मित्र सों प्रीति कर, हृदय आन मुख आन
जाके मन बिच प्रेम नहि, दुरे दुराये जान

सोरठा

तुलसी देख सुवेष, भूलें मूढ़ न चतुर नर
मुन्दर केकी पेष, वचन सुधासम अशन अहि

चौपाई

आगे कह मृदु बचन बनाई, पाछे अनहितमन कुटिलाई
जाकर चित अहि गति समभाई, अस कुमित्र पर हरे भलाई
मन मलीन तन सुन्दर कैसे, विष रस भरा कनक घट जैसे

घनाक्षरी

मीठी मीठी बात एक पल को न छोड़े साथ,
बचनों की चातुरी से नेहमे सने रहे।
पैज कर कहत मरैंगे संग तेरे मीत!
रैन दिन ऐसे बैन इनके घने रहे
लागी जब घात हाथ साफ करि बैठे जाय,
कुंज जो थे नैन सोई वाण सों हने रहे।
कलिके कुमीतन की राम कवि देखी रीत,
बातनमें बैरी, मुख अपने बने रहे ।

कृपण निन्दा

खाय न खरचै सूम धन, चोर सवै लैजाय
पीछे ज्यो मधु मच्छिका, हाथ मलै पछताय
वह सम्पति किहि कामकी, जो काहू पै होय
नित्त कमावै कष्ट सहि, विलसे औरहि कोय
कृपण धनीको जगतमे, दंड दियो है राम
भोजन आगे धर मनो, मुखमें दई लगाम
त्यागी कहिये कृपण को, गहत न कौड़ी साथ
लेत न कछु परलोक हित, रमता रीते हाथ
जेती सम्पति कृपणकी, तेती तू मत जोर
बढ़त जात ज्यों ज्यों उरज, त्यों त्यों होत कठोर

घनाक्षरी

देखतके वृच्छनमे दीरघ सुभाय मान,
कीर चल्यो चाखिवे को प्रेम जिय जग्यो है।
लाल फल देख कै जटान मडरान लागे,
देखत बटोई बहुतेरो डगमग्यो है।
गंग कवि फल फूले भुआ उधिरान लखि,
सबन निराश है कै निज घर भग्यो है।
ऐसे फल हीन वृच्छ वसुधामे भये यारो,
सेमर विसासी बहुतेरन को ठग्यो है।



कहने और करनेमें अन्तर

कहिवो कछुकरवो कछू, है जगकी विधि दोय
देखन के अरु खान के, और दुरद रद होय
आप कहै नाहीं करै, ताकौ है ये हेत
आप जाय नहि सासुरै, औरुन को सिख देत
मान करहु जेकर सकहू, कथनी अकथ अपार
कथे न करकछु आवही, करनी कर तब सार
चले न निज उपदेश पर, तासो होय न हेत
बुरे बतावत और कों, खुद बैगन खालेत

चौपाई

पर उपदेश कुशल बहुतेरे,
आचरही ते नर न घनेरे

घनाक्षरी

जोवन सुधार होत वन्धन विनश जांय,
जाहुके कियेसे मन पावत विश्राम है ।
जैसा कुछ वेद शास्त्र देत उपदेश तोहि,
जानत है सत्य मन मानत मदाम है ।
वचन बनाय निज चातुरी जनाय नित्य,
रैन दिन ऐसे ही तू करत कलाम है ।
चल्यो पै न आप तिस मार्ग पर एक क्षण,
विषयोंका दास अति झूठा कवि रामहै ।

औरोंको बतावत है भजो भगवानजू का,
भजता है आप पर नित्य काम काम तू।
औरोंको सुनावे तज दीजै लोभ मोह आदि,
हुआ पर आप लोभ मोहका गुलाम तू।
बुरी है पराई निन्दा कह कह जनावे है,
निन्दायुत नित्य पर करता कलाम तू।
मानुषीय जन्म है अमोलक, बखान फिर.
खोवत है ताको अरे! झूठे कवि राम तू।

कहनेसे सुनना अच्छा

दूना सुन आधा कहो, सीखो प्रकृति विवेक
कान दिये दो ईशने, वाणी बकसी एक

कही बात पराई

पावत बहुत तलाश नहि, कर तैं छूटी बात
आंधी में टूटी गुडी, को जाने कित जात
गूढ़ यन्त्र जौलों रहे, करैं जु मिलि जन दोय
भई छकानी बात जब, जान जात सब कोय
गूढ़ मन्त्र गरुवे विना, कोऊ राचि सकैन
कनक पात्र विन और मे बाघिन दूध रहै न
बात वही अपनी समझ, जो नहि हुई बयान
तीर न आवत हाथ फिर, जो तजि गयो कमान

कुण्डलिया

साइ अपने चित्तकी, भूलि न कहिये कोय
तब लगि मनमे राखिये, जब लगि कारज होय
जब लग कारज होय, भूलि कबहू नहि कहिये
दुर्जन हंसै न कोय, आप सियरे हो रहिये
कहि गिरधर कविराय, बात चतुरनके ताईं
करतूती कहिदेत, बात कहिये नहि साइं

सवैया

बोधा किसीको कहा कहिये सो विथासुन पूर रहै, अरगाइकै
याते भला मुख मौन धरैं, उपचार करै कहुं औसर पाइकै
ऐसो न कोऊ मिल्यो कबहूं,जो कहै कछु रंच दया उर लाइकै
आवतुहै मुखलो बढ़िकै फिर पीर रहै, या सरीर समायकै

कायर निन्दा

कायर नरको देखि रन, मुख फीको दरसाय
काचो रंग ज्यों धूपमे, झटक चटक उड़िजाय
कायर मन उड़िजात है, सुन कर रनकी बात
बात लगे काफूर ज्यो, थिर फिर पल न रहात

कार्य कसौटी

काम परेही जानिये, जो नर जैसो होय
बिन ताये खोटो खरो गहनो लहै न कोय
सब कोऊ सबको करै, राम जुहार सलाम
हितु अनहितु तब जानिये, जादिन अटके काम

काज पड़े सबही बड़ा, बिन कारज सब छोट
पाई हेत भंजावते, रुपिया मोहर नोट
रहिमन बिपता तू भली, जो थोरे दिन होय
हितु अनहितु या जगतमे, जान परे सब कोय
देत दया निधि तनिक दुख, या हित तुहि अनजान
जान जाय या जगतमे, को अपनो को आन

चौपाई

धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपतकाल परखिये चारी
कसे कनक मणि पारस पाये, पुरुष परखिये समय सुभाये

कुछ नहीं

छप्पय

न कछु क्रिया बिन विप्र, न कछु कायर जिय छत्री
न कछु नीति बिन नृपति, न कछु अच्छर बिन मन्त्री
न कछु वाम बिन धामु, न कछु गथ बिन गरुआई
न कछु कपटको हेत, न कछु मुख आप बड़ाई
है न कछु दान सन्मान बिन, न कछु सुभोजन जासुदिन
जन सुनो सकल नर हरि कहत, न कछु जन्म हरि भक्ति बिन
ससि बिन सूनी रैन, ज्ञान बिन हिरदै सूनो
कुल सूनो बिन पुत्र, पत्र बिन तरवर सूनो
गज सूनो इक दंत, ललित बिन सायर सूनो
विप्र सून बिन वेद, और दल पहुप विहूनो

हरिनाम भजन बिन संत अरु घटा सून बिन दामिनी
बैताल कहें विक्रम सुनो, पति बिन सूनी कामिनी

कुत्सित कार्पण्य

विद्या दान न देत है, जो पण्डित पन धार
छागी गल थनसे वृथा, तिनके जन्म असार

कुपुत्र निन्दा

कुल कपूत किहि काम को, जिहिं सुख सोभा नाहि
ज्यों बकरी के कंठ थन, दूध न जल तिहि माहि
ज्यो रहीम गति दीपकी, कुल कपूत मति सोय
बारे उजयारे लगे, बढ़े अंधेरी होय
कुल कपूत नहिं जामियो, रहै वांझ वरु माय
निकस बांसते अग्नि कन, बनको देत जराय
कुल ही नहि कुल देशको, देत कपूत दुखाय
ज्यों जयचन्द कनौज गति, जानत बुध समुदाय

कुण्डलिया

बेटा बिगरे बापसे, करि तिरयन को नेहि
लटापटी होने लगी, मोहि जुदा करि देहि
मोहि जुदा करि देहि. घरी मां माया मेरी
लैहूं घर अरु द्वार, करूं मै फजियत तेरी
कहि गिरधर कविराय, सुनो गदहा के लेटा
समय परो है आय, बापसे झगरत बेटा

साईं ऐसे पुत्र ,ते बांझ रहे वरु नारि
बिगरी बेटे बाप से, जाय रहे सुसरारि
जाय रहे सुसरारि, नारिके नाम बिकाने
कुलको धर्म नशाय,और परिवार नशाने
कहि गिरधरि कविराय, मात झंखै वरु ठाईं
अस कुपुत्र नहि होय, बांझ रहतो वरु साईं

आलसरत, शोकातुर लंपट, कपटी और सदा बल हीन
मानस मलिन सदा निद्रातुर,लोभी और अकारण दीन
ऐसे सुतसे क्या फल होगा, हे चतुरान दे वरदान
कभी कपूत किसीको मत दे, चाहे करदे निस्सन्तान
परसे प्रेम द्रोह अपनेसे, करते नित्य दुष्ट गुण गान
गुरु जनकी निन्दा कर हंसते, अपनेको कहते गुणवान
काला अच्छर भैंस बराबर, पर तोभी रखते अभिमान
क्रोधानलमे जलते रहते, यही कपूतोंकी पहचान

कुल बृद्धिसे प्रसन्नता

यों रहीम सुख होत है, बढ़त देख निज गोत
ज्यों बड़री अंखियां निरख,अंखियनको सुखहोत

कुलस्वभाव अमिट है

कुल मारग छोड़ै न कुउ, होहु कितेकी हानि
गज इक मारत दूसरो, चढ़त महावत आनि

जिन परिडत विद्या तजहु, धन मूरख अवरेख
कुलजा शील न परहरै, कुलटा भूषित देख
अपनी राह न छाड़िये, जो चाहहु कुशलात
वड़ी प्रवल रेलहु गिरत, और राहमे जात
तुलसी कबहु न त्यागिये, कुल अपने की रीति
लायक ही सो कीजिये, व्याह बैर अरु प्रीति

घनाक्षरी

चातक कुल शोभा नीर पियत न नीचै ह्वै,
हंस कुल शोभा क्षीर नीर की जुदाई तैं।
कंज कुल शौभा है दिनेशसे न मोड़ै मुख,
शोभा है कुमुद कुल चन्द्र की मिताई तैं।
सूर कुल शोभा जैसे रणसे न दीने पीठ,
दाता कुल शोभा जैसे दान अधिकाई तै।
राम कवि भाषै तैसे सुजन सुजान सुनो,
कवि कुल शोभा शुभ होत कविताई तैं।

कुसंगति निन्दा

जिन प्रसंग दूषण लगे, तजिये ताको साथ
मदिरा मानत है जगत, दूध कलाली हाथ
खल जनसों कहिये नहीं, गूढ़ कबहुं करि मेल
यों फैले जग मोहि ज्यों, जल पर बुन्दक तेल

दोहा

दुर्जनके संसर्ग तैं, सज्जन लहत कलेश
ज्यो दशमुख अपराध तैं,वन्धन लह्यो जलेश
अनघर सुघर समाज मे, आय विगारै रंग
जैसे हौज़ गुलाब को, विगरै श्वान प्रसंग
अनमिल सुमिल समाज तै, होत गये उठ चैन
जैसे तिन परि देत दुख, निकसै विकसै नैन
रसिक सभामे निरस नर, होत होत रस हानि
जैसे भैंसा तालपरि, मलिन करत जल आनि
मिल्यो दुष्ट नाहिन भलो, उपजत मिले अहेत
ज्यों कांटो गढ़ि देहमे, अटक खटक दुख देत
बिगर्‍यो होय कुसंग जिहि, कौन सकै समझाय
लसन बसाये बसन को, कैसे फूल बसाय
दुष्ट निकट बसिये नहीं, बस न कीजिये बात
कदली बेर प्रसंग तै, छिदे कंटकन पात
करिये बात न तन परश, खल ढिग जैयै नाहिं
कटुक नीम तर जात ही, मुख कडुवे ह्वै जाहि
एक अनीत करे लहै, संगी दुख अति ताहि
भीम कीचकन को दियो, मार चिता के माहि
वसिये तहां विचार के, जहाँ दुष्ट गति नाहिं
होत न कबहूं भँवर डर, ज्यों चम्पक बन माहि

आप अकारज आपनो, करत कुबुधके साथ
पाय कुल्हारी आपने, मारत मूरख हाथ
दुष्ट संग बसिये नहीं, दुख उपजत इहि भाय
घसत बांसकी अग्नि तैं, जरत सबै बनराय
पड़ कुसंगमे पड़त है, निर्मल पर भी मार
पावक लोहे से मिलत, पीटत ताहि लुहार
रोकत संग मलीन का, यश सौरभ विस्तार
काली मिरच मिलाय ते, उड़ न सके घनसार
कुटिलन संग रहीम कहिं, साधू बचते नाहि
ज्यों नैना सैना करे, उरज उमेठे जाहि
रहिमन नीचन संग वसि, लगत कलंक न काहि
दूध कलालिन हाथ लखि, मद समझहि नर ताहि
संगति सुमत न पावई, परे कुमतके धंध
राखो मेल कपूर मे, हीग न होय सुगंध
संगत दोष लगै सबन, कहे जु सांचे बैन
कुटिल बंक भ्रू संग मे, कुटिल बंक गतिनैन
बहु दुष्टन के कलह मे , भूल न दीजे पाय
बांस बांसके घिसन ते, सकल विपन जर जाय

चौपाई

खलउ करैं भल पाय सुसंगू , मिटहि न मलिन सुभाव अभंगू
उघरहि अन्त न होय निबाहू, कालनेम जिमि रावण राहू

वरु भल वास नरक कर ताता, दुष्ट संग जनि देइ विधाता
को न कुसंगति पाय नशाई, रहत न नीच मते चतुराई

घनाक्षरी

लोहे की कुसंगति से आग पर मार पड़े
खट्टे की कुसंगति से दूध फट जात है
बांस की कुसंगति से जल जात लाखों वृक्ष
कीच की कुसंगति से कूप अट जात है
दुष्ट की कुसंगति समाज को विनाश करे
क्रूर की कुसंगति से सूर कट जात है
'राम' कवि देखा है विचार करि बार बार
नीच की कुसंगति से मान घट जात है

चौपाई

धूम अनल सम्भव सुन भाई, तिहि बुझाव घन पदवी पाई
रज मग परी निरादर रहई, सब कर पद प्रहार नित सहई
मरुत उड़ाय प्रथम तिहि भरई, पुनि नृप नयन किरीटन्ह परई
सुन खगपति अस समझ प्रसंगा, बुध न करहि अधमन कर संगा

घनाक्षरी

जाइये न तहाँ जहाँ संगति कुसंगति है
कायर के संग सूर भगि है पै भगि है
फूलन के व.स बश फूलन की वास होत
कामनी के संग काम जगि है पै जगि है

घर बसे घर बसे घर मे वैराग्य कहा
माया मोह ममता मे पगि है पै पगि है
काजर की कोठरी मे कैसहू सयाने पैठे
काजर की एक रेख लगि है पै लगि है

कोरा भजन

लगन विना कोरा भजन, देत न हरि को संग
एक पत्त सों गगन मे, उड़ नहि सकत विहंग

कौन क्या चाहता है

धन चाहत निसदिन अधम, मध्यम धन अरु मान
उत्तम चाहत मान ही, चाहत कछु न महान

गुणमहिमा

मान होत है गुणहि तैं, गुण बिन मान न होय
शुक सारो राखैं सबै, काग न राखै कोय
आडंबर तज कीजिये, गुण महिमा चित चाय
छीर रहित गौ नहि विकत, आनिये घंट बँधाय
थोड़े ही गुण ते कहूं, हो प्रसिद्धि जग माहिं
एकहि कर ते गहि करी, करी सहसदस नाहिं
ऊंचे बैठे ना लहै, गुण विन बड़पन कोय
बैठो देवल शिखर पर, बायस गरुड़ न होय
गुण वारो संपति लहै, लहै न गुण बिन कोय
काढ़ै नीर पताल तै, जो गुण युत घट होय

गुण सनेह युत होत है, ताही की छबि होत
गुण सनेह के दीप की, जैसे ज्योति उद्योत
करै अनादर गुणिन को, ताहि सभा छवि जाय
गज कपोल शोभा मिटत, ज्यों अलि देत उड़ाय
जैसो जैसो अधिक गुण, तैसो होय मिलाय
अहि उर, विष गल, अनल चख, ससि सिर शंभु वसाय
जहां रहै गुण वन्त नर, ताकी शोभा होत
जहां धरै दीपक तहां, निहचै करै उदोत
खाली तज पूरण पुरुष, जिहि सब आदर देत
रीतो कुंवां उतारियें, ऐंच भरयो घट लेत
पूजनीय गुण तै पुरुष, वर्ष न पूजित होय
यज्ञ तिलक किय कृष्ण को, छोड़ वड़े सब कोय
गुण बिन पुजे न लोक मे, वड़ कुलियों की पांति
कोन भजे वसुदेव को, वासदेव की भांति
गुण ते लेत रहीम जन, सलिल कूप ते काढ़ि
कूपहु ते कहुं होत है, मन काहू को वाढ़ि

कुण्डलिया

गुण के गाहक सहस नर, विन गुण लहै न कोय
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुने सब कोय
शब्द सुने सब कोय, कोकिला सबै सुहावन
दोऊ को इक रंग, काग सब भये अपावन

कहि गिरधर कविराय, सुनो हे ठाकुर मनके
बिन गुन लहै न कोय, सहस नर गाहक गुन के

घनाक्षरी

दीपक विचार सार केतोही सनेह डार
गुणते विहीन हीन मन्दर लखात है
ऐसे धनु देख गुण रेख विन कामका न
कोटि शर जोड़े एक पद पै न धात है
चंग चढ़ जात है अकाश गुण संयुत हो
राम कवि भाषै ये गुण की करामात है
जो पै गुण डारिवे तै येते गुण जड़ता में
मानुष अपार गुण कापै कह्यो जात है
जौलौ कोऊ पारखी सों होन नहि पाई भेट
तबही लों तनिक ग़रीब लों शरीरा है
पारखी सों भेट होत मोल बढ़े लाखन को
गुनिन के आगर सुबुद्धि के गंभीरा है
ठाकर कहत नहि निन्दो गुणवानन को
देखवे को दीन ये सपूत सूर बीरा है
ईश्वर के अनस ते होत ऐसे मानस जे
मानस सहूर वाले धूर भरे हीरा है



गुणहीन को गुण प्यारा नहीं लगता

रस की कथा सुनी न तिहि, कूर कथा की चाहि
जिन दाखै चाखी नहीं, मिष्ट निबौरी ताहि
जो गुण को नहि जानई, अवगुण ही गुण ताहि
सूर उदित आंखे मॅुदत, रजनि उलूक उमाहि

गुप्त नाश

फाट रह्यो जीवन बसन, पल पल करो विचार
श्वास श्वास पर खिचत है, याको इक इक तार

चाहने वाले की दृष्टि से देखो

जो जाको प्यारो लगत, सो तिहिं करत बखान
जैसे विष को विषभखी, मानत अमृत समान
जो जिहि भावे सो भलो, गुण को कछु न विचार
तज गज मुक्ता भीलनी, पहरति गुंजा हार
जाको जासों मन लग्यो, सो तिहि आवे दाय
खाल भस्म विष मुंड युत, शिव तउ शिवा सुहाय
जो जाही सों रच रह्यो, ताहि ताहि सों काम
जैसे कीड़ा आक को, कहा करै बसि आम
जिय चाहै सोई भलो, जियत भलो हिय लागि
प्यासो चाहत नीर को, कहा करे लै आगि

जे चेतन ते क्यों तजै, जाको जासों मोह
चुंबक के पाछे सदा, फिरत अचेतन लोह
जिहि चाहे सोई लहै, यो सुख होय शरीर
ज्यो प्यासे जिय को मिले, निर्मल शीतल नीर
मनभावन के मिलन बिन, यों जिय होत उदास
ज्यो चकोर की दिन दिशा, चकवा चंद प्रकास
सब कोऊ चाहत भलो, मित्र मित्र की ओर
ज्यों चकई रवि के उदय, शशि के उदय चकोर
प्रेमी प्रीति न छोड़ही, होत न पन तैं हीन
मरे परे हू उदरमे, ज्यो जल चाहत मीन
मीठी कोऊ वस्तु नहि, मीठी मन की चाह
अमली मिसिरी छोड़ कैं, आफू खात सराह
कत टैं टैं कर करत हौ, चातक को उपचार
भेक कहा तुम जानिहौ, स्वाति बून्द की सार
दीपक दाहक और को, होत रहे तो होय
पै पतंग के अंग को, सुखदायक है सोय
जाकी जाको लगन है, मगन ताहि को पाय
काकी काक सुहावनो, रानी राव सुहाय



छलेहुए सबसे डरते हैं

पिसुन छल्यो नर सुजन सों, करत बिसास न चूक
जैसे दाधो दूध को, पीवत छाछहि फूक
फेर न ह्वै है कपट सों, जो कीजै व्योपार
जैसे हांडी काठकी, चढ़ै न दूजी बार
खल बंचित नर सुजन को, नहिन विसास करेइ
उहक्यो उडु प्रति बिम्बतै मुक्ता हंस न लेइ

छोटोंसे बड़ोंकी शोभा

छोटे नरते रहत है, शोभायुत सिरताज
निर्मल राखे चांदनी, जैसे पायन्दाज
बढ़े धनीकी आबरू, निर्धनको अपनाय
मैला दर्पण देखिये, निखरे राख रमाय
नीच सनेही करि रहै, ऊंच सुखी दिन रैन
तेल मलत है पगन सों, मस्तक पावत चैन
छोटन सों सोहै बड़े, कहि रहीम यहि लेख
सहसन को हय बांधियत, लै दमरी की मेख
छोटों ही के मेलसे, मान बड़ो नर पाय
लंका जीती रामने, बानर रीछ सहाय
बड़े करत है काम बड़, छोटन को बल पाय
गुरु अञ्जन ज्यों चलत बहु, अति लघु वाल* सहाय

*Valve

जीवित मृतक हैं

चौपाई

कौल, काम बश, कृपण, बिमूढ़ा,
अति दरिद्रि, अयशी, अति बूढ़ा।
सदा रोग बश, संतत क्रोधी,
राम विमुख, श्रुति संत बिरोधी।
निजतनु पोषक, निर्दय खानी,
जीवत शव सम चौदह प्रानी।

ज़बान बसमें रक्खो

छप्पय

जीभ जोग अरु भोग, जीभ सब रोग बढ़ावै
जीभ करै उद्योग, जीभ लै कैद करावै
जीभ स्वर्ग लैजाय, जीभ सब नर्क दिखावै
जीभ मिलावै राम, जीभ सब देह धरावै
निज जीभ ओठ एकाग्र करि' बांट सहारै तोलिये
बैताल कहैं विक्रम सुनों, जीभ सँभारे बोलिये

कुण्डलिया

दावा जारत दर्भबन, हरित काल भल पाय
वचन अनल हिय जरत ही, बहुर न अंकुर आय

बहुर न अकुर आय, जरै दिन रैन घनेरो
कोटि यत्नहू करहु, दुःख नहि जाय निवेरो
राम सु कवि यों कहत, जाय तन संगहि धावा
अमृत बारि चहि सींच, हिये कर बुझत न दावा



जानीहुई बातका क्या पूछना

जाने सो बूझै कहा, आदि अन्त विरतन्त
घर जन्मे पशुके कहो, देखत कोऊ दन्त ?
परतछनी कै देखिये, कह वरनै कुछ ताहि
कर कंकन को आरसी, को देखत है चाहि
जान बूझ अजगुत करै तासों कहा बसाय
जागत ही सोवत रहै, तिहि को सके जगाय
जान अजान जु हो रहे, तासों रहिये मोन
ज्योतिमान रवि को कहो, पिड न जाने कौन

जिसके संयोगसे सुखहै उसके वियोगसे दुख

जाहि मिले सुख होत है, ता बिछुरे दुख होय
सूर उदय फूलै कलम, ताबिन सकुचे सोय
पियके बिछुरे बिरह बस मन न कहूं ठहरात
धरनि गिरत बिचही फिरत परयो भंभूरे पात

धनि रहीम गति मीन की, जल बिछुरत जिय जाय
जियत कंज तजि अनत बसि, कहा भौंरको भाय
जितो हर्ष मिल होत है, बिछुरत शोक समान
कमल खिलत जलसे मिलत, बिछुरत त्यागत प्रान

जिससे सुख पाया हो उसके दुखमें साथ देनाचाहिये

बिपति परे सुख पाइये, ता ढिग करिये भौन
नैन सहाई वधिर के, अंध सहाई श्रौन
सेवक सोई जानिये, रहे विपितमे संग
तन छाया ज्यों धूपमें रहे साथ इक रंग
सुख दुख संगीजो रहे, सो सांचे हितु जान
बाढ़त जल बाढ़त कमल, घटत तजत है प्रान

जैसी करनी वैसी भरनी

करे बुराई सुख चहै, कैसे पावै कोय
रोपे बिरवा आक को, आम कहां ते होय
होय बुराई ते बुरो, ये जानो निरधार
खाड़ खनावै और को, ताको कूप तयार
यह कहवत जैसी करै, तैसी पावे लोय
औरन को आंधो करै, आंधी कहियत सोय

दोहा

सुख को दुख देत है, देत कर्म झकझोर
उरझै सुरझै आप ही, ध्वजा पवनके जोर
। काहूकी कहत है, भली बुरी संसार
दुर्योधनकी दुष्टता, विक्रम को उपकार
तो कारन होत है, तैसो कारज थाप
कर सरधनु प्रानी हनत, कर माला हरि जाप
रायण दुर्वचन को, कौन सुने हर्षाय
खोटा सिक्का जाहि दो, तुरत देत लौटाय
सा वीज बखेरिये, वैसाही फल पाय
कांटे खात बबूल से, फूल सुगन्ध रिझाय

घनाक्षरी

आप हित चाहै परहित को निबाहै नर,
दापन दुरावै पर दापन दुराइये।
चाहै जो भलाई भल ठानै मन औरन की,
चाहत कल्यान ध्यान राखत पराइये।
चाहै सुत बन्धु नारिधार मन औरन के
सुख अभिलास नही, जीवों को सताइये।
राम कवि भाषै शिख परम हितू है तोर,
सन्तत विचार चारु हिये मे धराइये॥

जैसी नीयत वैसी बरकत

घनाक्षरी

ऊंचो कर करै ताहि ऊंचो करतार करै
ऊनी मन आने दूनी होति हरकति है।
ज्यो ज्यो धन धरै सैंचै त्यो त्यों बिधि खरो खैंचै,
लाख भांति धरै कोटि भांति सरकति है।
दौलत दुनीमे थर काहूके न रही क्षेम,
पाछे नेकनामी बदनामी खरकति है।
राजा होइ राय होइ साह उमराय होइ,
जैसी होति नेति तैसी होति बरकति है।

जैसेको तैसा

ताको त्यो समझाइये, ज्यो समझै जिहि बानि
बैन कहत मग अन्धकौं, ज्यो बहिरे कौ पानि
जाका हृदय कठोर तिहि, लगै न कोमल बैन
मैन बान ज्यों पथरमे, क्योंहू किये भिदैन
जो जैसा तिहि तेसिये, करिये नीति प्रकास
काठ कठिन बेधै भ्रमर, मृदु अरबिन्द निवास
ठौर देख कै हूजिये, कुटिल सरल तत्काल
बाहर टेढ़ो फिरत है, बाबी सूधो ब्याल
जिहि तैसो अपराध तिहि, तैसो दंड बखानि
थाप ककरिया चोरको, धन चोरहि जिय हानि

घनात्तरी

हिलमिल जानै तासों मिलके जनावे हेत,
हितको न जानै ताको हितु न बिसाहिये।
होय मग़रूर तापै दूनी मग़रूरी कीजै,
लघु ह्वै चलै जो तासों लघुता निबाहिये।
बोधा कवि नीतिको निवेरा यहि भांति अहै,
आपको सराहै ताहि आपहू सराहिये।
दाता कहा सूर कहा सुन्दर सुजान कहा,
आपको न चाहै ताके बाप को न चाहिये।

तो जैसा है सबको वैसाही जानता है

ाव भावकी सिद्धि है, भाव भावमे भेव
जो मानो तो देव है, नही भीतिको लेव
व सेव फल देयहै, जाको जैसो भाय
जैसे मुखकरि आरसी, देखो सोइ दिखाय
पण्डित जनको श्रम मरम, जानत जे मति धीर
कबहूं बांझ न जानई, तन प्रसूत की पीर
दोष लगावत गुनिन को, जाको हृदय मलीन
धरमी को दंभी कहैं, छमियन को बलहीन

घनात्तरी

सरल सो शठ कहै वकता सों ढीठ कहै,
बिनै करै तासों कहैं धनको अधीन है।

क्षमी सों निवल कहै दमी सों अदत्ती कहै,
मधुर वचन कहै तासों कहै दीन है।
दाता को बतावे दंभी नेह हीन को गुमानी,
तृष्णा को घटावे तासों कहैं भाग हीन है।
साधु गुण देखै जहां तहांही लगावे दोष,
एसो कछु दुर्जनको हृदोई मलीन है।

तत्व ज्ञान

गहत तत्व ज्ञानी पुरुष, बात विचारि विचारि
मथन हार तज छाछको, माखन लेत निकारि
तत्व हीन बकबाद को, सुनते निपट गँवार
लड़कों ही में बिकत है, लकड़ी की तलवार
बिन रस की बकवास जो, सज्जन को न सुहाय
भ्रमर गहत है सरस को, काग़ज़ कुसम विहाय

त्याग

हो निर्भय बटमार सों, कस केवल लङ्गोट
कबहूं नंगी लाशको तकत न कफन खसोट

थोड़े लाभके लिये अति परिश्रम

बिना प्रयोजन भूलिहू, करिये नाहीं ठाट
जैबो नहि जा गांवको, ताकी पूछ न बाट
क्यों करिये प्रापति अलप, जामे श्रम अति होय
कौन गरज गिरि खोदकै, चूहा काढ़ै कोय

दृढ़ता

जो न होय दृढ़चित्त को तहां न रहे सटेक
ज्यों काचे घट में सलिल नहि ठैरत छिन एक

दुःखद हैं

छप्पय

मरै बैल गरियार, मरै वह अड़ियल टट्टू
मरै हठीली नार, मरै वह खसम निखट्टू
सेवक मरै सु तौन, जौन कछु समय न सुझै
स्वामी मरै सु कौन, जौन सेवा नहि बुझै
जिजमान सूम मरिजाय तो, कहा सुमिर दुख रोइये
कविगद्द कहै मरिजाय सो, जाहि सुने सुख सोइये

सवैया

पूत कपूत, कुलच्छनि नारि, लराक परोस, लजायन सारो
बन्धु कुबुद्धि, पुरोहित लम्पट, चाकर चोर, अतीथ धुतारो
साहिब सूम, अराक तुरंग, किसान कठोर, दिवान नकारो
ब्रह्म भनै सुन शाह अकब्बर बारहु बांध समुद्र में डारो

दुख से घबराना नहीं चाहिये

कष्ट परे हूं साधु जन, नेक न होत मलान
ज्यों ज्यों कंचन ताइये, त्यो त्यो निर्मल जान
अधिक दुखी लखि आप तैं, दीजै दुख बिसराय
धर्म सुवन बन दुख हर्यो, मुनि नल-विपति बताय

रहिमन निज मन की व्यथा, मनहीं राखो गोय
सुन इठलै है लोग सब, बांट न लै है कोय
यों रहीम दुख सुख सहत, बड़े लोग सहि सांति
उवत चन्द्र जिहि भांति सो, अथवत वाही भांति
दुख सहते है शांति से, यह मन जान प्रवीन
पत झर झारत पात जो, देत बसंत नवीन
दीरघ सांस न लेय दुख, सुख साईं मत भूल
दई दई कत करत है, दई दई सु कबूल
दियो सु सीस चढ़ाय ले, आछी भांति अहेर
जापै चाहत सुख लियो, ताके दुखहि न फेर



दुर्बचन से हानि

रूखे बचन मिलाप मे, कहत होत रस भंग
बीन बजत ज्यो तार के, टूटे रहत न रंग
अमृत ऐसे बचन मे, रहिमन रिस की गांस
जैसे मिसरी मे मिली, निरस बांस की फांस
बुरे बचन नहि बोलिये, यदपि होय हित हेत
जैसे चन्दन धूम तउ, आंखन को दुख देत
नीरस वक्ता जी सुनो, बैठ रहो गहि मौन
कन फोड़ा घड़ियाल की, ठनक सहैगा कौन

अति कठोर उपदेश सो, दुष्टाचार न जात
क्यों मुख स्वाद सुधार हित, देत नीम के पात
खीरा को मुँह काट कै, मलियत लौन लगाय
रहिमन कड़ये मुखन की, चहिये यही सज़ाय

दुष्ट निन्दा

ह्वै सहाय हित हू करै, तऊ दुष्ट दुख देत
जैसे पावक पवन को, होत जलन को हेत
हित हू भलो न नीच को, नाहिन भलो अहेत
चाट अपावन तन करै, काट श्वान दुख देत
सहज संतोष है साधु को, खल दुख देन प्रवीन
मछुवा मारत, जल बसत, कहा बिगारत मीन
कबहुं दुष्ट के बदन तै मधुर न निकसै बात
जैसे कड़वी बेल के, को मीठे फल खात
खल निज दोष न देखई, पर के दोषहि लागि
लखे न पग तर, सब लखे पर्वत बरती आगि
दया दुष्ट के चित्त मे, कबहूं उपजति नाहि
हिंसा छोड़े सिंह यह, क्यो आवै मन माहि
दुष्ट रहै जा ठौर पर, ताको करै बिगार
आगि जहां ही राखिये, जार करै तिहि छार
दुष्टन को हित के बचन, सुन उपजत है कोप
सांपहि दूध पियाइये, ज्यों केवल बिष ओप

आप न काहू काम के, डार पात फल फूल
औरन को रोकत फिरैं, रहिमन पेड़ बबूल
न ये बिससिये अति नये, दुर्जन दुसह सुभाव
आंटे पर प्रानन हनत, कांटे लों लग पाव
नीच हिये हुलसे रहे, गहे गेंद के पोत
ज्यों ज्यों माथे मारिये, त्यों त्यों ऊंचे होत
पर द्रोही पर दार रत, पर धन पर अपवाद
ते नर पामर पाप मय, देह धरे मनुजाद
सहज सरल रघुपति बचन, कुमति कुटिल कर जान
चलै जोंक जिमि वक्र गति, यद्यपि सलिल समान
दुर्जन दर्पण सम सदा, कर देखो हिय गौर
सन्मुख की गति और है, बिमुख भये की और
उदासीन अरि मीत हित, सुनत जरहि खल रीति
जानु पाणि युग जोर कर, विनती करं सप्रीत
काटे पै कदली फले, कोटि यतन कर सींच
बिनय न मान खगेश सुन, डांटहि पै नव नीच

चौपाई

पर हित हानि लाभ जिन केरे, उजरे हर्ष विषाद बसेरे
हरि हर यश राकेश राहु से, परा काज भट सहस्र बाहु से
जो पर दोष लखहि सह साखी, पर हित घृत जिनके मन माखी
तेज कृशानु रोष महि पेशा, अघ अवगुण धन धनिक धनेशा

परा काज लगि तनु परहरहीं,जिमि हिमि उपल कृशीदल गरहीं
उदय केतु सम हित सबही के, कुंभकर्ण सम सोवत नीके
मैं आपनि दिशि कीन्ह निहोरा,तिन निज ओर न लाउव भोरा
वायस पालैंअति अनुरागा,होय निरामिष कबहुं कि कागा
कवि कोविद गावहि अस नीती,खल से कलह न भल नहि प्रीती
उदासीन न्ति रहिये गुसाईं, खल परहरिये श्वान की नाईं
अधम जाति में विद्या पाये, भयो यथा अहि दूध पियाये
जिहिते नीच बड़ाई पावा, सो प्रथमहि हठ ताहि नशावा
बैर अकारण सब काहू सों, जो करि हित अनहित ताहू सों
स्वारथ रत परिवार विरोधी, लम्पट कामि लोभि अति क्रोधी
शण इव खल पर बंधन करहीं, खाल कढ़ाइ विपत सह मरहीं
पर सम्पदा बिनाश नशाहीं,जिमि कृषिहति हिमि उपल विनाही
खल बिन स्वारथ पर अपकारी, अहि मूपक सम सुन उरगारी
दुष्ट हृदय जग आरति हेतु, यथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतु

सरस काव्य रचना रचूं, खलजन सुनत हसंत
जैसे सिधुर देख मग, श्वान सुभाव भुसंत
नीच चंग सम जानिये, सुनि लखि तुलसीदास
ढील देत महि गिर परत, खैचत चढ़त अकास

घनाक्षरी

आपने बनाइवे को और के बिगारवे को,
सावधान है कैं सीखे द्रोह के हुनर है

भूल गये करुणानिधान श्याम मेरे जान,
जिन को बनायो यह विश्व को वितर है
ठाकुर कहत पगे सवै मोह माया मध्य,
जानत या जीवन को अजर अमर है
हाय ! इन लोगन को कौनसो उपाय,
जिन्हे लोक को न डर परलोक को न डर है
तज कर कामना जो करत पराये काम,
उत्तम पुरुष ताको कहिके बुलाइये
स्वार्थ परमार्थ जो दोनों ही को चाहत होय,
मध्यम नरों मे तासु गणना कराइये
अपनो ही भलाई जो चाहत हमेश नर,
राम कवि ताको नाम नीच ही गनाइये
विना ही प्रयोजन जो औरों के विगाड़ै काम,
सोच बड़ जी को ताको नाम क्या धराइये

दोहा

गुन तज अवगुन देखि है, दुर्जन दुसह सुभाय
ज्यों तज मधुरे फल शुतर, कीकर कंटक खाय
मो समान नहि जगत मे, ज़हर! करो मत मान
तुम से भी अति विषम है, दुर्जन दुसह ज़बान
उदधि रहत हर कंट बसि, भयो न इतना मान
काल कूट! जितना भयो, बस कर दुष्ट ज़बान

अगर दुष्टता जीव की, शिर तज अपयश लेइ
सन तन खाल कढ़ाइ कै, पर तन बन्धन देइ

चौपाई

पर घर बालक लाज न भीरा
बांझ कि जान प्रसव की पीरा

दोहा

सज्जन गुण लखि दहत है, दुर्जन हृदय नितांत
जिमि चोरन की आंख मे, खटकत रजनी कांत

घनाक्षरी

गंग के न गौरी के गिरीश के न गोविन्द के,
गोत के न जोत के न जाये राहगीर के
काहू के न संगी रति रंगी भैन भानजी के,
जी के अति खोटे सोटे खैहै जम वीर के
ग्वाल कवि कहै देखो नारि को ख़सम जानैं,
धर्म को पसम जानैं पातक शरीर के
नमक हराम बद काम करै ताजे ताजे,
बाजे बाजे बेसहूर गुरु के न पीर के

दुष्टपर उपकार अपकार और अपकार उपकार है

नीचोंसे उपकारका फल उपजे अपकार
दूध पिलाये सर्प को, उगले विष फुंकार
खल दुष्टोंके दाहसे, सरे लोक हित काम
वृश्चिक भस्म कुघावको, तुरत करे आराम

दुष्टोंसे सब डरते हैं

बाँके नरतै होत है, बन्दनीक सब लोय
नमत दुतीया चन्दकौ, पूरन चन्द न कोय
बसै बुराई जासु तन, ताही को सन्मान
भले भले कहि छांड़िये, खोटे ग्रह जप दान

चौपाई

टेढ़ जान शंका सबकाहू, बक्र चन्द्रमहि ग्रसैन राहू।

दृढ़ता महिमा

जो न होय दृढ़ चित्तको, तहां न रहै सटेक
ज्यों काचे घटमे सलिल, नहि ठहरत छिन एक

देह दशा

जैसी परे सो सह सके, कहि रहीम यह देह
धरती ही पर परत सब, शीत घाम अरु मेह

द्यूत निन्दा

जूआ खेले होत है, सुख सम्पति को नास
राज काज नलसे छुट्यो, पाण्डव किय बनवास
रहिमन नही सराहिये, लैन दैन की प्रीति
प्रानन बाजी लागही, हार होय कै जीत

कुंडलिया

जड़ है जुआ कुकर्मकी, दुराचार का यार
इसमे हारे हार है, जीते भी है हार
जीते भी है हार, जुआ अपमान करावे
धीर धाम धन धान्य, धरणि धी धर्म नशावे
चोरी जारी खून, तीन तापों की जड़ है
जुआ नाशका मूल, जुआ पापोंकी जड़ है

धन महिमा

गुण प्रगटे अवगुण दुरै, जाके कमला साथ
तियमारी परिहरी तउ, कृष्ण त्रिलोकी नाथ
जो रहीम बिधि बड़ किये, कोतिहि दूषण काढ़ि
चन्द्र दूबरो कूबरो, तउ नखनतै बाढ़ि
धन, धन, धन, है आपको, नमस्कार बहुबार
गुणि जनसे अगुणीन को, कर वावत सत्कार

नम्रता

जो हो मनमे नम्रता, कष्ट न सहे शरीर
तोड़ सकत नहि मूलते, कोमल तृणहि समीर
नरकी अरु नल नीरकी, एकै गति करि जोय
जेतो नीचो ह्वै चलै, तेतो ऊंचौ होय

नियम गुण

नृप अनीति के दोष तै, चूकै मन्त्र प्रयोग
करै कुपथता पुरुष को, क्यों नहिं उपजै रोग
होय सो होय हिसाब सो, बिन हिसाब नहि होय
भखै बदनतैं अन्न मन, नही नाफतै कोय
नारायण सब संयमी, जिये सदा सुख भोग
उचिताहार बिहार सों, नहीं सतावत रोग
ठीक नियमसे काम कर, कबहुं न पड़े झमेल
गहे सुगमता सरलता, ज्यों लाइनपर रेल

निर्धनकी निर्द्वन्दता

जगमे सम्पति हीन को, संकट नेकहु नाहि
ज्यों सुर तरु निर्द्वन्द है, पतझड़ ऋतुके माहिं

नीचको उच्चपद शोभा नहीं देता

बड़े न लोपैं लाज कुल, लोपैं नीच अघोर
उदधि रहै मरजाद पर, वहै उलट नद नीर

होत अधिक गुन निबल पै उपजन वैर निदान
मृग मृगमद चमरी चमर,लेत दुष्ट हनिप्रान

जो रहीम ओछो बढ़ै, तौ अति ही इतराय
प्यादे से फरज़ी भयो, टेढ़ो टेढ़ो जाय

नेत्र मनकी बात जानते हैं

नयना देत बताय सब, हिय कौ हेत अहेत
जैसे निर्मल आरसी, भली बुरी कहि देत

रहिमन अँसुवा नयन ढरि, जिय दुख प्रगट करेइ
जाहि निकारो गेहते, कस्न भेद कहि देइ

रहिमन मन महाराजके, द्दग सों नहीं दिवान
जाहि देख रीझै नयन, मन तिहि हाथ बिकान

कहत नटत रीझत खिझत, मिलत खिलत लगजात
भरे भौनमे करत हैं, नैनन ही सब बात

कोटि जतन कीजै तऊ, नागरि नेह दुरैन
कहेदेत चित चीकनो, नई रुखाई नैन

कहि रहीम इक दीपतैं, प्रगट सबै दुति होय
तनु सनेह कैसे दुरै, द्दग दीपक जरु दोय

रूप नगर बसि मदन नृप, द्दग जासूस लगाय
नेहिन मनको भेद उन, लीनो तुरत मंगाय

अपनों से को करत है, कहु दुराव जग माहि
हेत अहेत भली बुरी, नैना नैन बताहि

प्रेम नगर मे दृग बया, नोखे प्रगटे आय
दो मन को करि एक मन, भाव देत ठहराय
नैन कहत नैनहि सुनत, नैन करत निरधार
नैनन ही से चलत है, सब जगको व्यवहार
मनकी बदी विचार करि, लखि अन रीती बात
परके नैन निहार करि, सकुचि नैन नय जात
मै तो सों कौवा कह्यो, तू जनि इन्है पत्याय
लगा लगी करि लोनयन, उरमे लाई लाय
झूठे जान न संग्रहे, मन मुख निकसै बैन
याही ते मानहु किये, बातनको बिधि नैन
सारी डारी नीलकी, ओट अचूक चुकैन
मो मनमृगकर वर गहे, अहे अहेरी नैन

न्यायी राजाकी प्रजा सुखी रहती है

राजाके बल लोक सब, फिरैं घिरै सब ओर
ज्यों बनमे छूटे चरैं, बाधे हयके जोर
नृप प्रताप ते देश मे रहे दुष्ट नहि कोय
प्रगटे तेज दिनेशको, तहां तिमिर नहि होय
नीति निपुण राजानि कों, अजगुत नहीं सुहाय
करत तपस्या शूद्र को, ज्यों मार्‌यो रघुराय
रहै प्रजा घन यतन सों, जहं बांकी तरवार
सो फल कोउ न लै सकै, जहां कटीली डार

रहिमन राज सराहिये, शशि सम शीतल होय
कहा बापुरो भानु है, तप्यो तरैयन खोय

पछतातें हैं

छप्यय

सठन सनेह जु करै, मान बचहै सुलब्धहैं
पिय वियोग सुखचहै साँकरै तजै स्वामि कहैं
मनि बन्धहि पर रमनि, खेल दुर्जन संग खेलहिं
नृपति मित्रकर गनहि, सर्प मुख उंगलि मेलहि
चुक्क हित समै नरहरि निरख, जड़ आगे विस्तरहि गुन
पछिताहि सुते नर भगति बिन, दौलत दलपत खान सुन

पर घर बास निन्दा

पर घर कबहुं न जाइये, गये घटत है जोत
रवि मंडलमें जात शशि, क्षीण कला छवि होत
ठौर छुटे ते मीतहू, ह्वै अमीत सतरात
रविजल उखरे कमल को, जारत गारत जात
को न जाय पर गेह मे, होत प्रतिष्ठा हीन
पैठ भानुके भवनमे, भयो मयंक मलीन
कौन बड़ाई जलदि मिल, गंग नाम भौ धीम
किहि की प्रभुता नहिं घटी, पर घर गये रहीम

माह मास लहि टेसुआ, मीन परे थल और
त्यों रहीम जग जानिये, छुटे आपने ठौर
को न छुटे निज ठौरके, हीन प्रतिष्ठा होय
निकस दांत मुखसे भयो हाड़ अपावन सोय
पर घर जा कहि राम कवि, को न करे घट काम
पांडव सुत सेवक भये, बसि बिराटके धाम

पद भ्रष्ट निन्दा

ताकी सम्मति को सुने, जो पद भ्रष्ट प्रधान
अन चालू सिक्का कहां, पावत है सम्मान

पराधीन निन्दा स्वाधीन प्रशंसा

जो प्रानी पर वश पर्यो, सो दुख सहत अपार
जूथ बिछोही गज सहै, बन्धन अंकुश मार
मन प्रसन्न तन चैन जँह, स्वेच्छा चार बिहार
संग मृगी मृग सुख सबै, बन बसि तृन आहार
पराधीनता दुख महा, सुख जग मे स्वाधीन
सुखी रमत शुक बन विषे, कनक पींजरे दीन
पराधीन नहि कीजिये, काहू को भगवान
जो कीजै मत दीजिये, ताको कविता ज्ञान

चौपाई

कत विधि सिरजि नारि जग माहीं
पराधीन सुपने सुख नाहीं

प्रकृति मिलने से मन मिलता है

प्रकृति मिले मन मिलत है, अन मिल तैं न मिलाय
दूध दही ते जमत है, कांजी ते फट जाय
एक बस्तु गुन होत है, भिन्न प्रकृति के भाय
भँटा एक को पित्त कर, करत एक को वाय
वांके सीधे को मिलत, निबहै नहीं निदान
गुन ग्राही तौऊ तजत, जैसे बान कमान
पंडित पंडित को मिलत, संशय मिटत न बेर
मिलै दीप दुहुं दुहुन को, होत अंधेर निवेर
सुजन सुजन के दरस ते, पावत जिय संतोष
लहत कच्छ के वत्स ज्यों, सोम दृष्टि तैं पोष
कहु रहीम कैसे निभै, वेर केर को संग
वे डोलत रस आपने, उनके फारत अंग
धीरज रहे न धीर को, हो यदि मेल कुमेल
पानी दीपक मे पड़े, चिड़ चिड़ात है तेल
भेद भरे नेतान सो, होत न देश सुधार
कबहुं न निकले मधुर सुर, जो नहि मिले सितार
सरल सरल सों होय हित, नाहि सरल अरु वंक
ज्यों सर सूधहि कुटिल धनु, डारै दूर निसंक
सूरको सूर गुणीको गुणी लबराके ढिगै लबरा सुख पावे
लम्पटको नित लम्पट भावत पंडितके मन पंडित भावे

पाप परिणाम

वृद्धि न ह्वै है पाप तैं, वृद्धि धर्म तै धार
सुन्यो न देख्यो सिंह के, मृग को सो परिवार

पंडित के सामने मूर्ख का आदर नहीं होता

मूढ़ तहां ही मानिये, जहां न पण्डित होय
दीपक की रवि के उदय, बात न पूछे कोय
चतुर सभा मे कूर नर, सोभा पावत नांहि
जैसे बक सोहत नहीं, हंस मंडली मांहि
जहां चतुर नाहिन तहां, मूढ़न सों व्यवहार
बर पीपर बिन हो रहे, ज्यों अरंड अधिकार
उत्तम को अपमान अरु, जहां नीच को मान
कहा भयो जा हंस की, निन्दा काग बखान
तेजस्वी के सामने, बने दुष्ट जन मूक
जब तक भासत भासकर, बोलत नहीं उलूक
पंडित जन के सामने, मूढ़ न ठहरन पाहि
सुनत शेर रव स्यार दल, अनत तुरत चल जाहि
जंह गुणि जन तंह मूढ़ नर, काहू को न सुहात
कनक सामने कांच की, कोउ न पूछत बात

पात्र भेदसे गुण भेद

पलट जात हैं वस्तु के, गुण भाजन अनुसार
सुधा भयो बिष राहु को, गरल शंभु शृंगार

पात्रता

करत न कबहुं कुपात्र को, सदुपदेश कल्यान
सुनने में आया नहीं, जोंक लगी पाषान
करत न चंचल चित सदा, सदुपदेश को मान
सुमन माल कपि कंठ मे, छिन भर की महमान
दान दीन को दीजिये, मिटे दरदि की पीर
औषधि ताको चाहिये, जाके रोग शरीर
जो ग़रीब सों हित करैं, धन रहीम वे लोग
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई योग
दीन सबन को लखत है, दीनहि लखै न कोय
जो रहीम दीनहि लखै, दीन बन्धु सम होय
बहत नदी नद जल उदधि, कौन बड़ाई ताय
धन बादर जल होत जो, फल फूलन सुखदाय
स्वारथ रत संसार नर, देत लेत करि भेय
दीन हीन को कौन जग, दीनबन्धु विन देय
अधिकारी को दीजिये, मिटै दरद दुख तेय
सुता अघानी त्यागि करि, भूखी बहु को देय

कामीको कामी विलोक सुखी अरु ज्वारीको ज्वारीमिले हरषावे
ताकोहै जैसा सुभाव सदा तिहिके अनुसारहि आनन्द आवे.

प्रतिष्ठाकी रक्षा करो

फिर जोड़े जुड़ती नहीं, भई प्रतिष्टा भंग
फटे दूधके छीछड़े, बने न पय के अंग
जाय भलेही माल धन, इज्ज़त लेहु बचाय
बहुर हाथ नहि आवही, जो कपूर उड़ जाय
सम्पति भरम गंवाय कै, हाथ रहत कछु नाहि
ज्यों रहीम शशि रहत है, दिवस अकासहि माहि
रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून
पानी गये न ऊबरै, मोती मानस चून

सोरठा

रहिमन मोहि न सुहाय, अमी पियावत मान बिन
जो बिष देय बुलाय, प्रेम सहित मरिवो भलो.

कुंडलिया

पानी बाढ़ो नावमें, घर मे बाढ़ो दाम
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम
यही सयानो काम, रामको सुमिरन कीजै
पर स्वारथ के हेत, सीस आगे धर दीजै
कहि गिरधर कविराय, बड़न की याही बानी
चलिये चाल सुचाल, राखिये अपनो पानी

प्रेम प्रचार

प्रेम निबाहन कठिन है, समुझ कीजिये कोय
भांग भखन है सुगम पै, लहर कठिन ही होय
जैसो बन्धन प्रेमको तैसो बन्ध न और
काठहि बेधै, कमल को, छेद न निकरै भौर
नवल नेह आनन्द उमंग, दुरै न मुख चख ओर
तैसो जान्यो जात है, ज्यों सुगंधको चोर
प्रेम छकै मनको हटक, रख न सकै कुल लाज
कमल नालके तन्तु सों, को बाँधे गजराज
बात प्रेमकी राखिये, अपने ही मन माहि
जैसे छाया कूप की, बाहर निकसै नाहि
प्रेम पगन जासों भई, सुख दुख ताके संग
बसत कमल अलि बास वश, सकमल भखत मतंग
होत चाह कब होत है, प्रेम सु सज्जन संग
पास दिये विन पास पर, चढ़े न गहरो रंग
प्रेम नेम के पन्थको, है कछु अद्भुत रूप
पिय हिय लागै लगत ज्यों शरद जौन्ह सी धूप
कबहूं प्रीति न जोरिये, जोर तोरिये नाहि
ज्यों तोरे जोरे बहुर, गांठ परे गुण माहि
अन्तर तनक न राखिये, जहां प्रीति व्यवहार
उर सों उर लागै न तहं, जहां रहत है हार

अगम पन्थ है प्रेमका, जहं ठकुराई नाहिं
गोपिनके पीछे फिरे, त्रिभुवन पति बन माहि
ज्यों ज्यों छुटे अयान पन, त्यों त्यों प्रेम प्रकास
जैसे कैरी आमकी, पकरत पकै मिठास
रहिमन रिस सहि तजत नहि, बड़े प्रीतिकी पौर
मुकन मारत आवई, नींद विचारी दौर
रहिमन मन महराजके, द्दग सों नहीं दिवान
जाय देख रीझे नयन, मन तिहि हाथ विकान
गिरतैं ऊंचे रसिक मन, बूड़े जहां हज़ार
बहै सदा पशु नरनको, प्रेम पयोधि पगार
अद्भुत गति है प्रेमकी, बैनन कही न जाय
दरस भूख लागे द्दगन, भूखहि देत भगाय
अद्भुत गति है प्रेमकी, लखो सनेही आय
जुरै कहूं टूटे कहूं, कहूं गांठ पड़जाय
देखो करनी कमल की, जलसों कीनो हेत
प्राण तज्यो प्रेम न तज्यो, सूख्यो सरहि समेत
भौंरा भोगी बन भ्रमै, मोद न माने ताप
सब कुसमन मिल रस करै, कमल बँधावे आप
सुन परमित प्रिय प्रेमकी, चातक चितवत पारि
बन आशा सब दुख सहै, अन्त न याचै वारि

दीपक पीर न जानई, पावक परत पतंग
तनु तो तिहि ज्वाला जर्‌यो, चित न भयो रस भंग
प्रीत परेवाकी गनो, चाहत चढ़न अकास
तंह चढ़तीय जु देखिये, परत छांड उर स्वांस
सुमिर सनेह कुरंग को, पवन न राच्यो राग
धर न सकत पग पछमनो, सर सन्मुख उर लाग
सब रस को रस प्रेम है, विषई खेलै सार
तन मन धन योबन खिसै, तऊ न माने हार

सोरठा

जल पय सरस विकाय, देख प्रीति की रीति भल
विलग होय रस जाय, कपट खटाई परत ही

चौपाई

जलद जन्म भरि सुरत बिसारे,याचत जल पवि पाहन डा
चातक रटनि घट घटि जाई, बढ़ै प्रेम सब भांति भला
कनक हि वान चढ़े ।जमि दाहे, तिमि प्रीतम पर प्रीति निबा
जग यश भाजन चातक मीना, नेम प्रेम निज निपुण नवीन
मीन पतंगहि गुरु करे, जो चाहत किय नेह
त्यागन संगम होत हीं, परहर अपनी देह

घनाक्षरी

कै तो प्रेम पन्थ ढिग पद न टिकावे कोऊ
जो पै पांव डारै फिर हारे औ निहारै ना

'राम' कवि काहू विधि काहू को न दीजे बैन
मुख से निकारै जो पै ताहि इनकारै ना
कै तो काहू कार्य्य को न कीजिये आरंभ कभौं,
आदि कर दीजे जो पै अंत बिन छारै ना
कोई कछु भाषै मन राखै अभिलाखै जोइ
कीजे प्रणपास बकवास को विचारै ना
पारस सराहिये क्यों जहां द्वैत भाव रहे,
लोह स्वर्ण कै ही निज तुल्यता दुराय है
स्वर्ण गिरि क्योंकर सराहिबे के योग्य कहो,
'राम' कवि जहां तरु तरु हो रहाय है
सत्य ही सराहिबे के योग्य दूध प्रीत जान,
जल अपनाय निज भाव से बिकाय है
अथवा है मलैगिरि शोभा मूल जग मांहि,
जहांहु को तरु तरु चन्दन ह्वै जाय है
यदपि किसान नर आगम मनावत है,
स्वागत करत भेक विविध विधान सों
ऊंचे स्वर मोर गुण गावत हैं चाव कर,
झूम झूम झींगुर सु नाचैं बहु तान सों
बांध के समाज सज साज अति मोद मान,
उड़ कर जात पास बकुले सन्मान सों

'राम' है वलाहक के चाहक अनेक पर,
चातक सी चाहना न होगी किसी आन सों

पद

प्रीति तौ मरनऊ न विचारै

प्रीति पतंग जोति पावक ज्यों, जरत न आप सँभारै
प्रीति कुरंग नाद स्वर मोहित, बधिक निकट ह्वै मारै
प्रीति परेवा उड़त गगन तैं, गिरत न आप सँभारै
सावन मास पपीहा बोलत, पिउ पिउ करि जो पुकारै
'सूरदास' प्रभु दरशन कारन, ऐसी भाँति उचारै

घनाक्षरी

चाहिये ज़रूर इनसानियत मानस को,
नौबत बजे पै फेर भेरि बजनो कहा
जाति औ अजाति कहा हिन्दू औ मुसलमान,
जाते कियो नेह फेर ताते भजनो कहा
'ग्वाल' कवि जाके लिये सीस पै बुराई लई,
लाजहू गमाई कहो फेर लजनो कहा
यातो रंग काहू के न रँगिये सुजन प्यारे,
रँगे तो रंगेई रहे फेर तजनो कहा

सवैया

एकहि सों चित चाहिये अन्तलों बीच दग़ा को परै नहिं टांको
मानिक सों चित वेच कै जू अब फेर कहां परखावनो तांको

'ठाकुर' काम नहीं सब कोइक लाखन मे परवीन है जांको
प्रीति कहा करिबे मे लगै करि के फिर ओड़ निवाहनो बांको

घनाक्षरी

गहिबो आकाश पुनि लैबो अथाह थाह,
अति विकराल काल व्यालहि खिलाइबो
शेल शमशेर धार साहिबो प्रहार बान,
गज मृगराज लै हथेरिन लराइबो
गिरि ते गिरन पथ आगि मे जरन और
काशी करवत तन बर्फ लों गराइबो
पीवो बिष विषम 'क़बूल' कवि नागरजू,
कठिन कठोर एक नेह को निवाहिबो

सवैया

अति खीन मृनाल के तारहु ते
तिहि ऊपर पांव दे आवनो है
सुइ बेह ते द्वार सकी न तहां
परतीति को टांको लगावनो है
कवि 'बोधा' अनी घनी नेजहु ते
चढ़ि तापै न चित्त डरावनो है
यह प्रेम को पन्थ कराल महा
तरवार की धार पै धावनो है

लोक की लाज औ शोक प्रलोक को
वारिये प्रीति के ऊपर दोऊ
गांव को गेह को देह को नातो
सनेह मे हां तो करै पुनि सोऊ
'बोधा' सुनीति निबाह करै
धर ऊपर जाके नहीं सिर होऊ
लोक की भीत डरात जो मीत
तो प्रीति के पैंडे परे जिन कोऊ

दोहा

चित्त दै भजै चकोर ज्यों, तीजे भजै न भूख
चिनगी चुगै अँगार की, पियै कि चन्द मयूख

फूट निन्दा

अरि के संग कुटम्बि लखि, जिय उपजत है त्रास
बैंटा लगै कुठार को, तब बन राय विनास
अपनों ही के द्रोह ते, कटते है सब कोय
लोहा कटे न काहु ते, जो छैनी नहि होय
तहां नहीं है भय जहां, अपनी जाति न पास
काठ बिना न कुठार कँहु, तरु को करत विनास



घनाक्षरी

फूट गए हीरा की बिकानी कनी हाट हाट.
काहू घाट मोल काहू बाढ़ मोल को लयो
टूट गई लंका फूट मिली है विभीषण को.
रावण समेत बंस आसमान को गयो
कहै कवि 'गंग' दुरयोधन से छत्र धारी,
तनक मे फूट ते गुमान वाको नै गयो
फूटे ते नरद उठ जात वाजी चौसर की,
आपस के फूटे कहो कौन को भलो भयो
दूध फट जावे घट जावे है अपार रस,
अंग कट जावे तन लहत हरास है
रतन अमोल के फटे तैं घट जावे द्यु ति,
दन्त के कटे तैं फील फीको अति भास है
नरद फटे तै बाजी हर जात चौसर की,
मेघों के फटे ते होत जल की न आस है
'राम' कवि भाषैं सिख कान दै विचारो,
मीत। आपस के फूटे ते भलाई को विनास है
फूटहि ने लंका को विनाश कियो राम कर,
फूटहि ने भारत मे मारे मरदाने हैं
फूट ने चौहान को फँसायो फंद वैरियों के,
फूटहि ने भाई हाथ भाई मरवाने हैं

'राम' कवि फूट फटकार के है योग्य सदा,
फूट फल खाये सुख पाये कहो काने है
फूटे भाग्य वाले रो रे फूट बोन वाले,
नेक कहिये विचार जो सताने नहि ताने है



कुण्डलिया

साईं ये न विरोधिये, छोट बड़े सब भाय
ऐसे भारी बृक्ष को, कुल्हरी देत गिराय
कुल्हरी देत गिराय, मार के ज़मी गिराई
टूक टूक कै काट, समुद मे देत बहाई
कहि 'गिरधर' कविराय,फूट जिहि के घर आई
हरिनाकस्यप कंस, गये बलि रावण साईं
साईं बेटा बाप से, बिगरे भयो अकाज
हरनाकस्यप कंस को, गयो दुहुन को राज
गयो दुहुन को राज, बाप बेटा मे बिगरी
दुशमन दावागीर, हँसे महि मण्डल नगरी
कहि 'गिरधर' कविराय, युगन याही चल आई
पिता पुत्र के बैर, नफा कहु कौने साईं
साईं अपने भ्रात को, कवौं न दीजे त्रास
पलक दूर नहि कीजिये, सदा राखिये पास

पदा राखिये पास, त्रास कबहूं नहि दीजे
त्रास दियो लंकेश, ताहि की गति सुनि लीजे
कहि 'गिरधर' कविराय, राम से मिलयो जाई
पाय विभीषण राज, लकपति बाज्यो साईं

पद

जगत मे घर की फूट बुरी
घर की फूटहि सो बिनशाई सुवरण लंक पुरी
फूटहि सों सब कौरव नाशे भारत युद्ध भयो
जाको घाटो या भारत मे अबलों नाहि पुज्यो
फूटहि सों जयचन्द बुलायो यवनन भारत धाम
जाको फल अबलों भोगत सब आरज होय गुलाम
फूटहि सो नवनन्द विनाशे गयो मगधको राज
चन्द्रगुप्तको नाशन चाह्यो आप नशे सहसाज
जो जगमे धन मान और बल आपन राखन होय
तो अपने घर मे भूलेहू फूट करो जनि कोय

सवैया

...षण ने कर बन्धु विरोध लखो निज सम्पति जान गँवाई
...लि ने व्यर्थ सुकंठ को कष्ट दे खोई स्वजीवन राज बड़ाई
...त से भी न कभी करिये निज भाइयों से इस हेतु लड़ाई
...म है आते विपत्तिके काल मे गांठका कंचन पीठका भाई

बड़े बड़ाईकी रक्षा करते हैं

बड़े जिती लघुता करै, तिती बड़ाई पाय
काम करै सब जगतके ताते त्रिभुवनराय
छिमा बड़नको होत है, छोटनको उत्पात
का रहीम हरिको घट्यो, जो भृगु मारी लात

पद

सतवादी हरिश्चचन्द्र से राजा, नीच घर नीर भरे
पांच पांडु और कुन्ती द्रोपदि, हाड़ हिमालय गरे
यज्ञ किया बलि लेन इन्द्रासन, सो पाताल धरे
मीरां को प्रभु गिरिधर नागर, विषसे अमृत करे

बड़ोंकी बात मानी जातीहै

जो भाषैं सोई सही , बड़े पुरुष मुख आन
है अनंग ताको कहैं, महा रूपकी खान
अशुभ करत जो होत शुभ, सज्जन वचन अनूप
श्रवण पिता दिय दशरथहिं, शाप भयो बर रूप
यही बात सब ही कही, राजा करै सो न्याव
ज्यों चौपरके खेलमे पास पड़ै सो दाव
बड़े अनीति करैं तऊ , बुरो कहै नहि कोय
बालि हत्यो अपराध बिन, ताहि भजैं सब लोय
हार बड़ेकी जीत है, निबल न मानैं तास
विमुख होय हरि ज्यों कियो, कालयवनको नास

बड़े जु चाहै सो करैं, कर न मतो उर धारि
हरि गिरि तारे जलधि पर, करी सिलातै नारि
द्वै ही गति हैं बड़न की, कुसम मालती भाय
कै सब के सिर पर रहैं कै बन माहि विलास
हित अनहित गुरुजन वचन, लोपत कबहुं न धीर
राज काज को छोड़ कै, चले विपन रघुवीर
कहै यहै श्रुति समृती हुं, सवै सयाने लोग
तीन दबावत निकट ही, राजा पातक रोग

बड़ोंके दोषको कोई नहीं कहता

को कहि सकै बड़ेन सों, लखी बड़ी ये भूल
दीने दई गुलाब की, इन डारन ये फूल

चौपाई

जो अहि-सेज शयन हरि कर ही,
बुध कछु तिन कहुं दोष न धर हीं।
भानु कृशानु सर्व रस खाहीं,
तिन कहँ मन्द कहत कोउ नाहीं।
शुभ अरु अशुभ सलिल सब बहही,
सुर सरि कोउ न अपावन कहहीं।
समरथ कहँ नहि दोष गुसाईं,
रवि पावक सुरसरि की नाईं।

बड़ोंके पास सबकी गुज़र होती है

भले बुरे छोटे बड़े, रहे बड़न पै आय
मकर असुर सुरगिरि अनल, दधिमधि सकलबसाय
गहिये ओट बड़ेन की, जहां मिटै दुख दन्द
उदधि सरन मैनाक को, कछु कर सक्यो न इन्द
भले बुरे निबहै सबै, महत पुरुष के संग
चन्द सर्पजल अगनि विष, बसत शंभुके अंग
नीति अनीति बड़े सहैं, रिस भरि देत न गारि
भृगु उरदीनी लात की, कीनी हरि मनु हारि

कुण्डलिया

रहिये लट पट काट दिन, वरु घामें मां सोय
छाँह न वाकी बैठिये, जो तरु पतरो होय
जो तरु पतरो होय, एक दिन धोखा दै है
जादिन बहै बयारि, टूट तब जड़से जै है
कहि गिरधर कविराय, छाँह मोटे की गहिये
पत्ते सब झड़जाँय, तऊ छायामे रहिये

बनते देर लगतीहै बिगड़ते शीघ्र हैं

सुधरी बिगरै बेगही, बिगरी फिर सुधरैन
दूध फटै कांजी परे, सो फिर दूध बनैन
भली करत लागत बिलम, बिलम न बुरे विचार
भवन बनावत दिन लगैं, ढाहत लगत न वार

बिगरन वारी वस्तु कौं, कहो सुधारै कौन
डारे पय औटायकैं, मिसरी मोरे नौन
बिगरी बात बनै नहीं, लाख करो किन कोय
रहिमन बिगरे दूध के, मथे न माखन होय
जिहि जोड़त तुमको लगी, बहुत देर हे राम !
टूट गई इक बचन तै अब वह प्रीति तमाम

बलवान महिमा

जोरावर की होतहै , सबके सिर पर राह
हरि रुकमणि हरि लै गयो, देखत रहे सिपाह
सिहनको अभिषेक कब, कीन्हो विप्र समाज
निज भुज बलके तेज तै, भये मृगनके राज
वह छुद्रनके मिलन ते हानि बली की नाहि
जूथ जँबूकनते नहीं, केहरि कहुं नसि जाहि

बातोंसे भले बुरेकी पहचान

भले बुरे सब एकसे, जब तक बोलत नाहि
जान पड़त है काक पिक, ऋतु बसंत के माहि
मधुर वचन से जात मिट, उत्तम जन अभिमान
तनिक शीत जलसे मिटै, जैसे दूध उफान
बात कहन की रीतिमे, है अन्तर अधिकाय
एक बचन से रिस बढ़ै, एक बचन ते जाय

कहै रसीली बात तो, बिगड़ी लेत सुधार
सरस लौनकी दालमें, ज्यों नीबू रस डार
कर बिगड़ी सुधरै बचहि, जैसे बनिक विशेष
हींग मिरच ज़ीरो कहै, 'हग' 'मर' 'जर' लिखलेष
समझै अन समझै कछुक, कहिये मीठी बात
बालक के सुन सुन बचन, जैसे श्रवण सुहात
भले भले ही कहत है, पैन कहत है दोष
सूरदास कहि अन्ध को, उपजावत है तोष
भले बुरे को जानिये, जान वचनके बन्ध
कहै अन्धको सूर इक, कहै अंधको अंध
पाय प्रकृति वश कीजिये, करि बुधि बचन विवेक
लष्ट पुष्ट सों एक को, यष्ट मुष्ट सों एक
करिये सभा सुहावतो, मुख तै बचन प्रकाश
बिन समझै ससपालको, बचनन भयो विनाश
परुष बचन तै रोप हित, कोमल बचन समाज
रजक पछार्‌यो कूबरी, राख लई ब्रज राज
हंसन के ढिग बैठ करि, लीजे मौन सहाय
बक,बक, बक मत कीजिये, जाती जानी जाय

बिपत कालमें कोई साथ नहीं देता

यदपि आपनो होय तऊ, दुखमे करत न पीर
ज्यो दुखती अँगुरी निकट, दूसरि ताहि न पीर

दुरदिन परे रहीम कहि भूलत सब पहिचान
सोच नहीं बित हानिको, जो न होय हित हानि
निकट न लागत मीत हितु, बिपत कालके माहि
होत अंधेरो तजत है, संगति अपनी छाहिं

सवैया

वारिध तातहुसे बिधिसे सुत सोम सुधा सु सहोदर दोऊ
रंभा रमा तिसकी भगिनी मधुवा मधु सूदनसे बहिनोऊ
तुच्छ तुषार इतौ परिवार भयो सरमध्य सहाय न कोऊ
सूख सरोज रह्यो जल हीन नहीं दुखमे किहिकोकोउ होऊ

बुरे लगते हैं

सम्पति बीते विलसवो, सुखको चाहै कोय
रूख उरकरे फूल फल, कैधौ कैसे होय
पिछलेपन का रति कथा, जल सूखे कासार
ज्ञान भये संसार सुख, वित्त गये परिवार
दुर्जन संगति जगत रति, पर दुख दायक बात
मान विना धन कोटिहू, सज्जनको न सुहात

भक्तका उपालंभ

थोरेई गुण रीझते, बिसराई वह बानि
तुम हू कान्ह मनो भये, आज कालके दानि
कबको टेरत दीन रत, होत न श्याम सहाय
तुम हू लागी जगत गुरु, जगनायक जगवाय

ज्यों ह्वै हूं त्यों होहुंगो, हों हरि अपनी चाल
हठ न करो अति कठिन है, मो तरिबो गोपाल

भक्ति उपदेश

जप माला छापा तिलक, सरै न एको काम
मन काचे नाचे वृथा, सांचे राचे राम
तौ लग या मन सदनमें, हरि आवे किहि बाट
निपट विकट जब लौं जुटै, खुलै न कपट कपाट
अपने अपने मत लगे, बादि मचावत शोर
ज्यों त्यों सेवो सबहि को, एकै नन्द किशोर

सोरठा

मैं समझो निरधार, यह जग काचो कांच सो
एकै रूप अपार, प्रतिबिम्बित लखिये जहां

भक्ति महिमा

जो नारायण भक्त है, नारायण मतिमन्द
तो सरसैं सौ भांति सों, गुण धर दोहा छन्द
रहिमन मनहि लगाय कै, देख लेहु किन कोय
नरको वश करिबो कहा, नारायण वश होय
जिहि रहीम चित आपनो, कीनो चतुर चकोर
निशिवासर लागो रहै, कृष्ण चन्द्र की ओर
संतत सम्पति जान कै, सबको सब कुछ देइ
दीन बन्धु बिन दीन की, को रहीम सुधिलेइ

समय दशा कुल देख कै, लोग करत सन्मान
रहिमन दीन अनाथ को, तुम बिन को भगवान
धूर धरत नित सीसपर, कहु रहीम किहि काज
जिहि रज मुनि-पत्नी तरी, सो ढूंढत गज राज
इहि शरनागत राम की, भवसागरकी नाव
रहिमन जगत उधार कर, और न कछू उपाव
जिहि रहिमन तन मन दियो, कियो हिये बिच भौन
तासों दुख सुख कहनकी, रही बात अब कौन

घनाक्षरी

पासनि सों बांध कै अगाध जल बोर राखे,
तीर तरवारन सों मारि मारि हारे है।
गिरि तै गिरायदिये डरपे न नेक तब,
भूधर ते मतवारे हाथी तर डारे है।
फेरे सिर आरा लै अगिनि मांझ जोर पुनि,
पूंछ मींड शातन लगाये नाग कारे हैं।
पूंछे ते बतायो खंभ तहंई दिखायो रूप,
प्रगट अनूपदास वानि हीं से प्यारे है।

दोहा

कोऊ कोटिक संग्रहो, कोऊ लाख हज़ार
मो सम्पति यदुपति सदा, बिपति बिदारन हार
या अनुरागी चित्तकी, गति समझै नहि कोय
ज्यों ज्यों बूड़ै श्याम रंग, त्यों त्यों उज्वल होय

जो अनेक अवगुण भरी, चाहै याहि बलाय
मो पति सम्पति हू बिना, यदुपति राखै जाय

भय स्थानसे बचो

जिहि दिशि भय तिहि दिशि कबहुं, ना जै यं करि चोज
गज तिहि मग पग ना धरे, जहां सिंह को खोज
दुर्दिन परे रहीम कहि, दुरथल जैयत भाग
ठाढ़े हूजत घर पर, जब घर लागत आग

भले बुरे दिनोंका अन्तर

दिवस भले बिगरै न कछु, रहो निचीते सोय
आवे चोरी करन को, चोर आंधरो होय
प्रापतिके दिन होय है प्रापति बारम्बार
लाभ होत व्योपार में, आमंत्रण अधिकार
अप्रापति के दिनन में, खर्च होत अविचार
घर आवत हैं पाहुने, बनज न लाभ लगार
भली किये ह्वै है बुरी, देखो विधि विप्रीति
भक्ति करी द्विज जमदिगनि, अर्जुन करी अनीति
रहिमन चुप ह्वै बैठिये, देख दिनन को फेर
जब नीके दिन आयहैं, बनत न लग है देर

सबैया

बन्धु विरोध करे सिगरो झगरो नित होत सुधारस चाटत
मित्र करै करनी रिपुकी धरनी धर देखन न्याउ निपातट

राम कहैं बिष होत सुधा, घर नारि सती पतिसों चित फाटत
भा बिधना प्रतिकूल जबै तब ऊंट चढ़े पर कूकर काटत

भाग्य-फल

जाकी प्रापति होय सो, मिलै आपतैं आय
मेवा कोस हज़ार को, किहि किहि ठौर न पाय
होय बदा सो भाग्यमे, आपहि मिलि है आय
चूहा बिल को खोदि करि, पड़ै सांप मुख जाय

भाग्य हीन

भाग्य हीन को ना मिलै, भली वस्तुका भोग
दाख पकै मुख पाक को, होत काक को रोग
भाग्य हीन को दैव हू, देत सु लेत बनैन
दीठ परे जहँ वस्तु तहँ, चलै मूंद कै नैन
आवत समय विपत्ति को, मित्र शत्रु ह्वै जाय
दुहत होत बछ बँधन कौं, थम्भ मात को पाय
जो पुरुषारथ ते कहूं, सम्पति मिलति रहीम
पेट लागि बैराट घर, तपत रसोई भीम

छप्पय

गंजा नर शिर भानु तापते दग्धन लाग्यो
विधि वश छाया हेत, ताड़ तरवर तर भाग्यो
ताहि जात तिहि ठौर, वृक्षतैं फल इक टूट्यो
भयो भयानक शब्द, गिरत गंजा शिर फूट्यो

श्री शिव सम्पति कवि भनै, सुनो मुख्य यह बात है
विपति संग लगिजात तहँ, भाग्य हीन जहँ जातहै

भावी

दूर कहा नियरे कहा, होन हार सो होय
जर सींचे नारेलको, फलमें प्रगटै तोय
राम न जाते हरिन संग, सीय न रावण साथ
जो रहीम भावी कतहुं, होती अपने हाथ
यह निहचै करि जानिये, जान हार सो जाय
गजके भुक्त कपित्थ लों, ज्यों गिरि बीच बिलाय
जान हार सो जाय अरु, होन हार ह्वै जाय
रावणतैं लंका गई, बसे बभीषण पाय
तुलसी जस भवितव्यता, तैसी मिलै सहाय
आप न आवै ताहि पै, ताहि तहाँ लै जाय
सुनहु भरत भावी प्रवल, विलख कह्यो मुनि नाथ
हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ
भरद्वाज सुन जाहि जब, होत विधाता वाम
धूरि मेरु सम जनक यमु, ताहि ब्याल सम दाम

चौपाई

कल्पवेलि जिमि वहु विधि लाली, सींच सनेह सलिल प्रतिपाली
फूलत फलत भयो विधि वामा, जानि नजाय काह परिणामा
लिखत सुधाकर लिखगा राहू, विधि गति वाम सदा सब काहू

दोहा

हरि रहीम ऐसी करी, ज्यों कमान सर पूर
खैंच आपनी ओर को, डार दियो पुनि दूर

पद

करम गति टारे नाहिं टरी (टेक)

मुनि वसिष्ठ से पण्डित ज्ञानी सोध के लगन धरी
सीता हरन मरन दशरथ को बन मे बिपत परी
कहँ वह फंद कहाँ वह पारधि कहँ वह मृग चरी
सीता को हर लेग्यो रावण सुवरन लंक जरी
नीच हाथ हरिचन्द्र विकाने बलि पाताल धरी
कोटि गाय नित पुन्न करत नृग गिरगट जौनि परी
पांडव जिनके आप सारथी तिन पर विपत परी
दुर्योधन को गरब मिटायो यदु कुल नास करी
राहु केतु औ भानु चन्द्रमा विधि संजोग परी
कहत कबीर सुनो भाई साधो होनी होत खरी

घनाक्षरी

भावीको बनाव दाव अकथ अपार बल,
चलत न चारे हारे भूर बलवान है।
नल से नरेश गहि गादी से गिराय दीने,
नारि दमयन्ती कर छोरत अपान है।
भावी बश राम संग कंचन कुरंग धाये,
अज्ञ इव लीने कर बीच धनु वान हैं।

राम कवि ऐसे ही युधिष्टर विचार वान,
आपद अपार सही हारे धन धान है ।



मतलबी-मित्र

अपनी अपनी गरज सब, बोलत करत निहोर
बिन गरजे बोले नहीं, गिरवर हूं को मोर
स्वारथ के सब ही सगे, बिन स्वारथ कउ नाहि
सेवैं पंछी सरस तरु, निरस भये उड़ जाहि
बिन स्वारथ कैसे सहै, कोऊ कड़वे बैन
लात खाय पुचकारिये, होय दुधारू धैन
जिहि जासों मतलब नही, ताकी ताहि न चाह
ज्यों निस प्रेही द्रव्यके, तृन समान सुर नाह
नर कारज की सिद्धि लों, करै अनेक प्रकार
छूटे रोग शरीर तैं, को बूढ़ै उपचार
चहल पहल अवसर परे, लोक रहत घर घेर
ते फिर दृष्टि न आवही, जैसे फसल बटेर
सर सूखे पंछी उडैं, औरै सरन समांहि
दीन मीन बिन पच्छ के, कहु रहीम कहँ जांहि

कुण्डलिया

साई सब संसार में, मतलब का व्योहार
जब लग पैसा गांठ मे तबलग ताको यार

तव लग ताको यार, यार संगहि संग डोलैं
पैसा रहा न पास, यार मुखसे नहि बोलै
कहि गिरधर कविराय, जगत यहि लेखाभाई
करत बेगरज़ी प्रीत, यार कोई बिरला साई
कृतिघन कबहुं न मानही कोटि करे जो कोय
सर्वस आगे राखिये, तऊ न अपना होय
तऊ न अपनो होय, भले की भली न माने
काम काढ़ चुप रहै, फेर तिहि नहि पहचाने
कहि गिरधर कविराय, रहत नित ही निर्भय मन
मित्र शत्रु सब एक, दाम के लालचि कृतघन

दोहा

अपनी प्रभुता को सभै, बोलत झूठ बनाय
वेश्या बरस घटावती, जोगी बरस बढ़ाय

मित्र लक्षण

मित्र मित्र के काम को देत बिभव करि हेत
जैसे चन्द्र प्रकाश करि, रवि मण्डल ते लेत
मथत मथत माखन रहे, दही मही बिलगाय
रहिमन सोई मीत है, भीर परे ठहराय
जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छांडति छोह

कहि रहीम सम्पति सगे, बनत बहुत बहु रीति
विपति कसौटी जो कसे, तेई सांचे मीत

चौपाई

निज दुख गिरि सम रज के जाना,
मित्रके दुख रज मेरु समाना।
जिन के अस मति सहज न आई,
ते सठ हठ कत करत मिताई।
कुपथ निवार सुपन्थ चलावा,
गुण प्रगटे अवगुणहि दुरावा।
विपति काल करि शत गुन नेहा,
श्रुति कहि सन्त मित्र गुण एहा।
जो न मित्र दुख होंहि दुखारी,
तिन्हे विलोकत पातक भारी।

मिथ्याऽभिमान

यश मिथ्या अभिमान को, नेकहु जग मे नाहि
बन बन विगड़ै बुल बुले, ज्यों वर्षा जल माहि
जो मिथ्या धन धाम पर, करता है अभिमान
मनो कूपकी मेंड पर, सोवत चादर तान
धन धारा अरु सुतन मे, रहत लगाये चित्त
क्यों रहीम खोजत नहीं, गाढ़े दिन को मित्त

कहु रहीम केतिक रही, केती गई बिताय
माया ममता मोह परि, अन्त चलो पछिताय
अरे मरे कितने खरे, धरे चिता निज हाय
गया न तू नहि साथ तुव, जात नाम रघुनाथ
जगत जनायो जिन सकल, सो हरि जान्यो नाहिं
ज्यों आँखन जग देखिये,आँख न देखी जाहि
भजन कह्यो ताते भज्यो, भजो न एको बार
दूर भजन जाते कह्यो, सो तैं भज्यो गँवार

मूर्ख कृत निन्दा

दोष धरै गुण को पिशुन, इह उर गुनिन बिसारि
जूं के भय तैं बसन को, देत कहा कोउ डारि ?
जो बड़ेन को लघु कहै, नहिं रहीम घटि जांहि
गिरधर मुरली धर कहे, कछु दुख मानत नाहि
शशि की शीतल चांदनी, सुन्दर सबहि सुहाय
लगे चोर चित मे लटी, घटि रहीम मन आय
शीत हरत तम हरत नित, भुवन भरत नहि चूक
रहिमन तिहि रवि को कहा, जो घटि लखैं उलूक
शीतलता उरु सुगन्ध की, महिमा घटी न मूर
पीनस वारे जो तज्यो, सोरा जानि कपूर
मूरख के अपवाद तैं गुणी न होत मलान
ज्यों भौंकत है श्वान पै, धरै न गज कछु ध्यान

सवैया

पीनस वारो प्रवीन मिले, तो कहां लौं सुगन्धि सुगन्ध सुघावे
कायर कोप चढ़ै रन मे तो कहां लगि चारण चाव चढ़ावै
जैसे गुणी को मिलै निगुणी तो पुखी कहै क्योंकर ताहि रिझावे
जो पै नपुंसक नाह मिलैतो कहां लगि नारि शृंगार बनावै

मोह,ज्ञान अन्तर

मोह महातम रहत है, जौ लौं ज्ञान न होत
कहा महातम रहत है ?, आदित भये उदोत
मोह प्रवल संसार मे, सब को उपजै आय
पालै पोषै खग बचन, दै है कहा कमाय
भये ज्ञान अज्ञान नहि, है अज्ञान न ज्ञान
भानु उपो तो तम नहीं, है तम उपो न भान

यथा योग्य

यथा योग्य की ठौर बिन, नर छवि पावै नाहि
जैसे रत्न कथीर मे, कांच कनक के मांहि
अपनी अपनी ठौर पर, सब को लागै दाव
जल मे गाड़ी नाव पर, थल गाड़ी पर नाव
इक गुन तैं सोभा लहै, इक अवगुन अवरोह
शोभ उरोजन पीनता, त्यों कटि कृशाता सोह
जा लायक़ जिहि होय सो, ताही ठौर मनोग
चन्देरी पति क्यों बरै रुक्मणि श्री हरि जोग

मान सरोवर ही मिलै , हंसन मुक्ता जोग
सफरिन भरे रहीम सर, बक बालक नहि योग
वे न यहां नागर बड़े जिन आदर तो आब
फूल्यो अन फूल्यो भयो, गँवई गांव गुलाब
करले सूंघ सराह कै, रहे सबै गहि मौन
गंधी गन्ध गुलाब को, गँवई गाहक कौन
यथा योग्य बिन को लहै, कहहु राम सम्मान
मूढ़ हंसत है हहर के, सुन सुरागकी तान

याचक निन्दा

सबतैं लघु है मांगिवो, यामे फेर न सार
वलि पै याचत ही भयो, बामन तन करतार
तृन अरु तूल दुहून ते, हरुवी याचक आहि
जानत है कछु मांगि है, पवन उड़ावत नाहि
इक विन मांगे ही लहै, मागे एक लहै न
घन जल सर सरिता भरै, चातक चोंच भरैन
माता स्तन पय पान को, समझ भीक की चाल
दांतन उँगली धरत है, पछतावतहै बाल
कबहुं न सम्पति भीक की, चिर स्थायनी होत
इत आवत उत जात है, यथा कला निधि जोत
मांगे घटे रहीम पद, कितो करो बढ़ि काम
तीन पैग वसुधा करी, तऊ बावनै नाम

रहिमन वे नर मर चुके, जो कहुं मांगन जाहि
उनसे पहिले वे मरे, जिन मुख निकसत "नाहि"
रहिमन याचकता गहे, बड़े छोट ह्वै जात
नारायण हू को भयो, बावन आँगुर गात
ये रहीम घर घर फिरैं, मांग मधूकरि खाहि
यारो यारी छोड़दो, वे रहीम अब नाहि
घर घर डोलत दीन ह्वै, जन जन याचत जाय
दिये लोभ चशमा चखन, लघु पुनि बड़ो लखाय
याचक नर के बदनते, हटत तेजकी जोत
जलद जलधिसे जल गहत, श्याम बर्ण ज्यों होत

सवैया

हे करतार! हा तोसों कहूं कबहू जनि दीजिये काहुको टोटो
और लिखो जनि काहुके भाग्यमे मालके काजे महीपन मोटो
तू हु तो जानत है अपने जिय मांगवेते कछु और न खोटो
जो गयो मांगन तू वलि द्वार तो याहीते ह्वै गयो बावनछोटो
"मुझे दीजिये कुछ" यों कहि जब याचक कर फैलाता है
तभी शरीर कांपने लगता उसका स्वर घट जाता है
उसी समय उसके शरीरसे ये पांचो हट जाते हैं
ज्ञान तेज वल और मान यश अधम प्राण रह जाते हैं



घनाक्षरी

चातुर चालाक वाक वक्ता हो विशुद्ध सूर,
भूर बलवान गान गायक रिझात है।
पण्डित अखंड गुण वारिध सुमंडित हो,
चन्द्रमा समान रूप योवन दिखात है।
कविता सुलीन छन्द बन्धत विहीन दोष,
समता न जक्त मांझ जाकर लखात है।
कहत सु राम जे तो गरुता ग़रूर सबै,
"दीजिये" कहे ते एक पल मे दुरात है।

योग्यताकाही मान है

दोहा

भयो बड़प्पन के बिना, को उच्चासन जोग
बैठौ काग मुंडेर पर, गरुड़ न माने लोग

कुण्डलिया

बड़े न हूजैं गुनन बिन, बिरद बड़ाई पाय
कहत धतूरे सों कनक, गहनों गढ़ो न जाय
गहनों गढ़ो न जाय, धतूरे सों किहि भाँती
पुष्कर जलसों कहत, सुरभि नहीं गंध सुहाती
चन्द कपूर न कान्ति, जाति उड़ि त्यौं दिन दूजैं
सु कवि नामते कहा, गुनन बिन बड़े न हूजैं

लक्ष्मी चञ्चल है

सांची सम्पति और की, और भोगिबै आय
कन संग्रह चींटीन को, ज्यों तीतर चुग जाय
धन अरु गेंद जु खेलको, दोऊ एक सुभाय
करमे आवत छिनकमे, छिनमे करते जाय
कमला थिर न रहीम कहि, यह जानत सब कोय
पुरुष पुरातनकी बधू, क्यों न चंचला होय
कमला थिर न रहीम कहि, लखत अधम जे कोय
प्रभुकी सो अपनी कहै, क्यों न फजीहत होय
नारी काहू रंक की , अपनी कहे न कोय
हरि नारी अपनी कहे, क्यो न फजीयत होय

लोभ निन्दा

निज परछाई नीर मे, देखत लपको श्वान
मुख हू की रोटी बही, भौकत रह्यो अजान
नाशवान संसारमे, अधिक मोह मत मान
जो गठरी हलकी रही, मंज़िल है आसन
टरे न दुर्जन लालची, करो लाख अपमान
मक्खी फिर फिर आत है' तजे न जब लग प्रान



लोभभी वही अच्छाहै जो आशा पूरी करे

लालच भी ऐसो भलो, जासों पूरै आस
चाटे हू कहुं ओसके, मिटत काहुकी प्यास ?
देख ठिकानो मांगिये, मांग मिले जु होय
मुनि घर भीतर कांगही, ढूंढे लहत न कोय
अपने लालचके लिये, दुखहू आवै दाय
कान विधाये खाय गुरु, पहरै बीर बँधाय

वाचाल निन्दा, मौन महिमा

बकवादी को नीच पद, मौनीको सत्कार
नूपर पायन पड़त है, चढ़त कुचन पर हार
पायल पांय लगी रहै, लगे अमोलक लाल
भोडर हू की भासि है, वेदी भामिनि भाल
बहुत न बकिये कीजिये कारज अवसर पाय
मौन गहे बक दाव पर, मछली लेत उठाय

विचार-प्रशंसा

बुरे लगत हितके बचन, हिये विचारो आप
कड़वी भेषज बिन पिये, मिटै न तनको ताप
करिये सुखको होत दुख, यह कहु कौन सयान
वा सोने को जारिये, जासों टे कानटू

भले बुरे जंह एकसे, तहां न वसिये जाय
ज्यों अन्यायपुर मे बिके, खर गुर एकै भाय
निष्फल श्रोता मूढ़ पै, वक्ता वचन विलास
हाव भाव ज्यों तीय के, पति ऑधेके पास
न करि राम रॅग देख सम, गुण बिन समझे बात
गात धात गौ दूधतै, सैंहुंड़ कै ते घात
बिन कुल गुन जाने बिना, मान न कर मनुहार
ठगत फिरत सब जगतको, भेप भक्तको धार
मूरखको पोथो दई, बॉचन को गुण गाथ
जैसे निर्मल आरसी, दई अन्धके हाथ
हरि रस परिहरि विषय रस, संग्रह करत अजान
जैसे कोऊ करत है, छोड़ सुधा विष पान
जासों निबहै जीवका, करिये सो अभ्यास
वेश्या पाले शील तो, कैसे पूरै आस
जाको जैसो उचित तिहिं, करिये सोइ विचार
गीदड़ कैसे ल्याय है, गज मुक्ता गज मार
कहिये बात प्रमान की, जासों सुधरै काज
फीकौ थोरे लोनते, अधिकौ खाये नाज
चतुर कूर इकसे गनै, जाके नहीं विवेक
जैसे अवुध गॅवार को, पांच कांच है एक
अपनो समय विचार कै, अरि जीतिये अचूक

दिवस काग घूकहि हनै, कागहि निशि ज्यो घूक
छल बल समय विचारकै, अरि हनिये अनयास
किया अकेले द्रौण सुत, निसि पांडव कुल नास
सुन्दर थान न छोड़िये, जौ लो होय न और
पिछलौ पांव उठाइये, देख धरन की ठौर
फिर पीछे पछताइये, सो न करै मति सूध
बदन जीभ हिय जरत है, पीवत तातो दूध
इंगत तैं आकार तै, जान जात जो भेट
तासों बात दुरै नहीं, ज्यों दाईसे पेट
सुनिये सब हीकी कही, करिये स्वहित विचार
सर्व लोक राज़ी रहे, सो कीजे उपचार
देखा देखी करत सब, नाहिन तत्व विचार
या को यह अनुमान है, भेड़ चाल संसार
तिहि प्रमाण चलिवो भलो, जो सब दिन ठहराय
उमड़ चलै जल पारतै, जो रहीम बढ़ जाय
रहिमन देख बड़न को, लघु न दीजे डार
जहां काम आवै सुई, कहा करै तलवार
फल विचार कारज करो, करो न व्यर्थ झमेल
तिल सम बालू पेलिये, नाहिन निकसत तेल
पीछे कारज कीजिये, पहिले पहुंच विचार
कैसे पावत उच्च फल, वामन बांह पसार

जो करिये सो कीजिये, पहले कर निर्धार
पानी पी घर पूछिये, नाहिन भलो विचार
पीछे कारज कीजिये, पहिले यतन विचार
बड़े कहत है बांधिये, पानी पहिले पार
ठीक किये बिन और की, बात सांच मत थांप
होत अंधेरी रैन मे, परी जेवरी सांप

कुण्डलिया

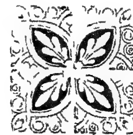
विना विचारे जो करे, सो पाछे पछताय
काम विगारे आपनो, जग मे होत हँसाय
जग मे होत हँसाय, चित्त मे चैन न पावे
खान पान सन्मान, राग रँग मनहि न भावै
कहि गिरधर कविराय, दु:ख कुछ टरत न टारे
खटकत है जिय मांहि, करे जो विना विचारे

चौपाई

सहसा करि पाछे पचताहीं, कहत वेद बुध ते बुध नाहीं

विद्या दान महात्म्य

निस दिन विद्या दान ते, होत न विद्या दूर
खिंचत रहत जल कूप ते, तऊ रहत भर पूर



विद्या नीच से भी लो

उत्तम विद्या लीजिये, यदपि नीच पै होय
परयो अपावन ठौर पर, कंचन तजत न कोय

विद्या विहीन निन्दा

विद्या बिन न विराजई, यदपि सरूप कुलीन
ज्यों सोभा पावैं नही, टेसू बास विहीन
होत बहुत धन होत तऊ, गुण युत भये उदोत
नेह भरयो दीपक तऊ, गुण बिन जोति न होत
कहा भयो जो धन भयो, आदर गुण तै होय
कोटि दीप धारी धनुप, गुण बिन गहत न कोय
नहीं रूप कुछ रूप है, विद्या रूप निधान
अधिक पूजियत रूप ते, बिना रूप विद्वान

विपरीत

जिय पिय चाहै तुम करो, घन चन्दन उपचार
रोग कछू औषधि कछू, कैसे होत क़रार
प्रेम पगत बरजी न क्यों, अब बरजत बे काज
रोम रोम बिष रम गयो, नाहिन बनत इलाज
रोष मिटै कैसे कहत, रिस उपजावन बात
इंधन डारै आग मे, कैसे आग बुझात
निपट अमिलती बातको, कैसे करि है कोय
वसन नील के माट मे, कबहूं लाल न होय

विरह-दशा

विरही जनके चित्त कौ, नाहि रहत बुधि बोध
थिर चर कौ बूझत फिरै, राघव सीता सोध
विरह रूप घन तम भयो, अवधि आश उद्योत
ज्यो रहीम भादो निशा, चमकि जात खद्योत
विरही जन व्याकुल रहै, भूलि जात सुख चैन
चकवा चकवी बिछड़ ज्यो, तड़पत हैं सब रैन

घनाक्षरी

छूटि जात खान पान भूषन बसन भौन
छूटि जात वित्त देश प्रेम की पगन मे
तात मात दारा पति पुत्र सखा बन्धु छूटै,
तन मन प्रान छूटै नैन की खगन मे
रसिक बिहारी नेम धर्म परलोक लोक,
छूटिजात मोद वहु चित्त की ठगन मे
ये ते सब छूटि जात रंचहू न लागै बार
विरह न छूटै नेक नेह की लगन मे

सवैया

विरही समझायहु धीर हिये न धरै न धरै न धरै न धरै
जग लोगहिसो रसिकेश कछू न डरै न डरै न डरै न डरै

निज प्रीतम के विन एक घरी न भरै न भरै न भरै न भरै
विधि काहुहि प्रीय बिछोह कवौ न करै न करै न करै न करै
फल है तिहि के शत कर्मन को जिहि के जिय माहि सदा कल है
कल है नहि जाहि कलेशनते न लगै कहु ताहि कछू भल है
भल है रसिकेश सदा अति सो हठ कै दृढ़ प्रेमहि जो न लहै
न लहै निज मीत वियोग कबौ जग जीवन को सुयही फल है

विरोध

रहैं न कबहू दोय खल, एक सदन के माहि
एक म्यान मे द्वै छुरी, जैसि समावै नाहि

विश्वास-महिमा

सिद्ध होत मन कामना, तुलसी प्रेम प्रतीति
तिरिया अपने कारने, लिख पूजत है भीति

वैर है

छप्पय

वैर धनी निर्धनी, वैर कायर अरु सूरहि
घृत मधु माखी वैर, वैर निम्मूहि कपूरहि
मूसे सर्पहि वैर, वैर पावक अरु पानी
जरा जोबना वैर, वैर मूरख अरु ज्ञानी
बड़ वैर चोर जिम चन्द सनु, बिरहनि वैर बसंतसो
नरहरी सुकब्बि कबित्त किय, मंगन वैर अदत्त सो

शत्रुसे मित्रता न करो

वैर भाव जहँ भूल हू, मिलत न करिये कोय
मूसे और बिलार मे, कबहूं प्रीति न होय
निहचै कारन विपति को, किये प्रीति अरि संग
मृगको मुख मृगराजके, होत कबहुं तन भंग

कुण्डलिया

जाकी धन धरती हरी, ताहि न लीजे संग
जो चाहे लेतो बनै, तो करिडार निपंग
तो करिडार निपंग, भूल परतीति न कीजै
सौ सौ सौहैं खाय, चित्त मे एक न दीजै
कहि गिरधर कविराय, खटक नहि जै है ताकी
अरि समान पर हरिय, हरी धन धरतीजाकी

चौपाई

यदपि मित्र प्रभु पित गुरु गेहा, जाइय बिन बोले न संदेहा
यदपि विरोधमान जहँ कोई, तहाँ गये कल्याण न होई

शत्रुसे सचेत रहो

अरि छोटो गनिये नहीं, जातैं होय विगार
तृण समूह को तनिक मे, जारत तनक अंगार
छोटे अरि पर चढ़हु सजि, सुभट शस्त्र तन त्रान
लीजै ससा अखेट पर, नाहरको सामान

कहुं रसमे कहुं रोसमे, अरि सों जिन पतिआय
जैसो सीतल तपत जल, डारत आग बुझाय
हीन जान न बिरोधिये, हो अति तन दुखदाय
रजहू ठोकर मारिये, चढ़ै सीस पर आय
कागजको सो पूतरा, सहिजहिमें घुल जाय
रहिमन यह अचरज लखो, सोऊ खींचत वाय
रिपु तेजसो अकेल अति, लघु कर गनिये न ताहु
अजहुं देत दुख रवि शशिहि, शिर अवशेपत राहु

शिक्षा अधिकारीको देनी चाहिये

गुरुहु सिखावैं ज्ञान गुण, शिष्य सुबुध जो होय
लिखै खरधरी भीत पर, चित्र चितेरो कोय
सुबुध बीच पर दुहुन को, हरत कलह रस पूर
करत देहरी दीप ज्यों, घर आंगन तम दूर
बुद्धि बिना विद्या कहो, कहा सिखावै कोय
प्रथम गांवही नाहि तो, सीम कहां ते होय
सुबुध अबुध की सेव को, यह सरूप जिय थाप
थलमे रोपित कमल ज्यों, बधिर कर्ण ज्यों जाप
कहा करै आगम निगम, जो मूरख समझैन
दोष न दर्पण को कछू, अन्ध बदन देखैन
शास्त्र सुने निषफल सकल, जो नहि होय विवेक
स्वाद न जानत कर्छली, चाखत पाक अनेक

निष्फल है मति मन्द को, यों उपदेश पवित्र
ज्यों अन्धे के सामने, महा मनोहर चित्र
अधिकारी को सीख दे, अनधिकारि को छोड़
बंजर हो तो जोत ले, कल्लड़ को मत तोड़
सीख दीजिये पात्र को, त्याग कुपात्र कुठाम
जन्मत बीज सुखेतमं, ऊपरमे नहि जाम
शिक्षा कबहुं न दीजिये, यथा योग्य बिन राम
लालटेन की रोशनी, अन्धे के किस काम
शिक्षा दिये सुपात्र को, होत बड़ो उपकार
मुनि प्रेरे-वाल्मीक से, सुख पावत संसार

सज्जन महिमा

अहित किये हू हित करे, सज्जन परम सधीर
सोखे हू शीतल करे, जैसे नीर समीर
उर ही तैं उत्तम प्रकृति, सज्जन परम दयाल
कौन सिखावत है कहो, राज हंस को चाल
जे उत्तमते अधम सों, धरत न रिस मन माहि
घन गरजे हरि हूंकरै, स्यार बोल सुन नाहि
बड़े सहज ही बात से, रीझ देत बकसीस
तुलसीदल से विष्णु ज्यों, आक धतूरे ईस
सहज रसीले होंय सो, करे अहित पर हेत
जैसे पीड़ित कीजिये, तऊ ईख रस देत

उत्तम पर कारज करे, अपनो काज बिसार
    पूरै अन्न जहान को, ता पति भिक्षाधार
सन्त कष्ट सहि आपही, सुखि राखे जु समीप
    आप जरै तउ और को, करै उजेरो दीप
बुरी करै पर जे भले, भली करैं हित धार
    जैसे दधि बांध्यो तऊ, कपि दल दियो उबार
बड़े विपन हूं मे करे, भले बिराने काम
    किय विराट पतिकी विजय, अर्जुन कर सग्राम.
बड़े बड़ेई काम कर, आपु सराहत नाहि
    जय जस उत्तरको दियो, पथ विराटके माहि
विन पूछे ही कहत है, सज्जन हित के बैन
    भले बुरेको कहत है, ज्यो तमचर गतरैन
विना कहे हू सत पुरुष, परकी पूरै आस
    कौन कहत है सूर को, घर घर करत प्रकास
जो घर आवे शत्रु हू, सुमन देत सुख चाहि
    ज्यों काटै तरु मूल कउ, छाह करत वह ताहि
प्रीति छुटे हू सुजनके, मनते हेत छुटेन
    कमल नालको तोरिये, तद्यपि सूत टुटेन
सज्जन के प्रय बचनतैं, मन सन्ताप मिटाय
    जैसे चन्दन नीरतैं, ताप ज्युं तनका जाय

निश दिन खटकत तनक तृण, पड़े जु आखन माहि
तिनमें सज्जन राखिये, सो छिन खटकत नाहि
सुजन वचन दुर्जुन वचन, अन्तर बहुत लखांय
वे सबको नीके लगै, वे काहू न सुहांय
तुला सुईकी तुल्यता, रीति सुजन की दीठि
गरुवे दिशि नै जात है, हरुवेको दै पीठि
जहं तहं सुजन मिलै नहीं, गुण गरुवे जग माहि
ज्योति भरे पानिप भरे, प्रति गज मुक्ता नाहि
बहु धन बीते तनिक धन, संचै सुजन करैन
मनन हानि ऊपज तहां, कन कन कबहूं भरैन
शील काम कुल युत चतुर, पुरुष परिक्षा जान
ताड़न छेदन कस तपन, इनते कनक पछान
रस पीवे विनहीं रसिक, रस उपजावत सन्त
बिन बरसै सरसै करै, जैसे विटप वसन्त
जहां सुजन तहँ प्रीति है, प्रीति तहां सुख ठौर
जहां पुष्प तहँ बास है, बास जहां तहं भौर
सुजन करत उपकार को, वित माफिक जग मांहि
गहरे गहरी छांह तरु, विरले विरली छांहि
सज्जन सों रस पोखिये, त्यों त्यों बढ़त हुलास
जेतो मीठो वस्तु मे, तेतो अधिक मिठास

विपत पड़े हूं देत है, सत पुरुषन के काम
    राज विभीषण को दियो, वैसी बिरयां राम
सुजन बचावत कष्ट तैं, रहै निरन्तर साथ
    नयन सहाई ज्यों पलक, देह सहायक हाथ
सब के सुख कर होत है, सत्पुरुषन के अंग
    हरि चन्दन सों सुख लहै, भृङ्ग भुजङ्ग विहङ्ग
यों रहीम गति बड़न की, ज्यों तुरङ्ग व्यवहार
    दाग़ दिखावत आप तन, सही होत असवार
तरुवर फल नहि खात है, सरवर पियत न नीर
    कहि रहीम पर काज हित, सन्तन धरे शरीर
आप करे उपकार अति, प्रति उपकार न चाह
    हियरो कोमल सन्त सम, सुहृद सोइ नर वाह
मन से जग को भल चहे, हिय छल रहे न नेक
    सो सज्जन संसार मे, जाको विमल विवेक
पशु पच्छी हू जान हैं, अपनी अपनी पीर
    तब सुजान जानौ तुम्हे, जब जानैं पर पीर
चटक न छांडत घटत हू, सज्जन नेह गँभीर
    फीको परै न बर घटै, रँग्यो चोल रँग चीर
बन्दौ सन्त समान चित, हित अनहित नहि कोय
    अंजलि गत शुभ सुमन ज्यों, सम सुगन्ध कर दोय
भले भलाई पै लहै, लहै निचाई नीच
    सुधा सराही अमरता, गरल सराही मीच

चौपाई

साधु चरित शुभ सरिस कपासू,
निरस विशद गुण मय फल जासू
जो सहि दुख पर छिद्र दुरावा,
वन्दनीय जिहि जग यश पावा
मुद मंगल मय सन्त समाजू,
जो जग जंगम तीरथ राजू
अकथ अलौकिक तीरथ राऊ,
देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ
बन्दौ सन्त असज्जन चरणा,
दुख प्रद उभय बीच कछु बरणा
बिछुरत एक प्राण हर लेहीं,
मिलत एक दारुण दुख देही
उपजहि एक संग जल माही
जलज जौंक जिम गुण बिलगाही
सुधा सुरा सम साधु असाधू,
जनक एक जग जलधि अगाधू
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू,
गरल अनल कलिमल सरि व्याधू
गुण अवगुण जानत सब कोई,
जो जिहि भाव नीक तिहि सोई

चौपाई

जग बहु नर सर सरि मम भाई,
जे निज बाढ़ बढ़हि जल पाई,
सज्जन सुकृत सिंधु मम कोई
देख पूर विधु बाढ़हि जोई,
देव! देवतरु सरस स्वभाऊ,
सन्मुख विमुख न काहुहि काऊ
उमा सन्त की यहै बड़ाई,
मन्द करत जो करै भलाई
सन्त असन्तन की अस करनी,
जिम कुठार चन्दन आचरनी
काटिये मलय परसु सुन भाई,
निज गुण देइ सुगंध बसाई
पर उपकार बचन मन काया,
संत सहज स्वभाव खग राया
भूरज तरु सम संत कृपाला,
पर हित सह नित विपत विशाला
संत हृदय सनतत सुखकारी,
विश्व विदत जिमि इन्दु तमारी
संत सहहिं दुख पर हित लागी,
पर दुख हेत असंत अभागी

संत विटप सरिता गिरि धरनी,
पर हित हेत इन्हन की करनी
संत हृदय नवनीत समाना,
कहा कविन पै कहै न जाना
निज परिताप दहै नवनीता,
पर दुख द्रवहि सुसंत पुनीता

दोहा

हित करियत यहि भांतिसों, मिलयत है वहि भांति
छीर नीर ते पूछले, हित करवे की बात

मालिनी

दिनकर कमलो को स्वच्छ देता सुहास
शशि कुमुद गणों को रम्य देता विलास
जलद बरस ते हैं भूमिमे अम्बु धारा
सुजन बिन कहे ही साधते कार्य सारा
विकल अति क्षुधासे देखके पुत्र प्यारा
जननि हृदय से है छूटती दुग्ध धारा
लख कर कुदशा त्यों दीन दुःखी जनोंकी
सहज प्रगट होती है दया सज्जनोंकी
लहर रहित होता है पयोधि प्रशान्त
सुहृदय रहते त्यों धीर गम्भीर शान्त
दुख सुख भय चिंता आदिसे हो अलिप्त
स्थिर मति रहते हैं साधु ही आत्म तृप्त

सब नद नदियों का नीर धारा प्रवाही
बह कर मिलता है सिन्धु में सर्वदा ही
तदपि न तजता है आत्म मर्याद सिंधू
सु विपुल सुख में भी गर्व लाते न साधू
यदि सब सरिताएँ ग्रीष्म में शुष्क हों भी
वह उदधि रहेगा पूर्ण ही मित्र तो भी
धन सुख प्रभुता का सर्वथा हो अभाव
पर सम रहता है सज्जनों का स्वभाव

सवैया

सन्त करै नहि वैर कहं सबके हित में बरतें अतिही
ता तन को जब दाहत कौ वह तदपि देत सुखामित ही
जैसे कुठार कटै तरु चन्दन गंध तिसें सुख देवत ही
हेतु इही सर्वोतम हेरत ता पद कंज नमो नितही

दोहा

तन दाहन छेदन घिसन, सहे कनक छवि पाय
त्यों दुर्जन के बचन सह, सज्जन सन्त कहाय
कष्ट दिये पर साधु जन, तजैं न पर उपकार
चन्दन को फूंकत तऊ, देत सुगंध अपार
सन्त कृपा रवि उदय ते, मिटै तिमर अज्ञान
हृदय सरोवर विमल ह्वै, फूलै हित बुध ज्ञान

सज्जन स्व बचनों की रक्षा करते हैं



सज्जन अंगीकृत कियो, ताको लेहिं निबाह
छई कलंकी कुटिल शशि, तउ शिव तजत न ताह
बड़े भार लै निरवहै, तजत न खेद विचार
शेष धरा धरि धर धरै, अवलों देत न डार
बड़े बचन पलटै नही, कहि निरवाहै धीर
कियो विभीपन लंक पति, पाय विजय रघुवीर
कहे बचन पलटैं नही, जे सत पुरुष सधीर
कहत सबै हरिचन्द्र नृप, भर्यो नीच घर नीर
बचन तजै नहि सत पुरुप, तजै प्राण वरु देश
प्राण पुत्र दुहु पर हरे, बचन हेत अवधेश

घनाक्षरी

सूर्य्य और चाँदहु की ज्योति टर जाय भले,
सज्जन का वैन पै न नेक कबौ टर है।
धन और सम्पति के नाश का न ख्याल लेश,
पर उपकार हेतसर्व परिहर है।
सत्य पक्ष पाति निज सत्य ही को सत्य जान,
राम कवि अन्त लगि ताहि अनुसर है।
सामने हैं कौन ? और होगा परिणाम कैसा
वीर न विचार कबौ ताह पर कर है।

सोच रूप सागर में सने रघुराई कहै,
लंक यह देन को तो लगे कुछ घात है।
कौन या विभीषण को राखे रोक रावण ते,
जीव जाल मछरी सौं परयो पछतात है।
लक्ष्मण पाछे मैं हू मरण परण लीनो,
जस राम बुरे ब्योंत डूबी बुधि जात है।
जीव को न लालच बचन को विशेष उर,
जीव गये बचन बचै तो बड़ी बात है।

कुण्डलिया

पुत्र प्राण सब ते बड़े, चारो युग परमान
ते राजा दोऊ तजे, बचन न दीने जान
बचन न दीने जान, बड़न की यहै बड़ाई
बचन रहे सो काय, और सर्वस किन जाई
कहि गिरधर कविराय, भये नृप दशरथ ऐसे
प्राण पुत्र परहरे, बचन परहरे न तैसे *

सत्य प्रशंसा

सत्य बचन मुख जो कहत, ताको चाह सराह
गाहक आवत दूर तै, सुन इक सच्ची साह
अरि हूं बूझे मंत्र कौं, कहिये सांच सुनाय
ज्यों भीषम पांडवन कौं, दीनो मरम बताय
कहिये जासों जो हितू, भली बुरी ह्वै जाय
चोर करै चोरी तऊ, सांच कहै घर आय

---

*इस कुण्डलियाके शुद्ध होनेमें सन्देह है

चलिये पैंड़े सांच के, साईं साच सुहाय
सांचो जरै न आग तैं, झूठो ही जर जाय
आंच न लागे सांच को, यामे ना कुछ भूल
सोना पावक मे पड़े, घटत तोल नहि मूल
कार्य सिद्ध हो सत्य सों, रहो निकट या दूर
सीधे सरसों धनुर्धर, वेधत लक्ष्य ज़रूर
का ब्राह्मण का डोम भर, का जैनी कृस्तान
सत्य बात पर जो रहे, सोई जगत महान
न्याय चलत विगरै कछू, तौ न करो अफसोस
धार परत जो राज पथ, तौ न देत कोउ दो
सत पथ चलते दुख मिलै, तऊ न आवत हान
हरिश्चन्द्र की गाथ को, जानत सकल जहान

सत् सङ्गति महिमा

रहे समीप बड़ेन के, होत बड़ो हित मेल
सब ही जानत बढ़त है वृक्ष बराबर बेल
गरुता लघुता पुरुष की, आश्रय बशते होय
करी वृन्दमे विध्य सो, दर्पण मे लघु सोय
एक भलो सबको भलो, देखो सबद विवेक
जैसे सत हरिचन्द्र के, उधरे जीव अनेक
होय शुद्ध मिटि कलुषता, सत संगतिको पाय
जैसे पारसको परस, लोह कनक ह्वै जाय

उत्तम जनके संगमे, सहज होत सुख भास
	नृपति लगावै इतर जो, लेत सभा सब बास
जाके संग अवगुण दुरै, करिये तिहि पहिचान
	जैसे माने दूध सब, सुरा अहीरी पान
जैसी संगति तैसिये, इज्जत मिलि है आय
	सिर पर मखमल सेहरो, पनही मखमल पाय
होत सुसंगति सहज सुख, दुख कु संगके थान
	गंधी और लुहार की, देखो बैठ दुकान
सुधरै बिगरि कुसंगते, सत संगतिको पाय
	बासहि सीकर हीग की, ज़ीरा संग मिटि जाय
उत्तम जन सों मिलत ही, अवगुण हू गुण होय
	घन संग खारो उदधि मिल, बरसे मीठो तोय
दुखदाई सोई देत सुख, सुखदाई सँग जात
	घट जल भीजे चीर को, लागि लूय सियरात
सदा सुथान प्रधान है, वल न प्रधान बताव
	नाग डरावत गरुर को, हर उर हार प्रभाव
नीचहु उत्तम संग मिलि, उत्तमही ह्वै जाय
	गंग संग जल ह्वयलू, गंगोदक के भाय
बुरो तऊ लागत भलो, भलो ठौर पर लीन
	तिय नयना नीको लगै, काजर यदपि मलीन

चौपाई

सठ सुधरहि सत संगति पाई,
पारस परस कुधातु सुहाई ।
गगन चढ़ै रज पवन प्रसंगा,
कीचड़ मिलइ नीच जल संगा ।
सोइ जल अनल अनिल संघाता,
होय जलद जग जीवन दाता ।
धूमऊ तजै सहज करुवाई,
अगर प्रसंग सुगंध बसाई ।
सोइ भरोस मोर मन आवा,
किहि न सु संग बड़प्पन पावा ।
कर्म्म नाश जल सुर सरि परई,
तिहि को कहो सीस नहिं धरई ।
उलटा नाम जपत जग जाना,
बालमीक भये ब्रह्म समाना ।
बिन सत संग विवेक न होई,
राम कृपा विन सुलभ न सोई ।
विधि वश सुजन कुसंगति पर हीं,
फणि मणि सम निजि गुण अनुसरहीं ।
मणि माणिक मुक्ता छवि जैसी,
अहि गिरि गज शिर सोह न तैसी ।

नृप किरीट तरुणी तनु पाई,
लहहि सुयश शोभा अधिकाई ।

दोहा

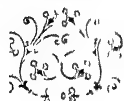
ग्रह भेषज जल पवन पट्ट, पाय कुयोग सुयोग
होहि कु वस्तु सुवस्तु जग, लखहि सु लक्षण लोग

हरिगीत

मंगल करनि कलिमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथकी
गति कूर कविता सरितकी ज्यों परम पावन पाथ की
प्रभु सुयश संगति भणित भलि होयहि सुजन मनभावनी
भव भूति अंग मशानकी सुमिरत सुहावन पावनी

घनाक्षरी

मलय की संगति से चन्दन है जात वन.
पारस लगे से लोह सोना होय जात है ।
नल के सहारे नीर चढ़त अकास पर.
फल संग पात एक भाव से विकात है ।
महा गुणवान नारायण की सुसंगति में,
मन्द मति राम कवि सुकवि कहात है ।
संगति सुधार देत दुष्ट औ कुकर्म्मियों को.
संगति ही फूटी तकदीर को बनात है ।



चौपाई

सत संगति दुर्लभ संसारा, निमिष दंड भरि एको वारा
देखगरुड़ निज हृदय विचारी, मैं रघुवीर चरण अधिकारी

दोहा

चंदन शीतल लोक मे, चंदन ते शशि शीत
अति शीतल दुहुन ते, सत संगति सुन मीत

सब गुण एक जगह नहीं होते

जैसो गुन दीनो दई, तैसो रूप निवंध
ये दोऊ कहँ पाइये, सोनो और सुगंध
एकहि घुण ऐसो भलो, जिहि औगुन छिप जात
वारिद के ज्यो रगं बद, बरसत ही मिटि जाग
सब इकसे होत न कहूं, होत सबन मे फेर
कपरौ खादी वाफतौ, लोह तवा शमसेर
विद्या लक्ष्मी पुरुष पै, होय नही इकठाय
नाहिन सुख दो सौतमे, पीय पै एकहि जाय

छपय

सर सर हंस न होत, वाजि गजराज न दर दर
तरु तरु सुफर न होत, नारि पतिव्रता न घर घर
मन मन सुमति न होत, मलैगिर होत न बन बन
फन फन मन नहिं होत, मुक्त जल होत न घन घन
रन रन सूर न होत है, जन जन होत न भक्त हरि
नर सुनो सकल नर हरि कहत, सबनर होत न एकसरि

घनाक्षरी

चन्दनमें फूल और ईखमें न दीन्हें फल,
बड़े बड़े कंटक गुलाबन के डारे की।
कोयल सुबानी दै अमर कीनो कागनको,
छोटी छोटी अखियां बनाई गजभारेकी।
सोनेमे सुगंध नहिं हीरा विषमूल कीन्हों,
अगिनि सधूम गति थिर नहीं पारेकी।
भाषै सीताराम हेर हेर एक आनन ते,
कौन कौन चूक चतुरानन विचारे की।

छप्पय

शशि कलंक रावण विरोध हनुमत मे बनचर
कामधेनु ते पशु जाय चिन्तामणि पत्थर
अति रूपा तिय बांझ गुनी को निरधन कहिये
अति समुद्र सो खारि कमल बिच कंटक लहिये
जाये जु व्यास खेवट्टनी दुर्वासा आसन छिर्यो
कवि गद्द कहे सुनरे गुनी कोउ न विधि निर्मल गढ्यो।

सवैया

जा तियका अति उत्तम रूप बनायहु ता तियको पति हीना
जो मन भावन छैल दियो पुनि तौ तियहीको कुरूपिनी कीना
जो बहु रूप दई दुहुं को पुनि तौ कलपावत पुत्र विहीना
तीनहु जाहि दई शिव सम्पति जू विधि ताहि दरिद्र ही दीना

अन्धेर ※

पडे हैं बन्धन में गजराज, मुक्त फिरता है श्वान समाज
कुढंगा है कोकिल का साज, धरा कूकर के सिर पर ताज
इसे हम कहे दिनों का फेर, या कहे दुनिया का अन्धेर
कूप का निर्मल शीतल नीर, महा खारी है उदधि गँभीर
ईश के भक्त अशक्त अधीर, दुष्ट राक्षस होते है वीर।

घरों मे अजा बनों में शेर
देखिये दुनिया का अन्धेर

नहीं घटती तारों की आब, नहीं थिर माहताब की ताब
कुशलसे किंशुक खिते जनाब, कठिन कांटोंमे खिचे गुलाब

रत्न कम पत्थर के है ढेर
देखिये है कैसा अन्धेर

पर्वतोंमे सोनेकी खान, राज पूताना रेगिस्तान
शंख का है सूखा सम्मान, किया सीपी को मुक्ता दान

विधाताकी सुबुद्धिका फेर
हो रहा है विचित्र अन्धेर

कहां वह कमल कहां वह कीच, न समझा उच्च न समझा नीच
लगाया है कलंक शशि बीच, ले गया वह मनोज्ञता खींच

※ इस अन्धेरकी रोशन व्याख्या देखिये "पद्य-परीक्षा" पृष्ठ ५७

दिया है गरल सुधा में घोर
विधाता यह कैसा अन्धेर

महा गुण कारी कड़वी नीम, बताते डाक्टर वैद्य हकीम
भरे मीठेमें दोष असीम, बिके दो गिन्नी सेर अफ़ीम
और गुड़ दो ही आने सेर
कौन यह कहे नहीं अन्धेर

महाज्ञानी थे अष्टावक्र, और पर-स्त्रीगामी हैं शक्र
चलाता है विधि ऐसा चक्र, किया करता [illegible]
लगे अन्धे के हाथ बटेर
लोग हैं चकित देख अन्धेर

खपाया किये जान मज़दूर, पेट भरना पर [illegible]
उड़ाते माल धनिक भर पूर, मलाई लड्डू मोती चूर
सुधरनेमें है जग के देर
अभी है बहुत बड़ा अन्धेर

अन्न दाता हैं धीर किसान, सिपाही दिखलाते हैं शान
डराते उन्हें तमाचा तान, तुम्हें क्या सूझी है भगवान
आंवले खट्टे मीठे बेर
किया है क्यों ऐसा अन्धेर

फिलीपाइनके हिंसक लोग, जिन्हें था कल तक पशुता रोग
भोगते हैं स्वराज्य सुख भोग, पड़ा आकर ऐसा संयोग

रहा है भारत पर मुख हेर
बड़ा अन्धेर बड़ा अन्धेर

सबल में तेज होता है

सबल न पुष्ट शरीर को, सबल तेज युत होय
हृष्ट पुष्ट गज दुष्ट ज्यों, अंकुस के वश सोय
बिना तेजके पुरुष की, अवश अवज्ञा होय
आगि बुझै ज्यों राख कौं आन छुवे सब कोय
मंत्र परम लघु जासु वश, विधि हरि हर सुर सर्व
महा मत्त गजराज कहँ, वश करि अंकुश खर्व

"चौपाई ।

कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा, सोख्यो सुयश सकल संसार
रवि मण्डल देखत लघु लागा, उदय तासु त्रिभुवन तम भागा।

सबल से बैर करना बुरा है

कैसे निबहै निबल जन, कर सबलन कों गैर
जैसे बसि सागर बिषै, करत मगर सों वैर
सबै सहायक सबल के, निबल न कोउ सहाय
पवन जगावत आगको, दीपहि देत बुझाय
कछु बसाय नहिं सबल सों, करै निबल पै जोर
चलै न अचल उखार तरु, डारत पवन झकोर
एक बुरो सबको बुरो, होत सबल के कोप
औगुन अर्जुन के भयो, सब क्षत्रिन को लोप.

हरत दैव हू निबल अरि, दुर्बल ही के प्रान
बाघ सिह को छोड़ कै, देत छाग बलि दान
छोड़ सबल को निबल की, कबहुं न गहिये ओट
जैसे टूटी डारसों, लगें बिलंबे चोट
तिन के कारज होत है, जिनके बड़े सहाय
कृष्ण पच्छ पांडव जयी, कौरव गये बिलाय
सबै धकावै निबलको, निबल पुरातन पाठ
डारै जार बिहाय दै, अनिल अनल जल काठ
जोर न पहुंचे निबल को, जो पै सबल सहाय
भोडर की फानूस को, दीप न बात बुझाय
निबल सबल के पक्ष तै, सबलन मों अनखात
हनत हिमायत की गधी, ऐराकी को लात
प्रीति बिरोध समान सन, करिय नीति अस आह
जो मृगपति वध मेंडकहि, भलो कहत को ताह
सबलपक्षसे निबल जन, सबल शत्रु से मांख
अहि हर उर वसि अभय मन, गरुड़ दिखावै आंख

कुण्डलिया

साई बैर न कीजिये, गुरु परिडप कवि यार
बेटा वनिता पँवरिया, यज्ञ करावन हार
यज्ञ करावन हार, राज मंत्री जो होई
बिप्र परौसी वैद्य, आप को तपै रसोई

कहि गिरधर कविराय,युगनते यहि चलि आई
इन तेरह से तरह दिये, बन आवै साई

चौपाई

नाथ बैर कीजे ताही सों, बुधिबल जीत सकिय जाही सों

सम्मान

सुख सज्जन के मिलन कौं, दुर्जन मिले जनाय
जानै ऊख मिठास कौ, जब मुख नीम चबाय
सुन मुख मीठी बात कौ, को चाहत कटु बात
चाखि दाख के स्वाद कौं, कोन निवौरी खात
रहि बड़ेन ढिग फिर कभी, नीचहि मिलहि न कोय
हय हाथी जो चढ़ चुके, खर पर चढ़ैं न सोय

समान शोभा

सम सहाय के बिन मिले, दुखदाई दुख देइ
भिजे चीर बिन घट सलिल, लागत तपत करेइ
अधिक चतुरकी चातुरी, होत चतुरके संग
नग निर्मलकी डांक तैं, बढ़त जोति छवि अंग
बड़े बड़े को विपति तैं, निहचै लेत उधार
ज्यों हाथी को कींच तैं, हाथी लेत निकार
बड़े कष्ट हू जे बड़े, करे उचित ही काज
स्यार निकट तज खोज कै, सिंह हनै गजराज

बड़े वड़े सों रिस करै, छोटे सों न रिसाय
तरु कठोर तोरै पवन, कोमल तृन बच जाय
जो पै जैसा होय तिहिं, हित सो मिल है आय
गांठीं चोरा चोर को, शाहै शाह मिलाय
जासों पहुंच न पाइये, तासों बहस न ठान
गई प्रतिष्ठा रुकम की, फिर न बसे पुर आन
सोहत संग समान सों, यहै कहै सब लोग
पान पीक ओठन लगे, काजर नयनन जोग
अपनी अपनी ठौर पर, शोभा लहत विशेष
चरण महावर है भलो, नयनन अंजन रेख
अति उत्तम हू लहत नहि, विना समान सुमान
ज्यों मणि शोभा यथोचित, पाव न फणिके थान
बिन समान को आन सों, पावत मान जहान
मूढ़ मण्डली होत है, ज्ञान गान अपमान

समय प्रभाव

नीकी पै फीकी लगे, विन अवसर की बात
जैसे रण आंगन विषय नहिं सिंगार सुहात
फीकी पै नीकी लगे, कहिये समय विचार
सब को मन हर्षित करे, ज्यों विवाह में गार
बुरी तऊ लागत भली, भली ठौर पै लीन
तिय नयनन नीको लगे, काजर यदपि मलीन

प्राण तृषातुर के रहें, थोरे हू जल पान
पीछे जल भर सहस घट, डारे मिलत न प्रान
समय समझ कै कीजिये, काज बहै अभिराम
सैंधव मांगयो जीमते, घोड़ा को किहि काम
देबो अवसर को भलो, जासों सुधरै काम
खेती सूखे वरसिबो, घन को कौने काम
बनती देख बनाइये, परन न दीजे खोट
जैसी चले बयार तब, तैसी दीजे ओट
सुखदाई पैं देत दुख, सो सब दिन को फेर
शशि शीतल संयोग मे, तपत विरह की बेर
विधि के विरचे सुजन हू, दुरजन सम ह्वै जात
दीपहि राखे पवन तै, अंचल वहै बुझात
विष हूं ते सरसी लगै, रस मे रिस की भाख
जैसी पित्त ज्वरीन को, कड़वी लागत दाख
कहुं अवगुण सो होत गुण, कहुँ गुण अवगुण होत
कुच कठोर त्यों हैं भले, कोमल बुरे उदोत
जैसी हो भवितव्यता, तैसी बुद्धि प्रकाश
सीता हरिबे ते भयो, रावण कुल को नाश
निहचै भावीको कहै, प्रती कार जो होय
तो नल से हरिचन्द्र से, विपति न भरते कोय

कछ्रु सहाय न चल सकै, होनहार के पास
भीष्म युधिष्ठर से भयो, कौरव कुल का नाश

कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर
समय पाय तरुवर फरै, केतिक सींचो नीर

होत सिद्ध जैसे समय, तैसी ही अविलम्ब
कौड़ी विन जात न लियो, करी लियो दे लम्ब

न कछु तऊ जाकी तलब, ताही की मनुहारि
तिलक समय नृप लेत हैं, तृण हूं हाथ पसारि

गुणी तऊ अवसर विना, आदर करै न कोय
हियते हार उतारिये, शयन समय जब होय

कारज ताही को सरै, करै जो समय निहारि
कबहुँ न हारे खेल में, खेलै दाव विचारि

जो हाजिर अवसान पर, सोई शस्त्र प्रमान
दामहि तैं वलदेव ज्यों, हरे सूत के प्रान

अवसर वीते यत्न को, करिवो नहिं अभिराम
जैसे पानी वह गयो, सेतुवन्धु कहि काम

आए आदर ना करे, पीछे लेत मनाय
घर आए पूजैं न अहि, बांबी पूजन जाय

अपने अपने समय पर, सबको आदर होय
भोजन प्यारो भूख में, तिस में प्यारो तोय

प्यारी अन प्यारी लगे, समय पाय सब बात
धूप सुहावे शीत में, सो ग्रीषम न सुहात
वय समान रुचि होत है, रुचि समान मन मोद
वालक खेल सुहाव ही, योवन विषै विनोद
सुनत श्रवण पिय के वचन, हिय बिकसै हित आगि
ज्यों कदम्ब बर्षा समय, फूलत बूंदन लागि
निरस बात सोई सरस, जहां होय हिय हेत
गारी हू प्यारी लगै, ज्यों ज्यों समधिन देत
अरुण सिरोरुह कर चरण, दृग खंजन मुख चन्द
समय आय सुन्दरि शरद,, काहिन करत अनन्द
समय समय सुन्दर सबै, रूप कुरूप न कोय
मन की रुचि जेती जितै, तितै तिती रुचि होय

चौपाई

तृषित वारि बिन जो तनु त्यागा, मुये करेका सुधा तड़ागा
का वर्षा जब कृषी सुखानी, समय चूक पुनि का पछतानी

कुण्डलिया

साईं समय न चूकिये, यथा शक्ति सन्मान
को जाने को आइ है, तेरे पौरि प्रमान
तेरे पौरि प्रमान, समय असमय तक आवै
ताको तू मन खोल, अंक भर हृदय लगावै

कहि गिरधर कविराय, सबै आमे मधि आइ
शीतल जल फल फूल, समय जिन चूको भाई
बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि लेउ
जो बनिआवे सहज में, ताही में चित देउ
ताही में चित देइ, बात जोई बन आवै
दुर्जद हँसे न कोय चित्त में खता न पावै
कहि गिरधर कविराय, यहै कर मन परतीती
आगे को सुख समझ होइ बीती सो बीती
राजा के दरबार में, जैये समया पाय
साईं तहां न बैठिये, जहँ कोउ देइ उठाय
जहँ कोउ देइ उठाइ, बोल अन बोले रहिये
हँसिये नहीं हहाय, बात पूछे ते कहिये
कहि गिरधर कविराय, समय से कीजे काजा
अति आतुर नहिं होय, बहुर अनखैहै राजा

छप्पय

समय मेघ बरसंत, समय सिर होय सबै फल
तरुणाई हो समय, समय ही जान देह बल
समय सुजन हू मिलै, समय पण्डित हू चूकै
समय प्रीति चित घटै, समय सरवर हू सूकै
कोऊ द्वार जु आवै समय सिर, समय पाय गिरिवरहि गिर
गोविंद अटल कवि नन्द कहि, जो कीजै सो समय सिर

चौपाई

सकुचे तात कहत इक बाता, अर्ध तजहि बुध सर्वस जाता

सहाय प्रशंसा

अबल हु के अवलम्ब तै, पूर्ण होत है आश
पाय सहारा सूत का, मोम हु करत प्रकाश

सहोदर भ्राताओंका स्वभावभी भिन्न होताहै

एक उदर, वाही समय, उपजत इक से होय
जैसे कांटे बेर के, वांके सीधे दोय
यदपि सहोदर होय तउ, प्रकृति और की और
विष मारै ज्यावै सुधा, उपजै एकहि ठौर
मारे इक रक्षा करे, एकहि कुल के दोय
ज्यों कृपाण अरु कवच ये, एक लोह के होय
होय भले को सुत बुरो, भलो बुरे को होय
दीपक ते काजल प्रगट, कमल कीच ते सोय,

चौपाई

उपजहि एक संग जल माहीं,
जलज जोंक जिमि गुण बिलगाहीं।
सुधा सुरा सम साधु असाधू,
जनक एक जग जलधि अगाधू।



घनाक्षरी

एक बीज एक मूल एक डार एक थान,
एक खान पान फूल शूल के लखानिये।
एक सुखदाई अरि मीत को विवेक तन,
तन मन ताको परमार्थ होत जानिये।
कठिन कठोर एक महा दुख दायक है,
अंग चुभ दूसरों के पीड़ अधिकानिये।
राम कवि अपने सुकर्म ते बड़ाई होत,
कुलकी बड़ाई कहो कैसे कर मानिये।

सर्व मान्य सिद्धान्त

मांगत गौरव नाश हो, प्रसवत यौवन लोप
रहत न विनय प्रणाम लखि, सत पुरुषनको कोप
सम संतोष न और सुख, तप नहि क्षमा समान
ब्रह्म ज्ञान सम ज्ञान नहिं, धर्म्म न दया समान

सामर्थ्य-सीमा

अपनी पहुंच विचार कै, करतब करिये दौर
तेतो पांव पसारिये, जेती लांबी सौर
अन मिलती जोई करत, ताहीको उपहास
जैसे योगी योगमें, करत भोगकी आस
बड़े बड़नके दुख हरत, पै न नीच यह थाम
घन मेटत पै ना सरित, गिरिवर ग्रीष्म ताप

होय बड़ेहु न हूजिये, कठिन मलिन मुख रंग
मर्दन बंधन छत सहत, कुच इन गुनन प्रसंग
कोऊ बिन देखे सुने, कैसे कहे विचार
कूप-भेक जाने कहा, सागरको विस्तार
जो समझै जा बातको, सो तिहि कहे विचार
रोग न जाने ज्योतिषी, वैद्य ग्रहनको चार
जो लायक जा बातको, तासों तसी होय
सज्जन सो न बुरी करै, दुर्जन भली न कोय
बड़े बड़नके जात है, बडे हरै दुख दन्द
कुहू भवन मे जाय कै, चन्द भये जग वन्द
प्रापति तैसी होत सो, जिहि जैसा लाभाय
भाजन मित सर सरित ते, जल भरि भरि लैजाय
उत्तम जनकी होड़ कर, नीच न होत रसाल
कौवा कैसे चल सके, राज हंसकी चाल
क्यों कीजै ऐसो यतन, जाते काज न होय
पर्वत पै खोदे कुँवा, कैसे निकसै तोय
ह्वै है बड़े बड़ेन सो, होय न छोटे काज
गहै विटप झुफतीन को, गहि न सकै गजराज
होय पहुँच जाकी जिती, तेतो करत प्रकाश
रवि सम कैसे कर सकै, दीपक तम को नाश
विपति बड़ेई सहि सकै, इतर विपति तैं दूर
तारे न्यारे रहत है, गहै राहु शशि सूर

जाय दरिद्र कवि जनन को, सेये राज समाज
सिंहू तृपित जब होत है, हाथ चढ़ै गजराज

वीर पराक्रम ना करै, तासों डरत न कोय
बालक हू का चित्र को, बाघ खिलौना होय

वीर पराक्रम ते करैं, भूमण्डल को राज
जोरावर यातें करत, बन अपनो मृगराज

निबहै सोई कीजिये, पन अपनो अनुमान
कैसे होत गरीब पै, राजा को सो दान

जो धनवन्त सो देत कछु, देय कहा धन हीन
कहा निचोरै नग्न जन, न्हान सरोवर कीन

छोटे मन में आय है, कैसे मोटी बात
छेरी के मुंह में दियो, ज्यों पेठा न समात

मान-धनी नर नीच पै, याचै नाहीं जाय
कबहुँ न मांगे स्यार पै, वरु भूखो मृगराय

छोटे नर सों बड़न को, कबहुं बुरो न होय
फूस आग नहिं कर सकत, तपत जलधि को तोय

जिहि जेतो अनुमान तिहि, तेतो मिलत मिलाय
कन कीड़ी कूकर टुकर, मन भर हाथी खाय

यथा शक्ति ही देसकै, जो कछु जाके पास
ब्राह्मण कन चावर दियो, श्री पति धन आवास

निर्धन ते कब होत है, धनवानन की रीस
कहु कागज के फूल को, कौन चढ़ावत सीस

ऊंचन के कर्त्तव्य को, करत न नीच गुलाम
पग-उंगली कब करत है, गंठ खोलन को काम
कैसे छोटे नरन ते, सरत बड़न के काम
मढ़ो दमामो जात है, कहि चूहेके चाम
चले जाहु यां को करत, हाथिन को ब्योपार
नहिं जानत इहि पुर बसैं, धोबी और कुम्हार

सावधान रहो

जीवन रक्षा के लिये, मन को रख हुशयार
चोर चुरावत तब न जब, जागत चौकीदार
नीचे बन कर रहत हैं, पहुंचे साधु उदार
ज्यों मंजिल पर जाय कर, प्यादा बने सवार
जो रहीम मन हाथ है, मनसा कहुं किन जाहि
जल में जो छाया परी, काया भीजति नाहि
कहूं कहूं गुण ते अधिक, उपजत कष्ट शरीर
मधुरी बानी बोल कै, पड़त पींजरे कीर

सोधी चाल

रहिमन सोधी चाल सों, प्यादा होत वज़ीर
फरजी मीर न हो सकै, टेढ़े की तासीर

सुखकर

एक बिरानोई भलो, जिहि सुख होत सरीर
जैसे बन की औषधी, हरत रोग की पीर

सेयौ छोटो ही भलो, जासों गरज सराय
कीजै कहा पयोधि को, जासों प्यास न जाय
बड़ी बड़ाई नीच को, दीजै अपने काम
खर हू को बोलत पथिक, कहत विनायक नाम
प्यासे दुपहर जेठ के, थके सबै जल सोंधि
मरु धर पाय मतीर हू, मारू कहत पयोधि
विषम विषादित की तृषा, जिये मतीरन सोंधि
अमित अपार अगाध जल, मारो मूढ़ पयोधि
अति अगाध अति ऊथरो, नदी कूप सर ताल
सो ताको सागर जहां, जाकी प्यास बुझाय

सुजन दुर्जन स्वभाव अन्तर

इक समीप वसि अहित कर, इक हित कर बसि दूर
हंस विनाशै कमल दल, अमल प्रकाशै सूर
शिव सम्पति फल करत है, सुहृद जनन के सैन
दूरहि सूरज उदित ज्यों, कमलन को सुख दैन
काज बिगारत और को, इक निज काज सुधारि
कियो मंत्रिन मिल राज नृप, सुरथहि दियो निकारि
काज बिगारत आपनो एक और के काज
वलिहि निवारन नैन को, हानि सही कविराज
परधन लेत छिनाय इक, इक धन देत हसंत
शिशिर करत पत भार तरु, गहिरे करत बसंत

सुपुत्र प्रशंसा

गाहक सबै सपूत के, सारै काज सपूत
सब को ढम्पन होत है, जैसे बन को सूत
आप कष्ट सहि और को, सोभा करत सपूत
'चरखी,'पीजन,'चरखिवा, जग ढम्पन ज्यो सूत
बहुत भये किहि काम के, भारनिवाहक एक
शेष धरै धर सीस पर, मेडक भखी अनेक
एकहि भले सुपुत्र तै, सब कुल भलो कहात
सरस सुवासित बिरछ तै, ज्यो बन सकल बसात
पिता भक्त सुत होय तो, पितु को चलत सुभाय
राम राज सब छोड़ कै, बन बासी भये जाय
श्रवण करी त्यों कीजिये, मात पिता की सेव
कांधे कावर लै फिर्यो, पूज्यो जैसे देव
सुत सपूत की कीर्ति लखि, पिता अधिक सुख पाय
ज्यों राकाशशि छवि लखत, उदधि बढ़त हर्षाय
इक सपूत जन्म्यो भलो, बहु कपूत नहि 'राम'
इक शशि निश तम हरतु है,नखत समूह निकाम
यदपि होत पितु मात को, सब सुत पर सम नेह
लखि सपूत ठण्डक लहै, जरै कुसुत लखि देह
कुलहि प्रकाशै एक सुत, नहि अनेक सुत निन्द
चन्द एक निश तम हरै, नहि उडगन के बृन्द

चन्दन चन्द उशीर हिमोपल,
हिम रजनी भी और कपूर
ये सब मिल कर भी न करेंगे,
मानव हृदय ताप को दूर
पर सपूत जिस कुल मे होगा,
उसका समय आपही आप
पलट जायगा यश फैलेगा,
मिट जावेगा सब सन्ताप
विमल चित्त हो दानशील हो,
सूर वीर हो सरल विचार
सत्य वचन हो प्रेम युक्त हो,
करे सभी से सम व्यवहार
ज्ञानी सहृदय हो उपकारी,
और गुणी हो अपना धर्म
कभी न छोड़े, देश भक्त हो,
ये सब सत्पुत्रो के कर्म

दोहा

कुल सपूत जान्यो परै, लखि शुभ लक्षण गात
होनहार बिरवान के, होत चीकने पात
बचपन ही मे करत है, चतुराई की बात
होनहार बिरवान के, होत चीकने पात

सूबेदार सपूत को, चाहत सब अरि औ मीत
जग सब टेरत सुखहि सुख, दुख से काहु न प्रीत

सेवक का काम साहिब का नाम

जो सेवक कारज करै, होत प्रभू को नाम
तरत नील-कर ते पथर, कहत तराये राम
छोटे, काम बड़े करैं, तो न बड़ाई होय
ज्यों रहीम हनुमन्त को, गिरधर कहे न कोय
अनुचित उचित रहीम लघु, करहि बड़न के जोर
ज्यों शशि के संयोग से, पचवत आगि चकोर

संतोष महिमा

सब सुख है संतोष मे, धरिये मन संतोष
नेक न दुर्बल होत है, सर्प पवन को पोष
जिय संतोष विचारिये, होय जु लिख्यो नसीब
खर गुर कांच कथीर सों, मानत रली गरीब
थोड़े मे संतोष कर, तो सुख होय महान
प्यास बुझाने के लिये, गड़वा कूप समान

स्वभाव नहीं बदलता

दुष्ट न छांड़ै दुष्टता, कैसेहू सुख देत
धोये हू सौ बार के, काजर होय न सेत
नहिं इलाज देख्यो सुन्यो, जासों मिटत सुभाव
मधु पुट कोटिक देत तउ, विष न तजत विष भाव

ब्रह्म बनाये बन रहे, ते फिर और बनै न
कान कहत नहिं बैन ज्यों, जीभ सुनत नहिं बैन
जाहि परो जैसो व्यसन, ता बिन रहत न सोय
सुरा सुरापी ना तजै, यदपि विकल गत होय
सज्जन तजत न सुजनता, कीने हू अपकार
ज्यों चन्दन छेदै तऊ, सुरभित करत कुठार
दुष्ट न छोड़े दुष्टता, पोखै राखैं ओट
सर्पहि केतो हित करो, चपै चलावै चोट
सुजन कुसंगति संग तैं, सज्जनता न तजन्त
ज्यों भुजङ्ग गण संग तउ, चन्दन विष न धरन्त
दोषहि को उमहै गहैं, गुण न गहैं खल लोक
पिये रुधिर पय ना पिये, लगी पयोधर जोक
भले न होवें दुष्ट जन, भलौ कहै जो कोय
विष मधुरो मीठो लवण, कहे न मीठो होय
जो पर, ते पर, यह समझ, अपनो होय न कोय
पाले पोषे काग तउ, पिक सुत काग न होय
कहा करै कोऊ यतन, प्रकृति न बदलै कोय
साने सदा सनेह मे, जीभ न चिकनी होय
बहुत किये हू नीच का, नीच स्वभाव न जाय
छोड़ ताल, जल कुंभ में, कौवा चोंच भराय
क्रूर न होवत चतुर नर, क्रूर कहे जो कोय

मानै कांच गँवार तउ, पाच कांच नहि होय
भेष बनावै सूर को, कायर सूर न होय
खाल उढ़ाये सिंह की, स्यार सिह नहि होय
कैसे हू छुटती नही, जा मे पड़ी कुब न
काग न कोकिल हो सके, जो विधि सिखवै आन
देवन हो से देय प्रभु, कहा सुरेश नरेश
कीनी मीत धनेश तउ, पहरैं चरम महेश
भले बचन मुख नीच के, नाहिन होत प्रकाश
हींग लसुन में ना मिले, घन कस्तूरी बास
नीच कुसंगति के मिले, करत नीच सो प्यार
खर को गंग न्हवाइयें, तऊ न छोड़त छार
सज्जनता न मिले किये, जतन किये किन कोय
ज्यों कर फाड़ निहारिये, लोचन बड़ो न होय
एकत हू रह सुजन खल, तजत न अपनो अंग
मणि विष-हर, विष-कर सरप, सदा रहत इक संग
भली बुरी जो आदरै, कौन सकै निरवारि
शीत विमल पावन करन, चलत नीच गति व्यारि
करै न कबहूं साहसी, दीन हीन सो काज
भूख सहै पर घास को, नहीं भखै मृगराज
सहज शील गुण सुजन के, खल बश होत न भंग
रतनदीप की ज्यों शिखा, बुझत न बात प्रसंग

नाहि करत उपकार तै, काज सिद्धि बलवान
मुनि बन बसिबो संग मृग, किय अगस्त दधि पान
कहा भयो जो नीच को, देत बड़ाई कोय
कहत विनायक नाम पै, खर न विनायक होय
दुष्ट न छोड़त दुष्टता, बड़ी ठौर हू पाय
जैसे तजत न श्यामता, विष शिव कंठ बसाय
खल सज्जन सूचीन के, भाग दुहूं सम भाय
निगुन प्रकाशै छिद्र को, सगुन सु ढांपत जाय
दुर्जन गहत न सुजनता, जतन करो किन कोय
जो पै जौ को रोपियें, कबहूं शालि न होय
दान मान सन्मान यश, अपनो अपनी बान
छोटे छोटी गति कहो, मोटे मोटी मान
लाख दुष्ट घेरे रहें, साधु न हो मति हीन
होत न अहि संसर्ग ते, चन्दन मे विष लीन
जो रहीम उत्तम प्रकृति, क्या कर सकत कुसंग
चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग
रहिमन लाख भली करो, अगुनी अगुन न जाय
राग सुनत पय पियत हूं, सांप सहज धर खाय
कोट यतन कोऊ करो, परै न प्रकृति हि बीच
नल बल जल ऊंचो चढ़ै, अन्त नीच को नीच
ओछे बड़े न हो सकै, लगि सतरौहे बैन

दीरघ होहि न नेकहू, फार निहारे नैन
गुनो गुनी सब कोउ कहत, निगुनी गुनी न होत
सुन्यो कहूं तरु अर्क तैं, अर्क समान उदोत

कुण्डलिया

सबै हँसत कर तार दे, नागरता के नांव
गयो गर्व गुन को सबै, बसे गंवारन गांव
वसे गँवारन गांव, गुन न गौरव को पायो
जो कुछ यश तिहि सँचो, सोइ तहँ आय गँवायो
झूठो लागन लग्यो, भले काजन हूं कल्मस
सुकवि गुनन गति सुनत, गँवारे गाहक सबै हँस

सोरठा

फूले फले न बेत, यदपि सुधा बर्षहि जलद
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलै विरंचि सम

दोहा

मान करो वरु विविध विधि, अशन अमित पय पाग
लागहि भाग न काग कै, त्याग न आपन राग
दुष्ट न छांड़े दुष्टता, सज्जन तजे न हेत
काजर तजे न श्यामता, मोती तजे न श्वेत
भाँवरि अन भाँवरि भरो, करो कोटि बकवाद
अपनी अपनी भाँति को, छुटे न सहज सवाद
संगति सुमति न पावही, पड़े कुमति के धंध
राखो मेल कपूर मे, हींग न होय सुगंध

स्फुट

होय भले चाकरन तें, भलो धनी को [illegible]

ज्यों अंगद हनुमान तें, [illegible]

जाही ते कछु पाइये, करिये [illegible]

रीते सरवर पर गये, [illegible]

तिनसो विमुख न हूजिये, जो [illegible]

मोर ताल जल पान करि, [illegible]

जो कीजै हित त्याग जनि, [illegible]

सर जल पीवत मोर [illegible]

रहिमन दानि दरिद्र हो, [illegible]

ज्यों सरितन सूखे परे, [illegible]

ताही को करिये जतन, रहिये [illegible]

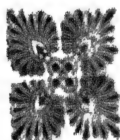
को काटै वा डार को, बैठे [illegible]

मंत्री गुरु अरु वैद्य जो, प्रिय [illegible]

राज धर्म तन तीन कर, [illegible]

जैसो थानक सेइये, तैसो [illegible]

सिंह गुफा मुक्ता मिलै [illegible]



करैं कृपा अस 'रामकवि'
गिरा, गजानन' दोय
हिंदी की हितकारिणी
"हिंदि-सुभाषित" होय



❀ सतसई संजीवन भाष्य ❀



सुप्रसिद्ध साहित्य-मर्मज्ञ विवेचक-कला-निधि श्री पं० पद्म-सिंह जी शर्म्मा रचित विहारी सतसईकी भूमिकाने हिन्दी-संसारमे युगान्तर उपस्थित कर दिया है। सच पूछिये तो महाकवि विहारीकी अनूठी लोकोत्तरानन्ददायिनी और हृदय हारिणी कविताके सम्बन्धमें सहृदय-समाजकी उत्तरोत्तर रुचि बढ़ाना साहित्याचार्य पं० पद्मसिंह शर्म्मा के क़लमका ही करिशमा है। 'विहारी-सतसई' की भूमिका देखकर मूल पुस्तकका भाष्य पढ़नेके लिये पाठकोंके हृदय-सागरमे किस प्रकार लालसाकी लहर उठती रहती है इसे उनका दिल ही जानता है। हर्षकी बात है कि काव्यामृत-पिपासुओंकी परि-तृप्तिके लिये पं० पद्मसिह शर्म्मा कृत "सतसई-संजीवनभाष्य" का प्रथम भाग शीघ्रही प्रकाशित होने वाला है। इसमे सत-सईके १२५ दोहोंका जिस पाण्डित्यसे भाष्य किया गया है वह एक बार पढ़नेसे ही विदित होगा। कविवर विहारीलालने 'सतसई, के ज़रासे दोहेमें कैसी करामात भरी है इसका ठीक ठीक ज्ञान इस भाष्यका अध्ययन करने ही से हो सकेगा। सागरको गागरमें भर कर कविवर विहारीलालने तो कमाल किया ही है परन्तु इस कमालका जमाल दिखानेमे शर्म्माजीने

भी अपनी प्रशस्त प्रतिभा-शक्तिका पूरा परिचय दिया है। हम इस भाष्यकी विशेष प्रशंसा न करते हुए पाठकोंसे उसके पढ़नेका अनुरोध करते है।

इस बार सतसईकी भूमिका (जो पहिले प्रकाशित हो चुकी है) और भाष्य दोनों एक जिल्दमें एकत्रित कर दिये गये है, परन्तु जिन ग्राहकोंके पास तुलनात्मक भूमिका मौजूद है उनको केवल भाष्य भी दिया जा सकेगा।

पुस्तककी छपाई, सफ़ाई, काग़ज़ और जिल्द सब उत्तम है।

मिलनेका पता:—
बेताब प्रिंटिंग वर्क्स, चाह रहट देहली।

विवेचक—कलानिधि

श्री प० पद्मसिंह जी शर्म्माके

लेखोंका संग्रह

पुस्तकाकार छप रहा है। इसमें उन सब महत्व-पूर्ण शिक्षाप्रद और मनोरञ्जक लेखोंका समावेश है जो समय २ पर परोपकारी, भारतोदय, भारत-मित्र, प्रतिभा सौरभ, श्री शारदा आदि पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। जिन्हें पुस्तकाकार देखने को सहृदय समाज बहुत दिनोंसे समुत्सुक था। कई ऐसे लेख भी इस संग्रह मे सम्मिलित कर दिये गये है जो आज तक कहीं प्रकाशित नही हुए। इसमें अनेक अनूठी समालोचनाएँ भी है जो "सतसई सहार" से कम रोचक नहीं हैं।

"सतसई संहार" शीर्षक सुप्रसिद्ध समालोचना भी इससंग्रह मे समावेशित करदी गयी है।

सबसे पूर्व समालोचनात्मक लेखो का संग्रह प्रकाशित किया जा रहा है। इसके बाद शीघ्रही अन्य प्रकारके लेख छापे जायंगे। छपाई, सफ़ाई और कागज़की उत्तमताकी ओर पूरा ध्यान दिया जा रहा है। पं पद्मसिंह जी शर्म्माके लेखोंकी लोक प्रियता से आशा की जाती है कि यह संग्रह प्रेस से निकलते ही धड़ा धड़ बिकने लगेगा। सम्भव है देरसे मंगाने वालों को दूसरे संस्करणकी प्रतीक्षा करनी पड़े इस लिए ग्राहक महाशयो को अभी से अपने नाम रजिष्टर में लिखवाने चाहियें। जो सज्जन पहिले ही अपने नाम ग्राहक सूची में लिखावेंगे वो डाक व्ययसे मुक्त कर दिये जाएँगे

पता—बेताब प्रिंटिंग वर्क्स
चाहरहट देहली

पद्य-परीक्षा

लेखक नारायणप्रसाद "बेताब

भारतके मशहूर मशहूर कवियोकी कविताओंपर पिङ्गल शास्त्रानुसार बेलाग समालोचना करके गुण दोष लिखे हैं। अयोध्यासिंहजी उपाध्याय, रामचरितजी उपाध्याय, श्रीधर पाठक मैथिलीशरणगुप्त, नाथूराम शंकर शर्मा, महावीरप्रसादजी द्विवेदी, मिश्रबन्धु, लाला भगवानदीन दीन, त्रिशूल, पं० रूपनारायण पाण्डेय इत्यादि कवियोंने जिन जिन छन्दोंका व्यवहार किया है, उन हिन्दी छन्दोंके नियम, उर्दू बहरोंके कायदे भी समालोचनाके साथ लिखे गये हैं

यह अपने ढङ्गकी निराली पुस्तक छपकर बिलकुल तइयार है। मूल्य जिल्द सहित १) रु०

मिलनेका पता

बेताब प्रिण्टिङ्गवर्क्स

चाह रहट देहली

उर्दू सुभाषित ।

आजकल हिन्दी कविता और लेखों में उर्दू शेरों के उद्धरण का रिवाज उत्तरोत्तर बढ़ रहा है, पढ़ने वाले भी उर्दू की चाट का खूब मज़ा लेते हैं। ऐसी रुचि रखनेवालों के लिये ही यह मसाला तइयार किया गया है। जिस तरह "सुभाषित रत्नभाण्डागारम्" में प्रत्येक विषयके श्लोक मिल जाते हैं, जिस प्रकार इस 'हिन्दी सुभाषित' में हिन्दी के पद्य हर एक विषय पर मिलजाते है, इसी तरह "उर्दू-सुभाषित" में भीं हर मज़मून के अशआर आवश्यकतानुसार मिलेंगे।

स्वतंत्र पुस्तक लिखने वाले, अनुवाद करने वाले, नाटक कार, उपन्यास लेखक, व्याख्यान दाता उपदेशक, कथा बांचने वाले, समाचार पत्रों के सम्वाद- दाता इस पुस्तक से बहुत लाभ उठा सकते है। वाणी तथा लेख में इस सूक्ति-संग्रह के एक दो पद्य डाल दीजिये, मुँःका मज़ा बदल जायगा और सब स्वादिष्ट होजायगा।

उर्दू कवियों के चुने हुए उर्दू शेर तो हैं ही, परन्तु "विषयशीर्षक" और लिपि हिन्दी है। भाषा ज्योंकी त्यों उर्दू है, हां कठिन शेरों का हिन्दी अनुवाद साथ दे दियाहै।

पिंगल सार

यदि पृष्ठ कम है. कि है बुरे, तो बलासे. कुछ भी न बोलिये
मेरी गूदड़ी को न देखिये मगर इसमें लाल टटोलिये !

प्रियवर ! यह कोई पुस्तक नहीं है किन्तु पुस्तकाकार एक पाठावलीके पत्र एकत्रित किये हुए हैं। १९२० ई० में हम एक मासिक पिङ्गल पाठावली निकालते थे, जिसका मूल्य केवल आशीर्वाद था, यहां तक कि छपाई और डाक व्ययार्थ तक भी कुछ नहीं लिया जाता था। पूरे १ वर्षतक यह सिलसिला जारी रहकर बन्द हो गया। उन्हीं पाठों में कुछ पृष्ठ और छपवाकर सम्मिलित कर दिये हैं। उर्दू अरूज़को भी हिन्दी सांचे में ढाल कर साथही लगा दिया है। अब यह अपने अङ्कमें पूरी पुस्तक हो गयी है। छन्द कोई नया नहीं, वही प्राचीन आचार्यों के लिखे, प्राचीन ग्रन्थों से लिये हुए हैं किन्तु वर्णन शैली नवीन है, क्यों कि प्रवासी विद्यार्थियोंको घर बैठे डाक द्वारा पढ़ाना अभीष्ट था इस लिये जहां तक सरल और सुगम हो सका, किया गया है।

यह पुस्तक उपन्यासोंकी तरह एक रुपये के ४०० पेज ख़रीदने वाले भारवाही ग्राहकों के काम की नहीं है क्यों कि इसकी पृष्ठ संख्या (२०×३० का १६ वाँ साइज़में) केवल ११६ है। मूल्य साधारण जिल्द सहित ॥)

मिलनेका पता—

बेताब प्रिण्टिङ्ग वर्क्स

चाह रहट देहली

३—'विज्ञान' जैसे प्रतिष्ठित पत्र में इसके लेखों ने स्थान प्राप्त किया है।

४—'दैनिक आज' जैसे गौरवशाली पत्रने बिना निवेदन थे ही इसके लेख उद्धृत किये हैं।

५-अनेक प्रसिद्ध २ विद्वानो ने मुक्त कण्ठसे इसकी प्रशंसा और छपाने के लिये आग्रह किया है।

जो पुस्तक इतने विद्वानों द्वारा संशोधित और प्रशंसित हो क्या वह आपको पसन्द न आएगी?

शीघ्र चुकने वाली है— जल्दी कीजिए मूल्य १)

---

(१६८) + (१२ आदिम पृष्ठ) = (१८०)

दान



इस पुस्तककी १०० कापियां उन पुस्तकालयोंको दान दी जायंगी जो डाक व्ययके लिए चार आनेके टिकट और पुस्तकालयके आस्तित्वका प्रमाण कोई छपा हुवा फार्म भेज सकेंगे ।

पता—

'बेताब प्रिंटिंग वर्क्स'
चाह-रहट दिल्ली